बरिस-1/अंक-समहुत

www.sirijan.com

सिरिजन

तिमाही भोजपुरी ई-पत्रिका

जुलाई - सितम्बर 2018

Pic credit - Gaon Connection

/bhojpuriaphulwari @sirijanbhojpuri 9801230034

सिरिजन

(तिमाही भोजपुरी ई-पत्रिका)

प्रबंध निदेशक : सतीश कुमार त्रिपाठी

संरक्षक : 1. सुरेश कुमार, (मुम्बई)

2. कन्हैया प्रसाद तिवारी, (बैंगलोर)

प्रधान सम्पादक : सुभाष पाण्डेय

सम्पादक : डॉ अनिल चौबे

बिशिष्ट सम्पादक : बृजभूषण तिवारी

उप सम्पादक : तारकेश्वर राय

कार्यकारी सम्पादक : संजय कुमार मिश्र

सलाहकार सम्पादक : राजीव उपाध्याय

सह-सम्पादक : 1. भावेश

2. दिलीप पाण्डेय

3. माया चौबे

4. डॉ अमरेन्द्र सिंह

5. गणेश नाथ तिवारी

प्रबंध सम्पादक : लव कान्त सिंह

आमंत्रित सम्पादक : चंद्र भूषण यादव

बिदेश प्रतिनिधि : रवि शंकर तिवारी

ब्यूरो चीफ : संजय कुमार ओझा

ब्यूरो चीफ (बिहार) : अमरेन्द्र सिंह

ब्यूरो चीफ (प. बंगाल) : दीपक कुमार सिंह

ब्यूरो चीफ (उत्तर प्रदेश) : 1. राजन द्विवेदी 2. अनुपम तिवारी

ब्यूरो चीफ (झारखण्ड) : राठौर नितान्त

पश्चिम भारत प्रतिनिधि : बिजय शुक्ला

दिल्ली, NCR प्रतिनिधि : 1. बिनोद गिरी

2. राम प्रकाश तिवारी

क़ानूनी सलाहकार : नंदेश्वर मिश्र (अधिवक्ता)

(कुल्हि पद अवैतनिक बाड़न स)

स्वामित्व, प्रकाशक सतीश कुमार त्रिपाठी के ओरी से : 657, छठवीं मंजिल, अग्रवाल मेट्रो हाइट, प्लाट नंबर इ-5 नेताजी सुभाष पैलेस, सेंट्रल वजीरपुर,पीतमपुरा, दिल्ली – 110001, सिरिजन में प्रकाशित रचना लेखक के आपन ह आ ई जरूरी नइखे की सम्पादक के बिचार लेखक के बिचार से मिले। रचना प बिवाद के जिम्मेदारी रचनाकार के रही। कुल्हि बिवादन के निपटारा नई दिल्ली के सक्षम अदालत अउर फ़ोरम में करल जाई।

सिरिजन क झपोली

अनुक्रम

1. **संपादकीय**
   - जथा सम्भव - डॉ अनिल चौबे / 4
   - आपन बात - तारकेश्वर राय / 5
2. **कनखी**
   - फेसबुक पर क्रांति आ वाट्सएप्प पर ज्ञान - डॉ अनिल चौबे / 7
3. **कथा-कहनी /दँतकिस्सा**
   - भोज - अतुल कुमार राय / 16
   - हबकाह - दिलीप पैनाली / 23
   - ताना – कन्हैया प्रसाद तिवारी "रसिक" / 38
   - महँगा इयार - गणेशनाथ तिवारी 'श्रीकरपुरी'/ 39
   - मजूरी - संगीत सुभाष / 47
   - टाटा वाला चाचा - अमरेंदर सिंह, आरा / 49
   - जब जनम लिहलें भगवान - आलोक पाण्डेय / 60
   - छोह - शशिरंजन शुक्ल `सेतु` / 68
4. **कविता**
   - बाबुल के प्यार अउरि माई के दुलार - अनिल कुमार / 13
   - स्वभाव - संजीव कुमार त्यागी / 18
   - भोजपुरी - विवेक पाण्डेय / 18
   - केकर कवन रूप बा - संजय मिश्र "संजय" / 21
   - हिया दहकाय गइल ना - जयशंकर प्रसाद द्विवेदी / 21
   - बेटी बचाईं आ बेटी पढाईं - गणेशनाथ तिवारी 'श्रीकरपुरी' / 22
   - दूध - अमरेन्दर सिंह "बुलेट" / 27
   - पानी खतरा निशान पर बाटे - संजय मिश्र 'संजय'/ 27
   - जिनिगिया - रमाशंकर द्विवेदी 'पंकज'/ 28
   - हमरा कटे नाहीं - राम ध्यान यादव / 28
   - केकरा से कहीं हम - संजय सिंह / 35
   - कसक - विकास कुमार / 36
   - ढिबरी जेवन जरेला - राजीव उपाध्याय / 36
   - जिनिगी के खेल - माया शर्मा / 40
   - माई - दिलीप पैनाली / 40
   - साँच साँचे होला - देवेन्दर कुमार राय / 41
   - प्यार बतावल ना गइल - दीपक सिंह / 41
   - सुकथ - दिनेश पाण्डेय / 42
   - माई के लोर - प्रभाष मिश्रा / 45
   - एगो आशा बा तोहसे - प्रभाष मिश्रा / 45
   - घर परिवार - कनक किशोर / 46
   - आपन माटी आपन थाती - कवि हृदयानंद बिशाल / 46
   - दरद दिल के - माया चौबे / 48
   - कुछ नया करामात - संग्राम ओझा / 48
   - कुछ बोलल दुस्वार भइल बा - कुमार चन्दन / 50
   - बरखा - प्रिंस अभिषेक / 50
   - गाँव के गाँव रहे द - गोपी नाथ तिवारी / 51
   - गीत मोहब्बत के गाईं - प्रतीक तिवारी / 51
   - हमार माई - विवेक पाण्डेय / 54
   - मउवत - पंकज यादव / 54
   - लड़िकाईं - सुनील कुमार दुबे / 57
   - खेतिहर के दरद - जगदीश खेतान / 58
   - बोलिया पपीहरा के - गुड़िया पाण्डेय / 59
   - प्रीत के रीत - माया चौबे / 59
   - सावन में - भावेश अंजन / 63
   - सावन महीना - विनोद गिरि / 63
   - मनवा बाय डेराइल - राकेश कुमार पाण्डेय / 64
   - प्रीत - प्रेम किशोर / 65
   - रसे-रसे - द्वारिका नाथ तिवारी / 65
   - मंगरु माधोपुरी उवाच - डॉ सुनील कुमार उपाध्याय / 66
   - नतीजा दहेज़ क – लोकनाथ तिवारी "अनगढ़" / 66
   - एक विवाह गीत - सुशांत शर्मा / 67
   - हमके जाए द ना - शिवदत्त द्विवेदी `द्विज` / 67
5. **गीत / गजल**
   - डॉ. जौहर शफियाबादी क कुछ गज़ल / 14
   - थथमल रहे – विद्या शंकर "विद्यार्थी" / 35
   - गजल - विमल कुमार / 37
   - सजन धीरे-धीरे - लाल बिहारी लाल / 37
   - भोजपुरी गजल - संगीत सुभाष / 47
   - सोहर - देवेंद्र कुमार राय / 57
6. **पुरुखन के कोठार से**
   - राधामोहन चौबे "अंजन" जी क कविता अउरि जीवन परिचय / 15
   - भीखा साहब (जीवन परिचय) - राजीव उपाध्याय / 52
7. **संस्मरण**
   - ठेकाना - अतुल कुमार राय / 19
8. **नाटक / एकांकी**
   - अधूरा मिलन - लव कान्त सिंह / 29
9. **आलेख/निबंध**
   - का हाल बा - दिनेश पाण्डेय / 8
   - गाँव से पलायन - तारकेश्वर राय / 43
   - अखरेला अधिका सावनवाँ बटोहिया - सर्वेश तिवारी श्रीमुख / 55
10. **कलमकार से गोहार / 71**
11. **एह अंक के चित्रकार / 72**
12. **संस्कृतिक कार्यक्रम क कुछ छाया चित्र / 73**

जथा सम्भव

.....सिरिजन के समहुत अंक रउआ सभ के सामने परोसत एगो संकोच भरल गर्व के अनुभव हो रहल बा । भाषा अभिव्यक्ति के एगो माध्यम ह, अभिव्यक्ति विचारन के प्रस्तुति, विचारन के प्रस्तुति चेतना के संप्रसारण के एगो छोट प्रयास होला । संचार माध्यम के व्यापकता आ बहुलता वैश्विक संपर्क के प्रेरणा दिहले बा। भाषा की चलते विश्व में व्यापक परिदृश्य से संपर्क स्थापित कइल जा सकता । इहे सोच अउर कामना से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आपन विचार, अपनी भाषा के माध्यम से व्यक्त कइल जा, इहे हमनीं के मूल मतलब बा। भोजपुरी भाषा के प्रचार-प्रसार के पीछे कवनो दुराग्रह भा पूर्वाग्रह नइखे, बलुक एगो नाजुक निहोरा बा । अपनी भाषा के गौरव जानि के अपने दायित्व के निबाहल जा सके, इहे सोच "सिरिजन" के रूप में सबके उत्प्रेरित कइलस।

जब सूरुज आ चनरमा लुका गइलें त घोर अन्हार के केकरा बुत्ते ललकारल जाव, के ए अन्हरिया से अझुराव, सभत्तर चुप्पी छा गइल त एगो छोटी मुकी दीया कहलस कि अच्छा तले अन्हरिया से दू - दू हाथ आजमावे के भार हमरी कान्ह पर धराव। जवन छोट दीया के साहस रहे, उहे साहस हमनीं के पथ के पाथेय बा।

आज से करीब सत्तर भा अस्सी बरिस पहले लोक-भाषा, लोक-साहित्य, लोक-संस्कृति के समुझे आ समुझावे खातिर, वोसे जुड़े आ जोड़े खातिर एगो बड़हन सजग आ समर्थ कोशिश भइल रहे। ए आंदोलन के अगुआ रहनीं महापंडित राहुल सांकृत्यायन, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, सिरी वासुदेव शरण अग्रवाल, आचार्य नरेंद्र देव आ बनारसी दास चतुर्वेदी जी। ए सबके सोच आ सामूहिक कोशिश से लोकभाषा से उपजल - जुड़ल लोग अपनी बोली में लिखे - पढ़े के प्रयास आ उत्साह बढ़ावल। कवनो भाषा के प्रयोग कब से होता ,ए में कब से साहित्य रचात बा, ई समझल - बुझल बिना शोध के कठिन बा। हम त एतने कहब कि कबीर बाबा के भोजपुरिया तेवर लोक भाषा के धारदार आ पुरहर व्यवहार के अनदेखी कइल संभव नइखे।

हमरा उम्मेद बा कि अंक में सघन भावबोध से छलकत स्वरूप, रचना में रचल आदमी के निजी सुख-दुख, राग-विराग के अलावा रचनाकार लोग के लोक से जुड़ाव के सभे सराहना करी। भाषा के मिठास त भोजपुरी के सहज सिंगार हइले ह। भोजपुरी के गदरल रूप आ कचरस के धार के लोहा त उहो मानेला जे भोजपुरिया नईखे। "सिरिजन" समहुत अंक के बहु-आयामी क्षितिज वर्तमान से हाथ मिलावे वाला ताकत के बानगी के साथे, संकलित आ समरपित भोजपुरी सेवकन के तेवर, सतर्क चिंता भोजपुरी मन के संकेत भी बा। हमरा बिस्वास बा कि "सिरिजन" के अनुगूंज जल्दिये हिरदया में उठी आ बनल रही.....

जय भोजपुरी- जय भोजपुरिया

रउरे

(डॉ अनिल चौबे)

सम्पादक "सिरिजन"

आपन बात

"सिरिजन" ई-पत्रिका के पहिलका अंक राऊर आँखि के सोझा डगमगात गोड़ प तिन्ना खाड़ होखे के भरपूर कोशिश कर रहल बा । बड़ी आस आ बिसास से रऊरा ओरि तिकवत बा, बढ़ाईं आपन हाथ आ पकड़ लीहीं बाँहि एकर।पाले-पोसे आ आगे बढ़ावे के जिम्मेवारी अब रऊरा सभे के बा ।

ढ़हत-ढिमिलात लोक संस्कृति आ साहित्यिक थाती के सम्हारे के एगो छोटहन ऊत्जोग बा हमनी के । वर्तमान में भोजपुरी के अश्लीलता के पर्याय बना दिहल गइल बा। ख़ाली पइसा खातिर घटिया-से-घटिया दुअर्थी गाना आ फिलिम के निर्माण पूरा गति प बा जेकरा के देख-सुन के कवनो भोजपुरिया के गर्दन खुदहीं झुके के मजबूर हो जाई । आज के जमाना त इंटरनेट आ सोशल साइट्स के बा। संचार-क्रांति आ क्रयशक्ति के बढ़न्ती से हर जगह स्मार्ट फोन लऊकता बा आ सस्ता इंटरनेट सेवा सोना प सोहागा के काम करता । स्मार्ट फोन शहर के सीमा के तूर के गाँव देहात तक चहुँप गइल बा । एहि शक्ति के बेजाँय ऊपयोग से अश्लीलता अऊरी फलत-फुलात बिया । जवन भोजपुरी साहित्य के ममिला में अनघा समृद्ध रहे ओके फकीरी रूप भेंटा गइल। नामी-गिरामी आ बड़का लिखनिहार लोग एकरा से मुँह मोड़ लिहल।कुछ गिनल-चुनल लोग आपन पत्रिका, ब्लॉग आ पेज के जरिए एहिके बचावे में लागल लऊकेला । कवनो चीझ के छोड़ दिहला से ऊ ख़ाली थोड़े रही? कवनो ना कवनो चीझ पनपबे करी जइसे परती भुईं के लमेहरा छेंक लेला। दिन-ब-दिन भाषा के सरूप बदरंग होखत जाता, घरे के दिया से घर के आग लाग के अनेसा बा। संचार-क्रांति से सोशल मीडिया एगो तागतवर माध्यम के रूप में ऊभरल, लोग आपन दुःख सुख के एक दूसरा से साझा करे लगलन । भोजपुरिया समाज आपन मादरी जुबान, आपन भाषा के बचावे क चिंता के एक दूसरा से साझा करे लगलनि आ समूह बने लगनसँ। पूरी दुनिया एके अंगनई में सिमट आइल त सिर्फ एहि इंटरनेटे क ओजह से। एहि ऊतजोग में जय भोजपुरी जय भोजपुरिया नाँव के एगो वाट्सप समूह के गठन भइल। एगो जागरुक आ जुनूनी नवही माईभाषा के प्रेमी लोगन के खोज-खोज के जुटावे लगलन आ कारवाँ बनत गइल। एह समूह में माईभाषा के माध्यम से सनेसन के आदान-प्रदान, बतकही, विमर्श आ अभिव्यक्ति के कठोर अनुशासन आ ऊसुकावन से कतिने लोग माईभाषा में लिखे- पढ़े खातिर प्रेरित भइलें। एहि क्रम में आपन थाती के क्षरण से रोके के ऊपाय करे के विचार ऊपजल । लोग के नियमित पढ़े- लिखे के प्रेरित करे खातिर ई-पत्रिका के प्रकाशन क निरनय भइल । हमनी के कबो सपनो में ना सोचले रहलींजा कि अइसन जमात के हिस्सा बनल जाई जवन आपन माईभाषा, लोकसंस्कृति के बचावे खातिर जी जान से लाग जाई । जतिने आदमी एहि जमात के हिस्सा बानींजा, आ ऊहो जे आपन रचनात्मक सहयोग भा अऊरी कवनो तरीका से सहयोग के हाथ बढ़वले बा निहिचे ऊनुकर दिल में आपन भाषा के प्रति अथाह पियार बा। एहि भावना से ऊ प्रेरित बा अऊ हर तरे के सहयोग करे के ऊद्धत बा।

"सिरिजन" ई-पत्रिका हमनी बदे खलिए एगो पेज भर नइखे, ई बा हमनिन के आस आ बिसास के प्रतीक, दुनिया भर में फैलल भोजपुरी भाषा परिवार के बीच अंतर्संबंध कायम करे के जरिया काहे कि वर्तमान समाज वैचारिकता आ समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से दूर भइल चल जाता । ख़ाली देह सुख बदे मताइल मनई मन ऊत्कृष्ट बुद्धि आ मनस के सुख प

सोचलबंद क दिहले बा । माईभाषा के भीतर छिपल गुनगन के देश दुनिया के सामने ऊजागर करे के ऊतजोग के प्रतिफल ह "सिरिजन" ।

आजु के बखत में कवनो काम के पाछे कुछो-न कुछो स्वार्थ जरूर होला चाहे ऊ आर्थिक होखे भा अऊ किसिम के, अइसन समय में जय भोजपुरी जय भोजपुरिया (रजिस्टर्ड) के ई ऊतजोग कि बिना कवनो निहित स्वार्थ के लोगन के माईभाषा में साहित्य लेखन आ भाषा-बेहवार के ललक आ स्वाभिमान जगा सकींजा त ई श्रम सार्थक होई। एह जमात में शामिल मय आदमी अपना रोजी-रोटी भा अन्य कवनो कारण से देश-बिदेश में फइलल बानींजा, कवनो न कवनो पेशा में लागल बानी जा, ऊ त माईभाषा के नेह कि सभे एके सूत से जुड़ल बा। हमनी में से केहू लमहर भा बड़का साहित्यकार नइखे, बस भाषा से प्रेम ऊसुका रहलबा थाती के सरंक्षण खातिर । कुछ पावे के कामना नइखे केहू में, बा त सिर्फ जुनून आ समर्पण। नौसिखुआ बानी जा पत्रिका में गलती के संभावना बा काहे कि सीमित संसाधन आ ज्ञान लेके हमनीके आगे बढ़ तानींजा । दृढ इच्छा आ ऊम्मीद ही संबल बा हमनीके । पुरजोर कोशिश बा कि कवनो प्रकार के भाषाई दोष ना रहे बाकी वर्तनी, छंद, अलंकार, ब्याकरण के गलती से इंकार ना कइल जा सके। ओकरा खातिर हमनीके क्षमा प्रार्थी बानींजा । तकनीकी ना भावपक्ष प धियान देवे के निहोरा बा । रऊरा सभ से दसो नोंह जोर के बिनती बा गलती प टोकीं, ओरहन दीहीं, बतायीं, चुप जिन रहीं। सलाह दीहीं, आलोचना करीं । ई हमनीके सुधारी आ आगे बढ़े खातिर प्रेरित करी । कहल जाला न, मन से लागल काम जरूर पूरा होला।

राऊर आपन,

(तारकेश्वर राय)

फेसबुक पर क्रांति आ वाट्सएप्प पर ज्ञान

आपन देश भारत आलरेडी विश्व गुरू ह आ हर भारतीय महाज्ञानी। ज्ञानो एतना अधिका बा कि बीच सड़क पर सिवर की तरे ओवर फ्लो करे लागेला। एहीसे नू हर आदमी फेसबुक पर क्रांति आ वाट्सएप्प पर ज्ञान देवे में लागल बा। बन्द पाउच में दूध किनिके पियेवाला गौहत्या बन्द करे खातिर सारगर्भित दलील दे रहल बा। अपनी -अपनी जाति -पाति के विशेष बता के , हर जाति के महासंगठन अपनी -अपनी जाति के जगावे में लागल बा। ए लोग के जाति -जागरण देख के कबो- कबो अइसन लागता कि सब जाति के लोग शायद कुम्भकरण के समधी त ना ह कि जे लोग के जाग -जाग कह के जगावल जा रहल बा।

खेत में लोटा लेके भा शहर के बाथरूम में बइठल प्राकृतिक अवस्था वाला अदमियो मोबाइल के कीबोर्ड पर अंगुठा के प्रयोग कके स्वच्छता अभियान के विरोध भा समर्थन करत जल के दुरूपयोग ना करे के नसीहत दे रहल बा। कई गो लोग त इहवें से महंगाई, बेरोजगारी, घुसपैठ जइसन लमहर समस्या पर अहम फैसलो बइठले -बइठले क देत बा। ससुरार में जमल घर जमाई बेबाक बतावत बाड़ें कि माई बाप के सेवा कइसे करे के चाहीं। मुन्ना भाई की तर्ज पर हाई स्कूल पास करे वाला साफ- साफ ज्ञान देत बाड़ें कि पद्म पुरस्कार भा भरतरत्न केकरा मिले के चाहीं । गुल्ली डन्टा में जे कबो ना जीतल उहो धोनी के उपदेश देत मिल जाई कि अरे मरदे एकरा हेंगा नू खेले के चाहत रहल ह। लइकियन के छात्रावास की ओर चकोहत महान आत्मा, नारी सुरक्षा की चिन्ता से सूखत- दुबरात जगे -जगे लउकते होई लोग। एहीसे महिलन के कम होत जनसंख्या से चिन्तित ई सब

फेसबुक पर लइकियन के नाम से फेक आइडी बना के एह समस्या के स्थाई निदान निकाले के अकारण किरपा कइले बा।

हमरा जइसन कवि टाइप के लोगन के भी सोसल साइट पर कमी नइखे जे कलम अउर कविता से करान्ति लियावे खातिर अपना के तुलसी, कबीर के असली उस्ताद से कम नइखे मानत अउर लेखन के नाम पर आज इहवाँ त काल्हि उहवाँ इहे कुल्हि लिखते रहत बा। नोह काटत बेरा अंगुरी में तनीसा नोहसुर उखच गइला से मेहरारू के आँचर धके फफकि -फफ़कि के रोवे वाला देश की खातिर गरदन कटा देवे के बात करत बा। भारतीय जनता पार्टी के साम्प्रदायिक, आप के बेवकूफ अउर कांगरेस के बेकार सिद्ध कइल ए लोग के बायां हाथ के कमाल बा। काॅपी पेस्ट करे वाला त निर्विकार भाव से दिन भर इहे करेला। केहू के चीज अइसे पोस्ट करेला लोग जइसे वो पोस्ट के मूल बाप इहे लोग ह, बाकी असली सन्त होलें टैग करे वाला जबले शुभप्रभात , आज के दिन मंगलमय हो, बधाई, ई सब कुछ लिखके विधिवत चालीस - पच्चास लोग के टैग ना क देउ सभ त का मजाल कि सूरजो पूरुब दिशा से निकल जासु। कवनो त्योहार ए लोग के टैग से अनुमति लिहला के बादे आ सकता । हमेशा उधार के भा जुगाड़ के चाय - पान चाभे वाला रामखेलावन इमानदारी की संगे आम बजट से घर के बजट पर परे वाला प्रभाव के फेसबुक पर लाइन से गिनावत मिल जइहें। फेसबुक पर करान्ति हो रहल बिया । वाट्सएप्प पर ज्ञान बरसत बा। रउरा लोग त उबियाइले होखब ?

मुँह मारो ये ज्ञान के.....

- डॉ अनिल चौबे

का हाल बा

'पत्रिका' से मतलब होला कवनो सामयिक प्रकाशन जवना में इलाका बिसेख में प्रचलित भाषा में इलाकाई खबर होखे। इहाँ खबर के सकुचल अरथ नइखे। मनई क जिनिगी से ताल्लुक रखे वाला हर विषय चाहे ऊ ज्ञान-विज्ञान से जुरल होखे भा कला-संस्कृति से ओकर मेलन एह में हो जाला। जुग के बदलाव के संगे जनसंचार के जरिया में विकास के जतिना भी सोत हो सकेला तेकरा पत्रकारिता के भीतरे गिनल जाला। ई कवनों लोकतांत्रिक बेवस्था के हिस्सा त हइए ह, जीवंत समाज, संस्कृति, भाषा, राष्ट्र भा मनई-समूह के निरंतर गतिमानता आ विकास के परिचायको ह। पल-पल बदल रहल दूनिया के दरसन पत्रकारिता के जरिए ही संभव हो सकेला। पत्रकारिता के जनम के पीछे परिस्थितियन के अध्ययन, चिंतन मनन, हमता-भाव के परगटन आ लोकमंगल के भावना ह। सी0 जी0 मूलर के कहनाम कि कवनो बखत के अनुरूप ज्ञान के बेवसाय पत्रिका ह जे में तथ्य के संग्रह, मूल्यांकन आ सन्मुख राखे के काम कइल जाला। पत्रकारिता के काम खाली घटना आ तथ्य के परगटन ना ह बलु ओकर विश्लेषण के संगे निसंगता के साथ ओकर प्रभाव के आकलन आ स्वीकारता- अस्वीकारता प चिंतनों जरूरी होला।

भोजपुरी एगो गतिमान आ जीवंत भाषा ह। आन बिहारी जबानन क संगे एकरो उत्पति मगधी अपभ्रंश से मानल जाला जेकर शुरुआती रूप के सुगबुगाहट साढ़े सातवीं सदी में देखल जाला, भलहीं एकर वर्तमान नाँव आ सरूप सोरहवीं-सतरहवीं सदी में प्रचलन में आइल। कवनों भाषा के तागत ओकर क्षेत्रविस्तार आ बोलेओलन के गिनती ह। तेकरा अलावे भाषा के फैलाव आ बलविस्तार के अउ कइयक ओजह बाड़ीसँ जवना में साहित्यिक प्रचुरता, बैपार, जीविका के साधन के तलास वगैरह के कारने उत्प्रवासन प्रमुख बाड़न। जहाँ भाषा के जनभाषा वाला सरूप ओकरा के जीवंत राखेला उहईं साहित्यिक रूप भाषा परिस्कार का संगे सरबमान मानक रूप बनावहूँ में सहयोगी होला। ई सभ नजरिए देखल जाव त भोजपुरी के केहू सानी नइखे। बिहार, झारखंड आ उत्तरप्रदेश के बहुत बड़हन इलाका से ले के नेपाल के तराई तकले पसरल मुख्य जमीन आ उत्प्रवासन से मॉरिशस, डचगुआना, फीजी, सुरीनाम, त्रिनिनाद, टोबैगो आदि देसन में प्रसार, बोलेओलन के संख्या बाइस हजार से ऊपर ई सभ एह भाषा खातिर गरब के विषय बा। त अइसन प्रबल भाषा में पत्रकारिता के दिसा आ दसा का बा? एकर पड़ताल जरूरी बा।

1857 में अंगेजी सल्तनत के खिलाफ उठल विद्रोह एगो बड़ घटना रहे। एह आग के जगावे में भोजपुरी भाषा-क्षेत्र के लोगन के अगुआई भूमिका रहल। बाबू कुँवर सिंह, मंगल पाण्डेय सरीखे जोधन आ सिपाही विद्रोह के जानल-अजानल हजारन नायकन के देखले ई बात साफ बा। ई कहल बड़ बोलापन ना होई कि देश के आजादी खातिर संगठित सघर्ष आ बलिदान के राह भोजपुरियन के ही बतावल ह। ई बलिदान भाषा के स्तरो पर दिहल गइल। देश के एक सूत में बान्हे बदे संपर्क भाषा के रूप में उत्तर भारत के सभ बोलियन के सतमेझरा आ संपर्क भाषा के रूप में बिकसित हिन्दी के बढ़ंती खातिर भोजपुरी लोग आपन भाषायी हमता के तज देल। ई अचानक नइखे कि आपन सवारथ भा साम्राज्यवादी नजरिया से ही सही हिन्दी के मानक रूप के तलाश में अंग्रेजन के सदल मिश्र के भाषा में ही हिन्दी के जथारथ सरूप भेंटाइल, जे आरा के रहलन। ओही नीव प अॅ पठन-पाठन आदि में तेकर विकास के प्रयास भइल। केहू कतिनो गीत गावो, भारतेन्दु के पहिले हिन्दी के का सरूप रहे? इ सभे जानऽता।जयशंकर प्रसाद आ प्रेमचंद के अगते हिन्दी के का हाल रहे? इ सभ संकेत एहि बदे कि हिन्दी के विकास में भोजपुरियन के आपन भाषायी अस्मिता के तेयाग के चीन्हल जाव।

एह तेयाग के परिनाम ई भइल पत्रकारिता के क्षेत्र में भोजपुरी के प्रवेश हिन्दी के तुलना में काफी देर से भइल। हालांकि भोजपुरी के कुछ छिटपुट रचना हिन्दी के पत्रिकन में प्रकाशित भइल रहीसँ जे से लोग एह भाषा के तागत से परिचित हो चुकल रहे। ए में श्री महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के नेतृत्व में संपादित 'सरस्वती' (सितंबर 1914 भाग-15 खंड 2 पृ0 512-513) में प्रकाशित हीरा डोम के 'अछूत की शिकायत' के जिक्र जरूरी बा जेकरा खालिस दलित लेखन के पहिलकी रचना होखे के गौरव भेंटल बा। 'भोजपुरी' नाम के एक साप्ताहिक पत्रिका के प्रकाशन अखौरी महेन्द्र कुमार वर्मा के संपादन के कोलकाता से भइल जबन मूलत: हिन्दी के पत्रिका रहे आ एमें भोजपुरी के कुछ लेख छपत रहल। सन् 1948 में महेन्द्र शास्त्री के संपादन में 'भोजपुरी' नाम के त्रैमासिक पत्रिका के प्रकाशन पटना से भइल बाकी एके अंक के बाद ई फिर ना चल पाइल। फिर 1952 में 'भोजपुरी' (मासिक) के प्रकाशन आरा से शुरू भइल-जवन 1955 में स्थगित भ गइल। सन् 1963 में एकर फिन से प्रकाशन शुरू भइल जवन बाद में स्थगित भ गइल। 1960-70 के दशक में प्रकाशित होखे ओली कुछ प्रमुख भोजपुरी पत्रिका रहीसँ -अंजोर (1960), गाँवघर (1960), भोजपुरी समाचार (1965), माटी के बोली (1964), भोजपुरी कहानियाँ (1964), हिलोर (1969), भोजपुरी जनपद (1968), भोजपुरी साहित्य (1965), बगैरह। तेकरा बाद से अब तक भोजपुरी में दैनिक समाचार से लेके विभिन्न क्षेत्र के विधा जइसे सिनेमा, व्यवसाय, साहित्य-संस्कृति, कविता, कथा-कहानी, निबंध, आलोचना साहित्य बगैरह में पत्रिकन के संतोषजनक अधिकाई बा जिनकर नाम गिनावल इहाँ उद्देश्य नइखे। वर्तमान में भोजपुरी में छोट-बड़ हर तरह के पत्रिकन के कवनो कमी नइखे। इंटरनेट माध्यम के प्रचलन में अइले वेव्ह पत्रिकनों के दौर शुरू बा। कुल मिला के कहल जाव त भोजपुरी में पत्रकारिता के क्षेत्र में काफी उछाल आइल बा।

कवनो विकसनशील समाज भा संस्कृति के निर्माण में भाषा एगो मुख साधन ह। भाषा के बेहतर स्थिति, ओकर तागत सांस्कृतिक समृद्धि के भी बोध करावेला। एकर आकलन सापेक्षिक आधार पर ही संभव वा। आन क तुलना में हम कहाँ बानी ई देखल महत्त्वपूर्ण बा। पत्रकारिता के क्षेत्र के समृद्धि कवनो भाषा-संस्कृति के समद्धि के बोधक मानल जा सकेला। एहि नजरिए ई साँच स्वीकारे पड़ी कि भोजपुरी के स्थिति बहुत ठीक नइखे। एकर ढेर-ढेर कारन बाडीसँ जवना प एक नजर डालल जरूरी बा।

पीछे के चरचा में ई संकेत उभरल बा कि कइसे एक व्यापक भाषायी, सामाजिक, राष्ट्रीय आ जातीय चेतना विकसित करे बदे भोजपुरिया आपन भाषायी अहं के तिलांजलि दे दिहलें। एकरा के गलत ना कहल जा सके। ई तात्कालिक जरूरत भी रहे आ साम्राज्यवादी भेदनीति के काट भा प्रतिकार भी। बाकी ई साफ होखे के चाहीं कि चेतना के भीतर भी कई ताकतवर चेतना के मौजूदगी ओकर कमजोरी ना ह बलु गुण ह। चुक इहई भ गइल। साथे-साथे जामल बंगला, ओड़िया प्रभृत कईयक भाषा आपन अस्तित्व बचावे में ना केवल कामयाब रहलीं बलु विकास के मानदंड स्थापित कइलीं, उहें भोजपुरी एक आत्महंता जड़ता के भीतर समात चलि गइल। जन भाषा के रूप में आपन व्यापकता आ वैश्विक प्रसार के बावजूद साहित्य लेखन भा पत्रकारिता जइसन क्षेत्र में एहि जड़ता के जबरजस्त असर देखल गइल।

एक बात साफे तौर प जान लेल जरूरी बा कि धर्म, राष्ट्र, इलाका, जाति, लिंग, बगैरह के तरे' भाषा ना केवल कवनो बेकती या समूह के अस्तिव भा अहं के पहचान के आधार ह बलुक एकर सभसे प्रखर माध्यम आ भेदक लच्छन ह। संस्कृति के पहचान भाषा के आधार प ही होला, ई अगल-बगल झाँक के देखल जा सकेला आ ओकरा से सबक लिहल जा सकेला। भाषा के क्षेत्र में एगो कुलक मानसिकता के थिउरी काम करेला। प्रभुवर्ग हरमेसे आपन एगो नया भाषा के इजाद करेला आ ओकर सरेखपन के दंभ से, ओकर हथियार से बहुसंख्य जन प आपन धाक जमवले रहे ला आ ओकरा के ओछा साबित करत रहेला। बहुत पहिले के छोड़ल जाव आजादी के बाद भाषा के स्तर प भारत में का हाल बा एही से एहि बात के समुझल जा सकेला। भोजपुरी के के कहो सबके सम्मिलात रूप से विकसित हिन्दी के ही आज तक ऊ जगह ना मिल पाइल जवन एक राष्ट्र के भाषा के रूप में, ओकर अस्मिता के पहचान बदे जरूरी रहे। मुट्ठी भ लोग आपन स्वारथ में अंगरेजी के बनरमूठ अस धइले रहल। इनकर धूर्तता क ई रूप अउ भयावह रहल कि इ सभ भारतीय भाषा, जवना के बीच माई,बहिन, गोतिया के रिस्ता रहे, के बीच एक दोसरा के प्रति संका आ भेद के बीआ बोवत रहलें आ सफल भइलें। जे समय रहते चेतल ऊ कुछ बँचावल, सँगोरल बाकी भोजपुरी में ई चेतना ना आ पाइल। कारन, एह कुटिल चौसर के चाल में हमनी फँस गइनीं। आजो हीनता बोध से ग्रसित भोजपुरीजन अंगरेजी भा हिन्दी के प्रति उहे भाव से जकड़न बाड़ें। ई एगो बड़हन कारण रहल जे से भोजपुरी पत्रकारिता के क्षेत्र में डेग बढ़ावे के लोग हिम्मत ना करि पावल।

भाषा के संबंध ओहभाषा-समाज के ईयाद, ज्ञान आ रचना शक्ति से होला। जिनिगी के संस्कार, रीति-रिवाज, विचार बगैरह के रचे में, समाज के दोबारे निर्माण भा विकास में, भाषा के भूमिका महत्वपूर्ण बा। जाहिर बा भाषायी अहं के अभाव ई सम चीझन पर उल्टा प्रभाव पड़बे करी। एकरा बदे एक तरे' के जुनून के जरूरत होला। भोजपुरी पत्रकारिता में जवन कुछ बा एहि जुनून का कारन ही बा लेकिन ओकर तादाद अतिना कम बा कि नक्कारखाना में तूती के आवाज बनि के रहि गइल बा।

पठनीयता के सवाल भी भाषाई अहं आ कवनो समाज के बौद्धिक स्तर से जुड़ल चीझ ह। बौद्धिक भूख आ भाषाई चेतना दुनो के अभाव भोजपुरी पत्रकारिता के मन छोट करे के कारण बाड़ी सन। साहित्यिक समुदाय से ले के आम पाठक वर्ग के सोझा हिन्दी आ अंग्रेजी के बेहतर बिफल्प मौजूद बा त उ काहे भोजपुरी के ओरि तिकवस। प्रबुद्धवर्ग भिरी स्तरीयतो के प्रश्न बा। दूसरे, जब सहजे एक व्यापक बौद्धिक माहौल हिन्दी आ अंग्रेजी किहाँ मिलऽता त -''सूरदास प्रभु काम धेनु तजि छेरी कौन दुहावे?'' ई ओह लोगन के सोच ह जेकर स्वार्थ, सारोकार हिन्दी से जुड़लबा। पढ़े वाला बौद्धिक वर्ग ही ह अउ ऊहे जब ए तरे के हीनता भा स्वार्थी सोच से जूड़ल बा त

असर पड़हीं के बा। एह स्थिति में भोजपुरी के जुनूनी लोगन में उत्साह के कमी आ 'कुछ नइखे होखे वाला' जइसन भाव उदासीनता पनपल सुभाविक बा। स्थिति कबीर के ओहि बक्तं जइसन भ गइल बा कि 'जे फूँके घर आपनो चले हमारे साथ'। के चाही जे पेट काटि के, मर मर के, सारा उधामत क के पत्रिका छापे आ मित्र-परिचित के सस्नेह भेंट भेजत रहे। बदले में मिले का त छूँछे धनिबाद, ना त आभार, एह भाव का संगे कि चलऽ भेज देलऽ त देखहीं परी ना त केकरा भिरी अतिना फालतु बखत बड़ुवे। ए में उहो लोग सामिल बा जे टी.बी. प गँजेड़ी-भँगेड़ी सधुअन के किरपा बरसावत देख के दसबंद काढ़े में इचिको देर ना लावे। सी. जी. मूलर के पत्रकारिता के परिभाषा में निहित 'ज्ञान के व्यववसाय' वाला पद गौर करे लाएक बा। जिनिगी के कवनो क्षेत्र में बेवसायिक नजरिया से लाभ-लोभ के ढुकले ऊ क्षेत्र अचके उजागर हो जाला आ ओह में लगवहिए उठान, फैलाव होते चल जाला। एकर एको पहलू ईहो बा कि जहाँ लोगन के रूचि, रूझान बढ़ल ओहिजा बेवसायिक नजरिया अपनहीं पनपल शुरू हो जाला। हिन्दी में भी बड़ बेवसायिक धराना के पैठ वाली, सरकार से पोसित, भा कई तरे' के संस्थानन के देखरेख में निकस रहल पत्र-पत्रिका ही लाभ में बाड़ीसन आ ओकर प्रसार-विस्तार भी बा। जुनूनी लघुपत्रिका सम्मिलात के प्रयास भा कवनो राजनीतिक दृष्टि से पोसन के बले ही चल पावेली। भोजपुरी में अब तक ए तरे' के कवनो संरक्षण-पोसन के लच्छन नइखे लउकत। कहीं थोरके सुगबुगाहट बा भी त अकारन छाती प मुक्का मारे वाला लोगन के भी कमी नइखे - देखऽ देखऽ भोजपुरियो करपोरेटियाए लागल, देखऽ देखऽ हउ ललका, भगवा, हरियरका, नीलहवा भा करियअवा हवनसँ। अरे भाई आवे दऽ, सभे के, भाषा के क्षेत्र हऽ। बोलीं- बतिआई, खुनसी-गरिआई, हँसी-गाई तबे नू बात बढ़ी। जब देह रही तबेन फुंसरी होखी। बाजारवाद के हौवा खड़ा करे के राजनीतिक सैद्धांतिक कारण बाड़े। बाकी एगो सचाई बा कि ई नवकी पीढ़ी कि सोझा अनघा विकल्प ले के ठाढ़ बा। भोजपुरी पत्रिका के क्षेत्र में प्रयोग के तौर प ही सही एह मोका के छोड़ल आतमघाती ही होई ऊ भी कवनो सैद्धांतिक अहं के तुष्टि बदे। बोलियन के सरकारी अकादमिक सरंक्षण के नीति-नीयत आ काम काज के ढंग के त बस मत पूछल जाव। ए प ढेर कहल ठीक त नाहिए होई बेअरथो बा।

भोजपुरी पत्रिकन के एगो बड़ चुनौती पाठक तक पहुँचलो के बा। दिल्ली से दुमका, नेपाल के तराई से छोटानागपुर के पठार तक आ दसियन देसन में प्रचार प्रसार रखेओली भाषा के कवना छोर पर कवन राग उठऽता ई जान पावल बड़ मोसकिल काज बा। ए में एक त बढ़त जात डाक खरचा दोसरे पाठक वर्ग के ललक के अभाव ई दुगो मुख कारण लउकऽताड़ें। ईहाँ त बात ई हो जाता कि हमरा पिआस बा त कुईयाँ हमरा लगे काहे नइखे आवत। भोजपुरी पत्रिकन के प्रचार-प्रसार बदे जतिना साधन के इस्तेमाल हो सकेला करे के चाहीं आ पाठको के आगा बढ़ के हुलस देखावे के पहल करे के परी। जसहीं प्रकाशक आ पाठक के बीच समंध जुरि जाई फिर देखीं तमाशा।

एहि चरचा में इंटरनेट के माध्यम के सुलभ माहौल में वेब्ह पत्रिका के अवतरन प बात भी जरूरी भ गइल बा। आज साहित्यिक पत्रिकन के सामने इलेक्ट्रानिक माध्यम एगो चुनौती के रूप में ठाढ़ भ गइल बा। ब्लाग लेखन, फेसबुक, व्हाट्स एप वगैरह अनेक किसिम के अभिव्यक्ति आ रचना आ विमर्श के प्रसार के समानांतर राह बना दिहले बाड़न। सोशल मीडिया के धाक बढ़े से लहुरिया पत्रिकन के सोझे नया संकट पैदा भ गइल बा। एकर पच्छ-बिपच्छ में कई तरह के तर्क दिहल जा रहल बाड़ीसँ। बाकी इहाँ ई समुझल काफी बा कि जुग बदलेला त माध्यम बदल सकेला बदलले ला । के नइखे जानत कि पथल लेखन के जुग से कागजी मुद्रन के जुग तक पँहुचे में अभिव्यक्ति माध्यम के विकास भइल कि हरास। नवका

सैलाब रोकले थोरे रोकाला। काल्हु हो सकेला कि कागज के जगहा इलेक्ट्रानिक माध्यम ले लेवे, फिर कागजी किताब अतीत के चीझ हो जाय। ऐ से जुग के हिसाब से ओकरा कंधा-से-कंधा मिला के चलेओला फरमूला ठीक, ना गाडी पीछे छूट जाए के अनेसा बा। सहजाचार के प्रवृति सगरे, सम क्षेत्र में काम करेला। एहिजो उहे होई। जवन आसान होई, नीमन होई, रहि जाई बाकी परिदृश्य से हटि जइहें। कतिना किला, मठ भँस जइहें आ कछुआ मूड़ी अलगवे बहरी अइहें।

शीत-जड़ता टूटी। टूटबे करी।

*दिनेश पाण्डेय

बाबुल के प्यार अउरि माई के दुलार

बाबुल के प्यार अउरि माई के दुलार
बचपन के भइया के राजदार हउ बहिना ।।
अन्हरियो में आशा के जलत रौसनी
दुखवो में सुख के मुस्कान हउ बहिना ।।

केकरा से रूठबि हम के हमके मनाई ।
तोहरा बियोगे रोइहें बाबुल अउरी माई ।।
हउ तू त निश्छल प्रेम के बहत दरिया

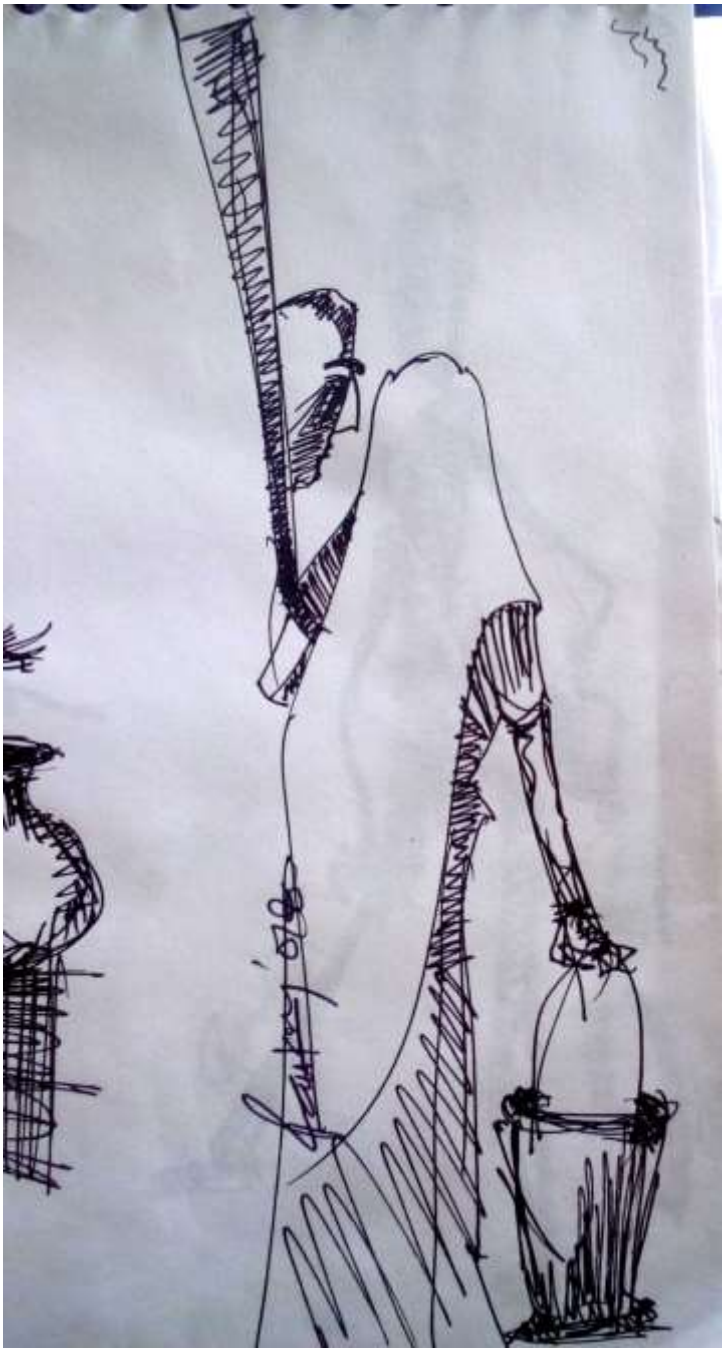

भइया के हाथ के सिंगार हउ बहिना ।।
अन्हरियो में आशा के जलत रौसनी
दुखवो में सुख के मुस्कान हउ बहिना ।।

तोहरा बिदाई से सूना होई जाई हमार घर अंगना ।
जइसे इहवाँ चहकत रहलू चहकिह साजन के अँगना ।।
निस्वार्थ दुई बाग के रौसन करे ऊ
धरती प देवी अवतार हउ बहिना ।।
अन्हरियो में आशा के जलत रौसनी
दुखवो में सुख के मुस्कान हउ बहिना ।।

तोहरो आऊ बहुत याद मोरी बहिना ।
चारू ओर भीड़ दिखे तोहरा जस कोई ना ।।
हमरा जिन्दगी के चान अउरी चन्दनियाँ
मइया के अधर के मुस्कान हउ बहिना ।।
अन्हरियो में आशा के जलत रौसनी
दुखवो में सुख के मुस्कान हउ बहिना ।।

• **अनिल कुमार**

डॉ. जौहर शफियाबादी क कुछ गज़ल

गजल

अखबारी झकझोर खबर बा,हमहूँ सोंची, तुहूँ सोंचऽ।
मानवता के क्षय,के डर बा,हमहूँ सोंची,तुहूँ सोंचऽ॥
आकुल नयन बेचैन अधर बा,हमहूँ सोंची तुहूँ सोंचऽ।
सारा सपना एहर-ओहर बा,हमहूँ सोंची तुहूँ, सोंचऽ॥

सूना पंघट गाँव नगर बा,हमहूँ सोंची तुहूँ, सोंचऽ।
जीवन कतना टेढ़ डगर बा, हमहूँ सोंची, तुहूँ सोंचऽ॥
काँच के हमरो-तहरो घर बा,हमहूँ सोंची,तुहूँ सोंचऽ।
हाथ में हमरो-तहरो पत्थर बा,हमहूँ सोंची तुहूँ सोंचऽ।।

सत्ता के बेमोल लड़ाई,उलझल बारें भाई-भाई ।
खतरा सबतर आठो पहर बा,हमहूँ सोंची तुहूँ सोंचऽ॥
मज़हब-धर्म में झगड़ा कइसन?मानवता में रगड़ा कइसन ।
स्वारथ सब झगड़ा के जड़ बा,हमहूँ सोंची तुहूँ सोंचऽ ।।

अंधा नगरी चौपट राजा, जस भाजी तस बाटे खाजा ।
सच्चाई कहवाँ जौहर बा, हमहूँ सोंची तुहूँ सोंचऽ ।।

गजल

ई का गजब भइल, गमला में नागफनी।
सब कुछ बदल गइल,गमला में नागफनी ।।
जस धरती तस रूप अनूपऽ के शोभा ।
ऊ दिन कहाँ गइल,गमला में नागफनी ।।

अपना धरा के इज्ज़त, मोल सब गवाँ के ।
ई के धर्म कइल , गमला में नागफनी ।।
जहवाँ रहे धइल, जूही, गुलाब, बेला ।
ऊ छब कहाँ गइल,गमला में नागफनी ।।

निरखीं तनी टहल के, अब नगर चलन के ।
सगरो परल फइल,गमला में नागफनी ।।
ठुनकत सजी धरम बा,का भइल कहाँ छल ।
माटी-कइल-धइल, गमला में नागफनी ।।

जौहर कठिन बा बातो, कहल समय के ।
गंगा भइल, मइल, गमला में नागफनी ।।

नवगीत-सपना

कब आई हमरा गँउवा में,
प्रेम किरण मुस्काई ।
भरम जाल के तूर-तार के,
साँच तराना गाई ।

धरम कहीं कि भरम कहीं,
कुछुओ ना आज बुझाता ।
जवने खातिर धरम बनल,
ओकरे के जारल जाता ।

बोलऽसत्ता भाग्य विधाता,
तूँऽअउरी का खइबऽ।
राम, कृष्णआ पैगम्बर के,
केतना अउर भँजइब ऽ ।

सांई आ कबीर के डसलऽ,
पेन्ह के लमहर चोला,
सोंचऽना रतिया का पाछे,
दिन के पहरा होला ।

माफ करी इतिहास ना बबुआ,
एक दिन तूँ पछतइब ।
चढ़ल बाड़ऽ आकाश में तूँ,
कहियो धरती पर अइबऽ ।

(जौहर शफियाबादी)

राधामोहन चौबे "अंजन" जी क कविता अउरि जीवन परिचय

हमार जिनगी

भरल कँटवा में बाड़ी ई हमार जिनगी
कइसे जाने बिधना करिहें किनार जिनगी..

जहिया काकी गरिआवे, बढ़नी लेके मारे धावे
बोले लवना लगाइबि, तोहके बारी में पेठाइबि
सुनि-सुनि सोचीं अपने मनवा, लिखले बाड़ें का बिधनवा
जरते-जरते में हो गइली ई छार जिनगी...
भरल कँटवा.....

एकदिन मनलें नाहीं बतिया, धइ के ले गइलें संघतिया
देखनी लरिकन के पढ़ाई, आइल अचके में रोआई
सोचनी रहित हमरो माई, देइत पटरी मँगाई
सचहूँ पढ़ा-लिखा के करि दिहीत तइयार जिनगी
भरल कँटवा....

रोजे सुनीं झहुआवन, सबके बनि गइनी हम धावन
सूखल-पाखल हमरे बखरा, लोगवा नाँव धरे ला टुअरा
कुहुके रोज करेज हमार, सहीं भितरे-भीतर मार
माई बिना लहके बनि के अंङ्गार जिनगी...
भरल कँटवा...

माई तजि के कहाँ पराइल, सगरो सुखवा हेराइल
जेकर नाहीं बाटे माई, ओकर केहू ना सहाई
घर में केतनो होई लोग, केतनो होई उतजोग
बाकी सुखले रही ना होई गुलज़ार जिनगी
भरल कँटवा....

जहिया हो जाई बुखार, बथी कसि के जब कपार
रोवबि कहि के माई-माई, केहू पुछहूँ ना आई
लोगवा खूब मजाक उड़ाई, कही कइले बा नकलाई
रहल नान्हें से हरदम लाचार जिनगी
भरल कँटवा...

माई सपना में बोलवलसि, अपना कोरा में बइठवलसि
लागलि चूमे पुचुकारे, लगलसि अँचरा से झारे
तवले निनिया हेराइल, सून घर बा बुझाइल
हरियर हो के छनभरि हो गइली उजार जिनगी..
भरल कँटवा में बाड़ी ई हमार जिनगी

राधामोहन चौबे "अंजन"

राधामोहन चौबे "अंजन"

कवि, गीतकार राधा मोहन चौबे (अंजन जी) क जन्म दिनांक 4 दिसम्बर 1938 को ग्राम शाहपुर-डिघवा, थाना-भोरे, गोपालगंज जनपद, बिहार में भईल रहे । इहाँ के बाबूजी के नाँव श्रीकृष्ण चतुर्वेदी अउरी माई के नाँव महारानी देवी रहे । बाद में अंजन जी आपन ननिहाल ग्राम अमहीं बाँके, डाक-सोहनरिया , कटेया में स्थाई रूप से बस गइनी । अंजन जी बचपने से कविता लिखे लगनी । बाकि प्रसिद्ध भोजपुरी कवि धरीक्षण मिश्र के संपर्क में अइला के बाद अंजन जी के काव्य प्रतिभा में निखार आइल । अंजन जी एगो प्रतिभाशाली विद्यार्थी रहीं । हाई स्कूल क परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास कइनी । अंजन जी बाद में हिन्दी मे एम०ए० पास कइनी, पास कइला के बाद 19 अगस्त 1959 के शिक्षक के नौकरी मिलल । तब से शिक्षक, प्रधानाचार्य, प्राचार्य, प्रखण्ड शिक्षा अधिकारी, क्षेत्र शिक्षा अधिकारी आदि पद पर काम कइनी और फिर 1 फरवरी 1998 के सेवानिवृत्त भ गइनी । अंजन जी भोजपुरी गीतकार के रूप में मशहूर भइनी । इहाँ के आकाशवाणी पटना आ दूरदर्शन पर भी गीत प्रस्तुत कइनी । अंजन जी कविता अउरी गीतन के अलावा कहानी , उपन्यास और नाटक भी लिखनी । इहाँ के गीतन में गंवई समाज के संवेदना के उत्कर्ष और अपकर्ष क धुरी के चारों ओर नाचत मिलेला । आजो पूर्वी उत्तर प्रदेश के तमाम गायक अंजन जी के गीतन के गा गा के जनमानस के मन्त्रमुग्ध क देला लोग । अंजन जी कवि, गीतकार के साथ-साथ निक पहलवान भी रहनी । अंजन जी के कुल 25 जो किताब प्रकाशित भइली स । इहाँ के पहिलका किताब-कजरौटा, 1969 में प्रकाशित भइल रहे । कुछ अन्य मुख्य प्रकाशित किताबें के नाँव बा -फुहार, संझवत, पनका, सनेश, कनखी, नवचा नेह, अंजुरी, अंजन के लोकप्रिय गीत, हिलोर आदि । अंजन जी के पश्चिम बंग भोजपुरी परिषद, कोलकाता, मुम्बई दूरदर्शन आदि के द्वारा समय-समय पर सम्मानित भी कइल गइल । अंजन जी क देहावसान 15-01-2015 के भइल, आज उहाँ के हमनी के सोझा नइखी बाकी उहाँ के रचना जब जब पढ़ल जाई तब तब जनमानस उहाँ के जरूर याद करी । बारम्बार नमन बा जमीन से जुड़ल एह कवि, गीतकार के ।

भोज

रमेशर चच्चा : हरे सारे, पहिले खा ले फिर ले लीहे, एक्के बेर एवरेस्ट बनावल जरूरी बा हीत, राक्षसे पैदा भइल बाड़ का फलाना क!

मलखान चच्चा : अरे ना भैया, कई बेर लिहला पर तिकवत हउवन स अइसे जइसे डाँड़-मेढ़ हेहर-होहर क देले होखीं, आ ऊ ढेर फेरा में परल बाड़न स जवन सबेर से हिलल नइखन स खाहीं खातिर!

रमेशर चच्चा : चल ठीके बा लेकिन तब्बो तनी सीख सहुर।

मलखान चचा : अरे भैया, ठीक ह कुल।

बड़की पूड़ी क बड़का कवर तोड़ के मुंह मे ठूँसत जात ह लोग, दुनो जाना "एक से एक महा रनधीरा.." कहावत पर खरा उतरत रहे।

अचानक,

मलखान चच्चा : तूही बतावऽ भइया, पाँत पर खियावस आदमी त बड़ी मजा आवे कि ना.....परात जइसन पत्तल परास क अउर हाथी क कान नीयर पूड़ी... ओहोहो... आ बड़का बड़का भरुका... जब बलेलवा जल-जल-जल-जल....चिचियात निकले पात में से त गांव क सत्तर फीसदी आदमी क बिना गारी एक्को ठोप घोंटाव ना, एसे की शुरुवे में पंडीजी अउरियाही क देले रहस। उ जमाना रहे कि बाउसाहेब भी बलेला क गारी के मजाक समझस, अब त बेट्टा तिरछा ताक के मजाक भी क दें त गारी समझ के लउर ना सीधे गोली चल जाइ, एसे की लद गइल ऊ जमाना लउर का? अब त कट्टा से नमस्कारी ठोंकाता।

रमेशर चच्चा : खो सारे!... का कुल पुरान बात याद कइले बाड़े? करेजा पर रहर दर के ई नवकन क सोंझा चुप मार के रहेके बा... ऊ जमाना पिरेम क नेय पर बनल रहे, अब ऊ बात न रह गइल बा.... न त कहाँ भोरहीं बैलगाड़ी साज के जब मलिकार दुवारा से गरियावे लागस त दूल्हा जामा-जोरा पहिनते हाजिर, बरियात निकलले आधा घण्टा भी न बीते कि मलिकार कड़ेरे आवाज में गरजस... "का हो फलाना, बोलिह, सतुआ क टाइम होइ त। लजइले जीव न बाँची, पूरा इज्जत तोहरे सम्हारे के बा!"

ओनी से फलाना गरियावस, "अरे सारे, पूछ-पूछ लग्घी से पानी का पियावत हुवे, माल तैयार कर, ई जिमदार पीछे हट जाइ त असली मरद ना!"

मलखान चच्चा : तब का, ओहि में घुरहुआ बलेलवा से पूछ लेव कि का हो नवकी पनडुब्बी ठीक ठाक बिया न? फिर का शुरू हो जाव गारी-गरौवल आज के आर्केस्ट्रा से कम न रहे। सब हाहाहाहा करत मौज से जाव बरियात।

रमेशर चच्चा : ओह समय के बैलगाड़ी में जवन गँवई मजा रहे ऊ हई चरचकवन क बस क नइखे, ओमे न

आगे बैठे क झगरा न पीछे बैठे क, आजकाल त सभ अगिला सीट खातिर भयवद्दी तक छोड़ देत बा कि फलाना हमके आपन बारात में पीछे बैठा देहल। तरह-तरह के बात बिया ए मलखान, चुप मार के घोंट

जा। तुहूँ का जानी कहवाँ-से-कहवाँ पहुँचा देहल? मनवे तीत हो गइल...अइसन मरिचा कुँचवइलऽ!

मलखान चच्चा : हम त कहत हईं कि बखरी तक बेंचे खातिर तैयार बानी ई शर्त पर... जवन प्रेम अब गूलर क फूल हो गइल बा ओकर एक छँटाक भी अगर वापस लउकि जाव, लेकिन ई ना होई। ई ससुर लोग से, इन्हन क त सुई भर बात से नाक -मुंह टेढ़ हो जाता, कुच्छो न होई!

रमेशर चच्चा : छोड़ मरदवा कुल माहुर हो गइल, हमसे न खवात ह अब, चलऽ हाथ धोव, खियावस आपन हिरिया-जिरिया के जवन बोलवले बाड़न बिदेसिया यारन के, ओहनी क पहिनाव अइसने बा कि बैठ के खाई न पइहें सब, तिन्ना होके खाना खाइल उनहन खातिर ही बा , हमन क टाट पर जब तक बैठ के घण्टा भर पात न चले तब तक कइसन भोज....!

मलखान चच्चा : चल हो, बफर सिस्टीम कि का जनी का कहत हवन से एके.... ई भोज ना ससुरा डोमघाउच भइल बा.... साला बुढौती में अबहीं कउन-कउन दिन देखे के परी, भगवाने मालिक बाड़न।

***अतुल कुमार राय**

स्वभाव

"पानी में काई जमी अगर, एक ना एक दिन उतिराई हो,
खल केतनों गीता पढ़ लेई, दुष्टता छोड़ ना पाई हो।
सूरज से आग बरिस जाइ, तब्बो बेहया रही हरियर,
'त्यागी' बदरा के गरिजे से, मेंढक नाहीं डर जाइ हो।
तू जोर भले केतनों करि ल$, स्वभाव न केहू के जाला,
कुक्कुर के पूँछ रही टेढ़े, केहू केतनों सुघुराई हो।।"

- संजीव कुमार त्यागी

भोजपुरी

जय भोजपुरी जय भोजपुरिया बा अइसन परिवार
केहू ना अनजान बुझाला नीमन बा बेवहार
अपनापन के पौध परस्पर जौ जौ रोज बढ़ेला
प्रेम पयोधि पीयूष धार से सभे तृप्त रहेला
बाबा ,चाचा , दीदी ,भइया दिली रिश्तेदार बा
आपन भाखा भोजपुरी के सभे पहरेदार बा

- विबेक पाण्डेय

ठेकाना

गाँव से माई बाबू के कपार क बोझा हल्लुक करे खातिर अउर कलेक्टर कप्तान बनके परिवार, गाँव, जिल्ला, जवार के नाँव चमकावे खातिर बाउसाहब इलाहाबाद आइल बाड़ें।

रहे खातिर ठेकान खोजे कड़कड़ात घाम में भी फलनवा संगे निकललें और पहुँचले कटरा जहाँ रोज साँझे के बेरा अइसन लगे जैसे हुमच के बरिखा भइल होखे अउरि कुल लाल पियर मेंगुचा उतिराय गइल होखे..सोचले कि ईहें सही रही मरो-मनसाइन हो जाइल करी पढ़ला के साथे। चलत खोजत वकील साहब के कोठी पड़ल।पूछ लिहले तपाक से की

'ए सर! कमरा खाली है?'

"नहीं! पता नहीं कहाँ से चले आते हैं मुंह उठा के!"- वकील साहब झल्ला के बोललें।

इधर बाउसाहब के इज्जत लसराये लागल। तब तक फलनवा कहते त बा कि ऐ बाउसाहब, ई कुल ऊँच-नींच जिन देख, एसे काम न चली,पहिले कमरवा मिल जायेद फिर बतावल जायी कि "कवना धान के होरहा होला"।

आगे बढ़लन लोग मन माहुर जइसे कड़के.....

धत्त...ई त बिल्डिंगिये देख के लागता कि कमरा न देइ ई सार। चल आगे बढ़....

घूमत-फिरत बेचारे कहलन कि चामक-चूमक में रहला से नीक कहीं दूरे चले में भलाई बा..ई सारे ढेर भी.आई.पी बनत हवें सभ।

छोटा बघाड़ा.....

दरवाजा खटखटाया।

फुलेसरी दरवाजा खोललस फलनवा के मन हरियर हो गइल लेकिन जैसहीं मुँह खोललस जिनिगी जहर से भी बदतर बुझाए लागल। लेकिन फलनवा के घुसका के बाउसाहब आगे भइलें आ हथजोरी कइके पूछत हउवन कि दिन भर चलत-चलत गोड़ के बेवाय अउरि चाकर हो गइल बा, देख लीं तनिकियो गुंजाइश होखे त, छोटो होई कमरा त कैसहुँ रह लेब।

"कमरा तो है, लेकिन कुछ शर्त है। उस शर्त को जानने के लिए पापा से मिलना पड़ेगा जो दो घंटे बाद ऑफिस से आएंगे।" ऊ कन्या बोलिके दरवाजा झट से बंद करि दिहली।

फलनवा- का बाउसाहेब वकीलवा बोललस तब त इज्जत लसरात रहुवे और इहाँ देखला कि माहौल कुछ देर ठीक बा त चट से गोड़े गिर गइल।

बाउसाहेब- ऐ ससुर,जहां जइसन ना त भूमिहार कइसन।

दुइ घंटा तक ऊ लड़की में भविष्य अउ ऊ भविष्य पर शोध कइला के बाद मन थाक गइल रहे।

आखिर मकान मालिक यानी ओकर बाऊ अइले। बिना बोलले चलले सीधे एगो फ़रकत्ती थमा देलस।

1..सबसे पहले अपनी id जमा करना होगा।

2..सुबह शाम आधा घण्टा मोटर चलेगा उसी में पानी का सब काम पूरा कर लेना होगा।

3..लड़को का जमावड़ा नही होगा।

4..कमरा 10-by-10, किराया- 3500, बिजली बिल 400 अलग से देना होगा।

5..गर्मी में कूलर का किराया 500 रु अलग से देना होगा।

6..अलग प्रजाति के परिंदों को छत के आस पास भी फटकने नही देना होगा जो आपसे किसी भी तरह से सम्बन्ध रखता हो।
अउरि बहुत कुछ रहे बाकिर छठवां पढ़ला के बाद दिमगवे घूम गइल।

बाऊसाहेब- हरे एकर मतलब?

फलनवा - मतलब लड़कीबाजी ना होखे के चाहीं।
बाऊसाहेब- अरे ससुरा, ई त हमनीं के आवारा बुझत हवें सब।
फलनवा - तब का होई?
बाऊसाहेब-तनी कगजवा दिहे त। नीचे कुछ लिख पढ़ के मोड़ के चल देहले मकानमालिक के देवे..
मकानमालिक- अरे बेटा! इसे अपने पास रखो! सोच विचार के बताना।
बाउसाहेब-अरे नाहीं सर!इसे रखिये अउर हाँ नींचवा कुछ लिखे हैं पढियेगा जरूर...

वइसे कमरा त ना मिलल लेकिन मिल भी गइल त कउनो फायदा नइखे काहें कि गाँव के भुसहुल से तनिको नीक इलाहाबाद के कमरा नइखे लेकिन कइसहूँ रहहीं के बा।
(वापस लौटत समय दिन भर के थाकल दुनो कल्लू कचौड़ी किहाँ कचौड़ी खाये लगलें।)
फलनवा - ऐ बाउसाहेब , का लिखे थे नींचवा?
बाउसाहेब- ऊ बेटा फिर कबो कवनो लइकन के फरकत्ती त नहिंये दीहें।
फलनवा - बताव ना मर्दवा, बुझनीं का बुझावे ल?
बाउसाहेब-नींचवा यही लिखे थे कि—-
"ए ससुर! एकरा से त नीक आ बरियार हमार भुसहुल हव, मजबूरी बा बस, न त सार तोहर जेतना में बिल्डिंग बा ओतना में गोइठा पथाला हमर,आज के बाद फरकत्ती थमइल न अइसन केहू के त अगर उ गाजीपुर के निकलल त कूटबो करी, हम त छोड़ देली हँ बस दुआरी से झाँकत अँजोरिया के देख के। "

***अतुल कुमार राय**

केकर कवन रूप बा

केकर कवन रूप बा, कइसे पहिचानीं ?
पीतर के गगरी पर सोना के पानी।
अन्हरा लगवले बा अंखियन में काजर,
लंगड़ा भइल बाटे सब गुन आगर,
केसर के क्यारी में नफरत के आगी,
बोवत बा जाति धरम के ओढ़ि चादर,
भीतर माहुर मुंह में बा मधुरी बानी।
पीतर के गगरी पर सोना के पानी।।
आइल बा जहिया से पच्छिम से आन्ही,
अंगरेजी बोलेले टुटही पलानी,
लोक लाज बांसे के पुलुई टंगाइल,
उतरि गइल बा सबके नजरी के पानी,
मकड़ी के जाला में अझुरल जवानी,
पीतर के गगरी पर सोना के पानी।।
झूठ के बजारी में संचका हताता,
पुरयिन के पत्ई पर पानी बंटाता,
सरहद से संसद ले बा बोलबाला,
झूठ के पहाड़ा पर देस बढल जाता,
कबले सुनल जाई झुठकी कहानी।
पीतर के गगरी पर सोना के पानी।।

- संजय मिश्र'संजय'

हिया दहकाय गइल ना

पिया पीर देके अचके पराय गइल
हिया दहकाय गइल ना।
सिरे परल बा रोपनियाँ
नीक लागे ना चननियाँ
पिया सावन मे मन तरसाय गइल
हिया दहकाय गइल ना।
कसहूँ पार हो रोपनियाँ
कइसे निबही सोहनियाँ
पिया असरा के दीयरी बुताय गइल
हिया दहकाय गइल ना।
परल झुलुवा चारी ओर
मनवा छछनेला हिलोर
पिया आल्हर जियरा के जराय गइल
हिया दहकाय गइल ना।

- जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

संपादक : (भोजपुरी साहित्य सरिता)
कार्यकारी संपादक : (भोजपुरी पंचायत)

बेटी बचाई आ बेटी पढाई

माई के जिनिगी के साँस हई बेटी,
बिपति में अन्हरो के आस हई बेटी,
बेटी के रउरा संस्कार सिखलाईं,
बेटी बचाईं आ बेटी पढ़ाईं।।

एहीसे घर के धड़कन होली बेटी,
होखे नसीब उहे जनमेली बेटी,
बेटी से आपन सब सपना सजाईं,
बेटी बचाईं आ बेटी पढ़ाईं।।

ममता के साँचो मूरत होली बेटी,
साँचो के सबसे खूबसूरत होली बेटी,
बेटिये बहिन होली बेटिये ह माई,
बेटी बचाईं आ बेटी पढ़ाईं।।

अँगना लगावल तुलसी होले बेटी,
मन्दिर का ऊपर कलसी होले बेटी,
बेटिये बहुरिया बनि घरवा सजाईं,
बेटी बचाईं आ बेटी पढ़ाईं।।

बेटिये तऽ मान बेटी सम्मान होले,
बेटिये सबका घरके जान प्रान होले,
रहे चाहे नइहर भा ससुरा में जाई,
बेटी बचाईं आ बेटी पढ़ाईं।।

ना बुझाइल कवन कसूर बा हमार,
हमरा के काहे देलऽ कोखिए में मार,
बेटीमार के समाज से करीं छटाई,
बेटी बचाईं आ बेटी पढ़ाईं।।

करीं ना बेटी पर बस एतने एहसान,
एकरा देहिया में डाल दीं तनकी परान,
एकरे से होई आगे खानदान के बड़ाई,
बेटी बचाईं आ बेटी पढ़ाईं।।

चारु ओर बेटा के होत गुणगान बा,
"गणेश" में बसल सभकर परान बा ,
इहे सम्मान अब बेटिओ के दियाई,
बेटी बचाई आ बेटी पढ़ाई।।

• गणेशनाथ तिवारी 'श्रीकरपुरी'

हबकाह

जीवन के बडकी भउजाइ जवन बिआह का दूसरके साल मुसमात हो गइल रही बहुत दिन से उनका के बोलावत रही।जीवनो बहुत दिन से सोचत रहस भउजाइ से भेंट करेला ।लेकिन संजोग ना बनत रहे। बिधवा बिआह के तमाम बिरोधो का बादो जीवन के बाबू सावित्री के बिआह दूर का रिश्तेदार जलेसर से क$ देले रहस।जलेसर अपना पुरनका गांव से कोसहन दूर पहाड़ का किनारे बसल एगो गांव में घर बना लेले रहस।जीवन का दूइए बरिस में अपना भउजी से बहुत लगाव हो गइल रहे ।एह से उनका अपना भउजी के देखे के मन करत रहे।

आठ साल पहिले के सब बात इयाद करत जीवन टमटम से शांतिपुर ला चललें ।गांव से दौलतपुर बस अड्डा अइलें।दौलतपुर से सकलडीहा खातिर बस मिलल। सकलडीहा से शांतिपुर जाए के रहे ।सकलडीहा ले बस से गइला का बाद उनका शांतिपुर खातिर कवनो सवारी ना मिलल।बेरा डुबे में एक घंटा ले बाकी रहे।कवनो सवारी ना मिलला कारण उ पैदले चल देलें।अनजान रास्ता में जाए के रहे एह से झटकल जात रहस।कुछ दूर गइला का बाद जंगल मिलल ।जंगल का किनारे एक आदमी खेत अगोरत रहे।उ अगोरनिहार से पूछलें "हइ रास्ता शांतिपुर चल जाइ भाई"? उ कहलें "हं हं बस जंगलवा पार करते बुझीं जे शांतिएपुर ह$"।

"किरिण लूक-झूक कर$ता जंगलवा में कवनो जनावर ना नू निकसे "?जीवन पूछलें

"कबो काल बाघ आ हाथी निकले लें स$,लेकिन कवनो नोकसान ना कर$स$ "।रखवार कहलें

जीवन मने-मने सोंचे लगलें "बाघवा हथिया एह लोग के चिन्हत होइहें स् एह से कुछ ना करत होइहें स्। बाकिर हम त् नाया बानी पता ना का होइ !! चिडई चांव-भांव लगइले रहली स$।बेरा डुब चलल रहे।अतने में हाथी का चिकरला के आवाज जीवन का कान में परल।उ लगलें दउरे दउरत-दउरत जंगल के पार क गइलें ।सामने गांव का घरन के दीया लउके लागल।उ दूनु हांथ जोड के भगवान के गोर लगलें।जान बचला खातिर भगवान के धन्यवादो देलें।

गांव का एगो लइका से पूछ उ अपना भउजी का घरे पहुँचले ।दुआर पर भउजी के देख, उ त् चिन्ह गइलें। लेकिन भउजी ना चिन्हली ।जब आपन नाव बतवलें तब उ चिन्हली।देवर के देख उनका खुशी के ठेकाना ना , जीवन के घर में बइठा समाचार पूछे लगली ।"पढाई-लिख होता नू "सावित्री पूछली।

हं भउजी एम बी बी एस के फाइनल परीक्षा देले बानी एक महिना बाद रीजल्ट निकली"-जीवन कहलें।

बहुत नीक अब त् डागडर ला डागडरे कनिया खोजे के पडी बुझाता ।

तनी देर हंसी मजाक कइला का बाद उ पुआ-पकवान बनावे में लाग गइली । सभ लोग एके साथे खाना

खाइल ।एकरा बाद बर-बिछवना भइल आ सभे सुत गइल।
ए माई हउ असोला में के थुतल बा ले? --गुड्डू पूछलें।
"आरे इ तहार जीवन चाचा हवें बसांव के" सावित्री कहली।
एह लोग के बात सुन जीवनो जाग गइलें।
भउजी इ लडिका???
ए बबुआ इहे नू एक जाना बारें ,राउर भतीजा ।
अच्छा ,ए बाबू आवऽ हेने ,एके संगे खेलल जाव-
घुघुआ माना
उपजे धाना ।
बबुआ खाए दूध भातवा
बिलइया चाटे पतवा।
पतवा उधियाइल जाय
बिलइया लाजाइल जाय।
बबुआ हाडी पतुकी फोडलस सम्हरिए बुढिया रे ॥
हें हें आउल एक बेल---
"ए बबुआ, खेलल-खेलावल छोड़ नेहा-धोआ लीं जलपान तइयार बा"सावित्री कहली।
"ठीक बा भउजी" कह उ बथानी कावर नहाए ला चल देलें।नहा-धोआ के सब लोग एके संगे जलपान कइल।
जलेसर जीवन के संगे ले गांव घूमे निकललें।जेने जाए लो ओनहीं सब लोग पूछे इ के हऽ हो ?जलेसर कहस"भाई हऽ डागडरी पढेला "।धीरे-धीरे संउसे गांव जीवन के जान गइल।गांवे के लोचन काका ओह लो के चाह पिआवेला अपना दुअरा बइठलें ताले हल्ला पडल "जा सुनीतवा के कुकुर हबक लेहलस"।

सब लोग दउरल ललन का घरे पहुंचल ,जीवनो गइलें।कुकुर बडी हबकाह रहे उ सुनीता का दहिना गोर का एडी से एक बीता उपर के गंभीराहे मांस नोच लेले रहे,खून तरा-तर बहत रहे।जीवन आपन बैग मंगवा के मरहमपट्टी करे लगलें ।उ सुनिता के रंग रूप देख मने मने मोहित हो गइलें ।मन में उनका बतासा फुटे लागल।जीवन का सुनीता के घाव ठीक करे के जिम्मा मिल गइल।रोगी आ रोग के देखल उनकर रोज के काम हो गइल।

सुनीता का चउदे गो सुई लेवे के रहे ।सरकारी अस्पताल उनका गांव से पांच कोस दूर रहे।सुनीता अतना दूर जास त् जास कइसे एह से उनका जाए खातिर बैलगाड़ी के बंदोबस्त भइल।एक दिन जंगल पार करत समय जीवन सुनीता से कहलन "तहार घाव त् अब दू-चार दिन में ठीक हो जाइ लेकिन हमार घाव त बुझाता जनम भर रह जाइ "।
"इ कइसन घाव तोहरा हो गइल बा ए डाक्टर बाबू बतइब कुछ "?सुनीता कहली ।
जीवन कहलें -"आज रहे द् दोसरा दिन बताएम "
"ना तोहे हमार कसम आजे बतावे के पडी "
"कहीं तूं खिसिया जइबू त् "
"ना खिसीआएम बोल$ ना पहिले "
"हमरा तोहरा से प्यार हो गइल बा "
"हमरो डाक्टर बाबू ,हमरा त् रात खां निने नइखे आवत ,करवट बदलत बिहान हो जाता,दिल बेचैन हो जाता,पानीयो के स्वाद फीका लाग$ता ,एकर दवाइ कवनो होखे त् द् " कह सुनीता जीवन के भर अकवाडी ध लेहली ।
गडीवान बैलन का ओर इशारा करत लागल कहे "अइ हट-हट सीधा चल$स$--इ का !
इ सुन सुनीता से जीवन अलग भइलें।

सुनीता के घाव ठीक हो चलल रहे ।एह लो के प्रेम-कहानी सब लोग का पता चल गइल रहे।एक दिन सुनीता के बाबू जलेसर से कहलें "हो जलेसर जीवन आ सुनीता के अगर बिआह क दिआव त कइसन रही ?"
"बहुत नीमन होइत बडा सुनर जोडी बइठित ,लेकिन एकरा खातिर जीवन का गांवे जाए के पडी "जलेसर कहलें।दूनु जाना पनरे दिन बाद जीवन का बाबू से भेंट करे जाए ला राय कइल।इ सब बात जीवन ढुका लाग के सुनत रहस ।

सांझ खां मइया का देवल का पिछुती जीवन आ सुनीता मिलल लो।अइसे त् मिले के त् कहीं ना कहीं रोजे मिले लो।ओह दिन तनी बेसी उत्साह से मिलल लो।जीवन सब बात बतइलें ।आ कहलें अब हमनी के मिलन होइबे करी, आव$ कसम खाइल जाव जे हमनी के गार्जियन अगर बिआह नाहियों करी तबो हमनी बिआह करबे करेम ,सांथे जिएम साथे मरेम।"
आ सुन$ सुनीता काल्ह हम सबेरहीं चल जाएम लेकिन वादा कर$तानी जे जल्दीए तोहरा के दुल्हनिया बना के

ले जाएम"एतना कह जीवन सुनीता के हाथ ध$ लेलें आ सुनीता आपन माथा उनका छाती से सटा सुसके लगली।दूनु आदमी कवनो दोसरे दुनिया मे खो गइल ।

बिहान भइला जीवन भारी मन से अपना गांव का ओर डेग बढवलें।सुनीता दूरे से आपन हांथ हिलवली ,जीवनो कनखी से देख मुस्कुरात ,चिन्हासी में मिलल रूमाल हाथ में लेले चल देलें।

सुनीता के बाबू ललन आ जलेसर जीवन का दुआर पर पहुँचल लोग,दुआ सलाम भइला का बाद जलेसर बात आगा बढवले "
धरमू काका इ हवें ललन आ अपना लइकी के बिआह जीवन से कइल चाह$तारें ,का कह$तानी रउआ ?"
"अच्छा पहिले जर-जलपान होखे ,रह गइल बात बिआह के त् लडिका सेयान हो गइल बा त् बिआह कइले जाइ, लोग के त् तांता लागल बा --हमरा किंहा करीं त् हमरा किंहा करीं ,देंखी कहां होता! "जीवन के बाबू कहलें ।
"उ त् ठीक बा काका लेकिन जीवन का इनकर लडकी पसन्द बा"जलेसर कहलें ।
देख$ जीवन त् अबहीं बारें ना उ आगा का पढाई ला चंडीगढ़ गइलें, दू बरिस के आउर पढ़ाई बा ।हमहू चाह$तानी जे उनकर बिआह जल्दीए क दीहीं ।
"इंहा के लइकी कहां ले पढल बिया "जीवन के बाबू पूछलें ?
"काका उ मैट्रिक पास हिय" जलेसर कहलें।
"ठीक बा हम एह पर सोचेम "जीवन के बाबू कहलें ।

जलेसर आ ललन अपना गांवे आ गइल लो ।एने सुनीता का शरीर में बदलाव हेखे लागल,एक दिन कय गो ले उल्टी भइल ।सुनीता के हालत देख परेमा काकी सुनीता का माई से कहली ए बछिया तहार बेटी त् पेट से बिया ।इ सुन उनकर हालत खराब,आंख का आगा अन्हरिया छा गइल । ललनो का जब इ बात पता चलल त् उ ठाढ़े गिर गइलें।धीरे-धीरे सारा गांव इ बात जान गइल।जलेसर ललन के बहुत समझइलें ,हम बानी तहरा बेटी का संगे अन्याय ना होखे देम।

एक दिन जलेसर जीवन का बाबू से सारा बात बतइलें ।जीवन के बाबू कहलें "उ हमार पतोह हो चुकल बिया ,अब उ हमरा घर के इज्जत बिया ।चल$ हम ओहके हम अपना घरे लेआवतानी "।सुनिता जीवन का घरे आ गइली ।जीवन का लगे चिट्ठी गइल लेकिन उ कवनो जबाब ना देलें।
हार पाछ के जीवन का लगे उनकर बाबू गइलें ।जीवन के बहुत समझइले "बबुआ कवनो बात ना खाता-नागा हो गइल त् चल$ समाजिक रीति-रिवाज का अनुसार बिआह कर दिआव।"
जीवन सुनीता से संबंध के नकारते रह गइलें ।आ अंत में कह देलें "बेसी दबाव देहेम त् गांव आ रउआ के छोड़ देवे पर मजबूर हो जाएम "।
"त् ठीक बा आज से तूं हमरा खातिर मर गइला समान बार$,ओह लइकि के परवस्ती हम करेम "अतना कह जीवन के बाबू चल देहलें।
कुछ दिन बाद सुनीता एगो लडिका के जनम देहली ।ओह लडिका के नाम रखाइल संघर्ष ।उ लडिको रहे एकदम चंपियन ।देखते-देखते डाक्टरी के पढाई पुरा कइके संघर्ष दौलतपुर सरकारी अस्पताल में नौकरी करें लगलें।

एकदिन संघर्ष अपना गांवे बसांव जात रहस ।एक जगे आदमी के भिड देख गाडी रोक पूछलें "का भइल बा जी ,काहेला अतना भिड लगइले बानी लोगन ?
"ए डाक साहेब हइ एक जाना बूढ़ पैदले रउआ गांवे चलल जात रहलें हं गरमी का मारे बेहोश हो के गिर गइलें हं ,तनी लिअवले जाईं ,कवनो दवाई होखे त् दे दीं,बहुत मजबूर बुझातारें "भिड में से एक आदमी कहलस ।
संघर्ष उनका के गाडी में बइठा ग्लुकोज घोर के पिअइलें आ पूछलें "बसांव केकरा लगे जाए के बा ?"
उ बोले के चहलें ताले खोंखी उठलआ कुछ ना बोल सकलें ।खोंखत लह तांगर हो गइलें ।संघर्ष अपना दुआर पर पहुंच गइल रहस।जीवन के हालत बिगड़े लागल रहे ,उनका के उतार कुर्सी पर बइठा प्रेसर देखे लगलें ।आ माई के गद्दे कइ चाह बनावे ला कहलें ।जीवन आंख मुलकावे लागल रहस।सुनीता चाह के ट्रे हाथ में लेले कुरसी पर बइठल जीवन के एके-टके निहारते रह गइली।
"माई ए माई का भईल" संघर्ष कहलें।
"इ बयमान तहरा कहां मिलल ह$"

सुनीता कहली?

अतने में सुनीता का ओर देख जीवन कर जोडले आ उनकर गरदन एक ओर झुक गइल ।ई देख सुनीता का हाथ से ट्रे गिर गइल आ फफक-फफक के रोए लगली ।

"जा बयमान सब करम के पहुँचा, मिलबो कइल$ त एको टुम बातो ना कइल$" कह आंख से लोर के धार बहे लागल।बाद में संघर्ष के सब बात बतवली ।जीवन के अंतिम संस्कार संघर्ष का हाथे भइल। सुनीता बीन बिआहल बिधवा हो गइली ।

- दिलीप पैनाली

दूध

मानीं एहसान दूध के,
दे ना पाइब दाम दूध के,

कबो पुछ लेहल करी ,
का रहे अरमान दूध के,

जवानी असही आइल ना,
झुल गइल चाम दूध के,

डेग बिचीलल राउर तबो,
होत देखीं बदनाम दूध के,

राउर ना जमाना के दोष,
पुछ नइखे पुरान दूध के,

नाज करे दुनिया जे पर,
बुलेट ओ प्रणाम दूध के ।।

- अमरेन्दर सिंह "बुलेट"

पानी खतरा निसान पर बाटे

पानी खतरा निसान पर बाटे।
भारी आफत सिवान पर बाटे।
गोड धरती पर टिक ना पावल अबे,
चाह बसला के चान पर बाटे।
मौज बा सेठ, साहेब, नेता के,
सगरो सांसत किसान पर बाटे।
बेईमानी गतर गतर भरि के,
देत पहरा ईमान पर बाटे।
सांच बोल$ त सोच ल$ 'संजय'
आजु संकट परान पर बाटे।

- संजय मिश्र'संजय'

जिनिगिया

झूठमूठ के ई सगरो सिंगार लागे।
केनहो तकले जिनिगिया बेकार लागे।
केहू दाही, गवाही भेंटाते न बा।
सगरो खल के बा भूखिया ओराते न बा।
कटले जिनगी के फिकिर कटाते न बा।
के फिकिरिया हरी कुछ बुझाते न बा।
जेकर असरा, उहे हतियार लागे।

ना जे कइसन घड़ी आजु आइल बा ई?
लिखले बिधना कि कइसे लिखाइल बा ई?
भीखि मांगल कहल जाला बाउर हवे।
बाकी भूखिया पर भीखिए अम्हाउर हवे।
भीखियो मंगले केहू ना देनिहार लागे।

केहू कोलकाता, मुम्बई भा दिल्ली रही।
कन्याकुँअरी, कश्मीर चाहें चेन्नई रही।
हरियाणा, पंजाब, सूरत, केरल गइल।
ऊ कमाए बदे जा, बेफेरल भइल।
हुलुकावे सभे जिनगी भार लागे।

छोड़ि देस ऊ बिदेसन में जालें भले।
केतनो मेहनत कठिन क कमालें भले।
सबकी नजरी में हरदम ऊ खलबो करें।
भलहीं साँसत में जिनगी ऊ पलबो करें।
केतनो तोपें गड़हवा उघार लागे।

सगरो घूमिघाम आके ऊ ठावहीं गिरें।
चाहें दहिने गिरें, चाहें बाँवहीं गिरें।
"पंकज" कींच, पाँक गँउआ बहार लागे।
ना त, चारू ओरिया तकले अन्हार लागे।

रमाशंकर द्विवेदी "पंकज"

हमरा कटे नाहीं

बाबू के प्यार बिनु माई के दुलार-
हमरा कटे नाहीं,
भइल बा जिनिगी पहाड़-
हमरा कटे नाहीं!
बाबू आकाश माई ममता सागर,
बीना दुलार नाही होबे उजियागर,
बिनु उनके जग बा अन्हार,
हमरा कटे नाहीं!
भइल बा जिनिगी पहाड़,
हमरा कटे नाहीं!
नान्हे से माई मोहे अँचरा ओढ़वली,
जाड़ अउर गरमी से हमके बँचवली,
भोर होते दीहली बिसार,
हमरा कटे नाहीं!
भइल बा जिनिगी पहाड़,
हमरा कटे नहीं!
रतिया के राति माई हमके जोगवली,
गूह-मूत दिल सबही के दिल से लगवली,
आजु माई भइल कतवार,
हमरा हमरा कटे नाहीं!
"ध्यानी" करेलें उपहास,
हमरा कटे नाहीं!

- **राम ध्यान यादव**

(मंच पर धीरे-धीरे स्पॉट लाईट देहल जाता। स्पॉट लाईट हम सूत्रधार बोल रहल बारें।**)**

सुत्रधारः नमस्कार, हम समाज बानी। उ समाज, जे रउआ से मिलके बनल बा। जहाँ रउआ रहिले बलुक हम ई कहीं कि रउआ हमरा हिसाब से रहिले। हमरा हिसाब से बेवहार करिले। रउआ रउआन चिन्ता करीं ना करीं बाकी हमार चिन्ता रउआ के हर पल-हर घड़ी सतावत रबाला। रउआ हमरा से अलग एकदम ना होखे के चाबानी.....भले ही ओकरा खातिर कुछ भी झेले के पड़ो.....पुरातन काल से ही ई अवधारणा चलल आ रहल बा आ जे भी एह अवधारणा से बाहर जाऐ के कोशिश करेला ओकरा के रउआ ख़ुदे सबक सिखा दिहीले। हमरा कुछ करे की जरूरते ना पड़ेला। रउआ हमरा खुशी खातिर आपन सपना, आपन अपना.....उनकर खुशी ईहाँ तक की, उनकरो सपना के रौंदे हम रउआ एक क्षण के भी देर ना करिले।हालांकि कोई हमसे ना पूछेला कि हम का चाहिले। हम कवना बात से खुश होखिले आ कवना बात से हमरा हृदय के परखच्चा उड़ जाला। इतिहास गवाह बा कि जब-जब कवनो कुरिति के दूर कइल गइल बा तब-तब हम खुश भइल बानी आ ओकरा परिणाम स्वरूप विकसित भइल बानी। हालांकि समाज हम परिवर्तन कइल, ओकरा दोष के खिलाफ आवाज उठावल कवनो आसान

बात नइखे, ऐकरा खातिर क्रांतिकारी विचार धारा आ मजबूत हृदय के जरूरत होला। एक समय रबा जब सती प्रथा अपना चरम पर रबा। रउआ के का बताईं एक-एक सती के साथे हम सौ-सौ बार जड़त रहलं। चिखत रहलं- चिल्लात रहलं बाकी केहू के सुनाईए कहाँ देवेला हमरा रोए के आवाज.....कुछ कायर लोगन के सुनाईयो जाला तबो ओ लोग हम हिम्मते ना होखे कि उ ओकर विरोध करें। बाकी ई भूमि वीर-विहिन नइखे। राजा राम मोहन राय एह प्रथा के हटाके ही दम लेहलें। रउआ के बता नइखीं सकत कि ओह दिन हम केतना खुश रहलं। आज भी हमरा में बहुत कमी बा, बाकी शायद अब कोई राजा राम नइखेही रह गइल। चलीं, हम रउआसे ही एगो सवाल पूछत बानी, का प्रेम कइल गलत बा ? ना नू.....फिर रउआ लोग के ई बात पचेला काबा ना ? काबा रउआ राधा-कृष्ण के गुण गावत थाकिले ना...बाकी अगर कोई उनके जइसन प्रेम कर बैठे त का ना करिले रउआ ? समाज से बहिष्कार आ जान से मारल -इबा जड़ मानसिकता कब बदली, कब अंकुरित हो पाई प्रेम के बींज अगर हमरा के विकसित देखे के चाहत बानी त हमरा के खुश राखी...। बाकी हम जानत बानी, होई उबा जवन रउआ चाहत बानी, हमरा भाषण देला से कुछ नइखे होखे वाला। त काबा ना हम चुप-चाप सब कुछ देखत रहलं आ झेलत रहलं जइसे सदियन से होखत आ रहल बा,, सदियन से .....

दृश्य- 1

(एगो पंचायत के दृश्य बा। गाँव के चौपाल पर लोगन के जमावड़ा बा। पंचायत के सामने एगो प्रेमी-युगल के पेश कइल गइल बा।)

सरपंचः- गाँव के सब लोग आ गइलें ? (चारो तरफ देखकर..) ठीक बा, आज के पंचायत के कार्यक्रम शुरू कइल जाए।

पहिला पंचः-गाँव के सभे लोग के पहिले भी कई बार बतावल जा चुका बा आ आज एक बार फेर बतावल जाता कि हमनी के समाज में अलग जाति के लोगों से शादी का कवनो रिवाज नइखे। जवन तरीका बा बड़-बुजुर्ग बनवले बा ओही के पालन सदियन से होत आ रहल बा आ आगे भी होत रहल।

दूसर पंचः- आ हँ.....। जे भी एह बेवस्था से बाहर जाऐ के कोशिश करी ओकरा के हमनी के पंचायत कठोर सज़ा सुनाई।

सरपंच :- रउआ सब लोगों के चेतावनी देल जा रहल बा आ खासकर युवा पीढ़ी से कि अगर उनका समाज में रहे के बा त समाज के द्वारा बनावल गइल नियम के हिसाब से ही चले के होई। अब ओह पागल लड़िका के बोलावल जाव।

(कुछ लोग एगो युवक के पकड़के लावत बा, ओकरा पीछे-पीछे एगो लड़की भी बा।)

पहिला पंच :- देखीं, रामधरोहर के तेजस्वी सुपुत्र के, ई अपना माई-बाप के साथ-साथ हमनी के गाँव-समाज के नाक कटवावे के कोई कसर नइखे छोड़ले।

सरपंचः- हँ रे लड़िका, का नाम बा तोर ?

गोपालः- (सहमते हुए।) गोपाल।

सरपंच :- (कड़क आवाज हम) लड़की तोर का नाम?

लड़की :- तुलसी।

दूसरा पंचः- देखीं रउआ लोग, शर्म त जइसे घोर के पी गइल बारन स। दूनों लूका-छुपाके शादी करके गाँव से भागत रहे। उ त भला होखे चौकिदार के जे इनका के धर दबोचलक।

पंडितः- राम-राम! घोर कलजुग.....सत्यानाश!! एगो हिन्दु के उच्च जाति के लड़िका अछूत के बेटी से बियाह कर लेहलस...!! प्रभु हमरा के आन्हर बना देस....एह कलजुग में घोर पापियन के देखे से पहिले ...अांन्हर बना दें। धर्म के विनाश हो रहल बा।

सरपंचः- पंडित जी, रउआ चिन्ता मत करीं अइसन पापियन के नाश खातिर प्रभु खुद अवतार लेवे लें आ हो सकता बा आज प्रभु हम सबके बीच ही हों। हं त लड़िका का नाम बतवले?

गोपालः- गोपाल।

सरपंचः- हँ हँ गोपाल, तहरा अपना सफाई में कुछ कहे के बा त कह दे दूबारा मौका ना मिली।

पहिला पंचः हँ हँ बोल।

गोपालः- इहे कहे के बा कि हमनी कोनो गलती नइखी स कइले।

दूसरा पंचः- गलती नइखी कइले!! ना ना तु त बड़ा पूण्य के काम कइले बारऽ।

(खीस में लगे जाए के कोशिश करत बा।)

सरपंचः- रूकऽ! अभी एक मौका दऽ। पहिले एकरा बाप से पुछऽ।

पहिला पंचः- अरे राम धरोहर! तु अइसन नीच पूत्र के जन्म काहे देले?

रामधरोहरः- मालिक, एमें हमार कवनो गलती नइखे, हमरा जदि पता रहित कि कुलदागी बा त बचपने में हम ही नट्टी टीप देले रहती। एक बार एकरा के मौका दिहल जाए सरकार।

पहिला पंचः- मौका के बात बाद में बाकी गलती तोर ई बा कि तु एकरा के संस्कार ना दे सकले, समाज के रिती-रिवाज सीखा ना सकले।

रामधरोहरः- सीखवले रही सरकार, बाकी ई नालायक हमरा सब संस्कारो के माट्टी में मिला देलस

(कहते-कहते रोऐ लागत बा।)

गोपालः- बाबूजी, हमनी के कुछो गलत नइखी सऽ कइले।

रामधरोहरः- चूप्प!! गलत नइखी सऽ कइले..... नीच!!

(जोर से रोए लागत बा।)

सरपंचः- ई रोआई-धोआई बंद करऽ। बच्चा के सम्भारे त सकले ना, चलल बारें घरीयार के आँसू बहावे। रोशन ई तोर इकलौती बेटी हिय नू।

रोशनः- हाँ सरकार।

सरपंचः- आ तूहू एकरा के सम्भार ना सकले। तू एतना छूट कैसे दे देहले।

रोशनः- सरकार, गलती हो गइल। काम-धंधे में एतना व्यस्त रहनी कि ध्याने ना आइल कि बच्ची बड़ हो गइल बिया।

सरपंचः- बड़ होके ही त ई नीचता दिखवले बा। पंड़ितजी रउआ का कहत बानीं।

पंड़ितः- सरपंच जी हम त इहे कहत बानी कि ई अधम जान-बूझके एगो उच्च जाति के लड़की के धर्म भ्रष्ट करे खातिर आपन बेटी छोड़ रखले बा। ना त भला अइसन कभी ना देखले ना सुनले बानी कि बच्ची बड़ हो गइल आ बाप के पते ना चलल।

पहिला पंचः- पंडितजी के बात एकदम सही बा। (सभे हामी भरते बा।)

सरपंचः- एक मिनट रूकऽ भाई! तू लोग शादी कहाँ कइलऽ।

गोपालः- मंदिर में।

दूसरा पंचः- बाकी लड़की त अछूत जाति के बिया। ई मंदिर में घुसलक कईसे। इ त एगो आउर अपराध बा।

गोपालः- जी ना, भगवान के पास सब एक बा।

पंडितः- (बात काटत) हँ.....हँ जइसे तू कह देबऽ आ सब मान जाई। नादान लड़िका अछूत, अछूत ही रहेला।

गोपालः- काहे, अछूत, अछूत काहे बा?

पंडितः- (खीस में) काहेकि हम कह रहल बानी।

गोपालः- (बात काटत) रउरा कहला से का होई, रउआ भगवान के सेवक बानी भगवान ना।

पंडितः- देखनी.....देखनी नू रउआ सब! नीचता के कवनो त सीमा होत होई नू? ब्राहमण देवता के भी गाली। सर्वनाश होई तोर।

गोपालः- हमनी कवनो पापकर्म नइखी स कइले। हं, जवन हमरा सही लागाल उहे कइले बानी।

पहिला पंचः- कवनो खेद नइखे तहरा अपना करनी पर।

गोपालः- खेद कइसन? हम सब पहिले इंसान बानी स, ऊँच या नीच बाद में।

सरपंचः- तहरा अभी दुनिया के कौनों ज्ञान नइखे लड़िका, तभी तु अइसन बात कर रहल बारऽ।

(गोपाल बोले के कोशिश करता बा बाकी ओकरा के चुप करावत)

चुप!! अब पंचायत अपना फैसला सुनाई। गाँव वालन, रउआ सबके पूरे स्थिति के ज्ञान हो चुकल बा। रामधरोहर सिंह के बेटा आ रोशन बैठा के बेटी नादानी में आके बिआह कर लेले बा पंचायत, गाँव-समाज के नियम कानून के हिसाब से आ हमनी के धर्म के रक्षा खातिर एह बिआह के नकारता बानी सऽ आ एह बिआह के तूड़े के आदेश दियाता। रामधरोहर दुबारा कवनो योग्य कन्या से गोपाल के बिआह कराए आ रोशन भी अपने जाति के कवनो लड़िका से अपना बेटी के शादी करवाए। अइसन ना कइला पर आ पंचायत के फैसला के खिलाफ गईला पर रामधरोहर के हुक्का पानी बंद करके जात से बाहर कऽ दिहल जाई आ रोशन पर कड़ा कार्यवाही करत गांव से बाहर कऽ दियाई।

गोपालः- एक मिनट सरपंच जी हमके राउर ई फैसला मंजूर नइखे हम तुलसी से बिआह कइले बानी आ बिआह कवनो खेल नइखे, जे जब मर्जी रद्द कर दिहल जाए। और त और, स्वयं भगवान शिव हमनी के बिआह के साक्षी बारें।

पंडितः- ई कइसन बिआह बा, उच्च जाति के लड़िका-अछूत के लड़की .....उहो मंदिर में।

गोपालः- पंडित जी, जब भगवान नइखन रोकत ज फेर इंसान काहे रोकल चाहत बा।

पंडितः- काहेकि भगवानो इंसान के आ उहो खाली हमनी जैसे ब्राहमण के ई अधिकार दे रखले बारें कि कुछ भी अधर्म न हो पाए। हमनी धर्म के रक्षा हेतु ही जन्म लेले बानी।

सरपंचः- पंडित जी, व्यर्थ के बात में समय नष्ट कइला से कवनो फायदा नइखे। पंचायत आपन फैसला सूना चूकल बा आ ई आखिरी बा।

गोपालः- बाकी हम एह पंचायत के नइखी मानता जहाँ इंसानियत ना होखे।

पहिला पंचः- नादान लड़िका अभी तू पंचायत के ताकत के नइखऽ जानत। रामधरोहर, समझावत काहे नइखऽ।

रामधरोहरः- गोपाल, पंचायत जइसन कहत बा ओइसन कर ले, हमनी के समाज के हिसाब से ही चलेके पड़ेला।

गोपालः- बाबूजी, रउआ चली पंचायत आ समाज के हिसाब से, हम सही का पक्ष लेम.....समाज के ना।

दूसरा पंचः- ज्यादा बोलला से इंसान समझदार ना हो जाला। (लड़की के तरफ देखत) ओ रोशन के बेटी, तू समझ आ समझाव एकरा के, कि भलाई एही में बा कि पंचायत के बात मानल जाए आ जा के कवनो आउर से कर ले बियाह।

तुलसीः- माफी चाहेम, पहिले ई बताईं कि रउरा बहिन के कएगो बयिह भइल बा?

सरपंचः- ए लड़की जबान सम्हार ना त जान से हाथ धोए के पड़ी, तोरा पूरा भर के सजा भोगे के पड़ी।

दोसर पंचः- जवन पूछनी ह तवन बताव?

तुलसीः- हमार बियाह गोपाल के साथ हो गइल बा आ हम अलग ना होखेम।

पंडितः- देखलऽ सरपंच जी अब इहो दिन आ गइल कि एगो अछूत के लड़की पंचायत के सामने अइसे बोली..... राम राम राम!!

सरपंचः- (चुप होखे के इशारा करत) देख लड़की मरद के सभा में तोरा बोले के ना चाही। बाकी जब बोलिए लेले बारे त बोल कि तोरा परिवार चाही या गोपाल।

तुलसीः- परिवार त त्याग देले बा अब त बस गोपाल के सहारा बा।

सरपंचः- त ठीक बा इनकरा बात से इहे साबित भइल कि इनका पंचायत के फैसला मंजूर नइखे। एहिसे पंचायत समाज के रक्षा खातिर कठोर कदम उठावे पर मजबूर बा। (पंच के इशारा करता बा) आगे की कार्यवाही कइल जाए।

(पंच लोग के इशारा करत बा। उहां बइठल सभ लोग में कानाफुसी होखे लागत बा। कुछ लोग गोपाल-तुलसी को पकड़ के ले जाते बारें। दूनो परिवार के रोऐ के आवाज, विंग्स से गोपाल-तुलसी के चीखे के आवाज।)

(बांसुरी की करूण धून के साथ धीरे-धीरे मंच पर अंधेरा)

---**मं**च पर अन्हार--- **शेष भाग अगिला अंक में .....**

लव कान्त सिंह

केकरा से कहीं हम

केकरा से कहीं हम
केकरा से कहीं हम ,मनवाँ के बात ,
हो नयनवाँ बरसे ला ।
भइल मनवाँ बेहाल हो ,
नयनवाँ बरसे ला ।
बरसे अंँसुअन के धार ,
हो नयनवाँ बरसे ला ।

बड़ा रे लगनिया से ,नेहिया लगवलू ,
प्यार का कहाला ,हमसे कइके बतवलू ,
दिलवा हमार तूड़िके ,
बड़ी छछनवलू ,
हो नयनवाँ बरसे ला ,
बरसे अँसुअन के धार ,
हो नयनवाँ बरसे ला ।

छोटो-मोटो बतियन के हमसे बतवलू ,
रहे जवन बीतल ,तू त कुछो ना छुपवलू ,
का जाने का भइल ,
हमके भुलवलू ,
हो नयनवाँ बरसे ला ,
बरसे अँसुअन के धार ,
हो नयनवाँ बरसे ला ।

रहे ना उमेद , हमरा हे तरी भुलइबू ,
बीचे राह हमरा के छोड़ी चली जइबू ,
चैना हमार छीन के ,
लिहलू परान ,
हो नयनवाँ बरसे ला ,
बरसे अँसुअन के धार ,
हो नयनवाँ बरसे ला ।

दिलवा हमार तूड़िके ,निंदिया भगवलू ,
हर घड़ी हर पल , हमके रोववलू ,
भइल का गुनाह हमसे ,
कबो ना बतवलू ,
हो नयनवाँ बरसे ला ,
बरसे अँसुअन के धार ,
हो नयनवाँ बरसे ला ,
हो नयनवाँ बरसे ला ,
हो नयनवाँ बरसे ला .....

- संजय सिंह

थथमल रहे- गजल

थथमल रहे जे जहाँ, रफ्तार बदले लागल
तम के कारा तोड़ के बिचार बदले लागल

निरनय लेबे लागल, रोआब नइखे सहे के
खाके अब साग रोटी, संसार बदले लागल

पत्थर के चोट सहके अनाज मोट खइलस
अन्हार के मात देके, उजियार बदले लागल

आदमी के आदमी ना श्वान समझल जाला
दुआर के ऊ त्याग के, दुआर बदले लागल

गीध के दृष्टि उन्हुकर तिके के नइखे गइल
जिनगी सँवारे खातिर , फुहार बदले लागल |

- विद्या शंकर "विद्यार्थी"

कसक

मनवा में बा कसक तऽ अश्क बहबे नू करी
कतनो छुपइबु तू बतिया, अखियाँ तऽ कहबे नू करी

दुनिया के खुशी में हो के शामिल तू हँसत बारू
मनवा रोवत बा तोहार तबो ना तू कहत बारू

भीड़ में मुड़के बार-बार देखबु तऽ लोगवा बुझबे नू करी
कतनो छुपइबु तू बतिया, अँखियाँ त कहबे नू करी

साँस छूटल बा तोहार कबके तबो तू जिअत बारू
फाटल पीरीतिया के कहीं अउर तू सिअत बारू

जबरन के इ मेल तऽ बेमेल लगबे नू करी
कतनो छुपइबु तू बतिया, अँखिया तऽ कहबे नू करी

मनवा में बा कसक त अश्क बहबे नू करी..

- विकास कुमार

ढिबरी जेवन जरेला

दियरखा पर ढिबरी जेवन जरेला
अउरी करिया-करिया लप-लप लहरेला

छितरा जाला तन-मन में ऊ।
काजर बनि के आँखि रिगावे

करिखा बनि के मुँह बिरावे
छितरा जाला तन-मन में ऊ।

कि सगरी जिनगी आगि लगवनी
आँखि के जोरि के चूल्हा जरवनी

छितरा जाला तन-मन में ऊ।
अब बिरावे देंहि हमके तऽ का

हाथ उठा के रोवे-गावे तऽ का
छितरा जाला तन-मन में ऊ।

देखऽ दियरखा ऊहें परल बा
ढिबरी जाने कब से जरल बा
छितरा जाला तन-मन में ऊ।

राजीव उपाध्याय
संपादक: मैना

गज़ल

जबसे बगिया के गुलाब बरबाद हो गइल।
गइल रेगनी के खूबी आबाद हो गइल। १

दिनों दिन छितराइल जाए हेहर लेखा
बबूर जटही से एकरा विवाद हो गइल। २

ओह बगिया में भूल से भी फूल ना जाए
जे भी गइल रेगनी के सवाद हो गइल। ३

हँसत रेगनी के देखि दुखित जीव सभ बाड़े
सुघर-साघर ए बगइचा के दाद हो गइल। ४

कके खुसुर-फुसुर फूल बस टुपुना चुआवस
बगिया गइल के रेगनी मियाद हो गइल। ५

भँवरा,तितली से रो-रो लगावस ऊ गोहार
थाकि गइलन खतम सभ फरियाद हो गइल।६

रेगनी लीले लागल सभ अब फूल फुलवारी
सभे घुकुड़ल बा रेगनी के आजाद हो गइल।७

- विमल कुमार

भोजपुरी गजल- सजन धीरे-धीरे

कुम्हलाइल बा देहिया सजन पोरे-पोर
आके मरहम लगा जा सजन थोरे-थोर

देखले बानी हम जब से हेराइल बा होश
हिया चिहुँकेला जब हम उठी ले भोरे-भोर

हो गइल बा तब से ई लब मोर खामोश
लाल से दूधिया अइसन भइल ठोर-ठोर

मानवा नाचेला सोंची कब लेत आगोश
देख बदरी के वनवा मे नाचे मोरे-मोर

लालसा लाल के लागल बा द तू पूरा
नेहिया अइसे तू जोड़ दिखे डोरे-डोर

लाल बिहारी मनाई कतनों माने ना दिल
झुलसे विरहा में हमरो बदन पोरे-पोर

- लाल बिहारी लाल

ताना

रेलगाड़ी क डिब्बा खचाखच भरल रहे, कतहीं सींक सँसरे के जगह ना रहे। बस तनि सावँग रहे त मलेटरी डिब्बा में , हम ओही में जात रहीं। फौजी के पहचान पत्र निकाल के हाथ में पकडले रहीं आ गेट पो लाइन में लागल रहीं, गाड़ी में चढ़े खातिर। हमरा पाछे एगो मरद मेहरारू चार साल के लइकी के गोदी में लेके खाड़ रहलें।

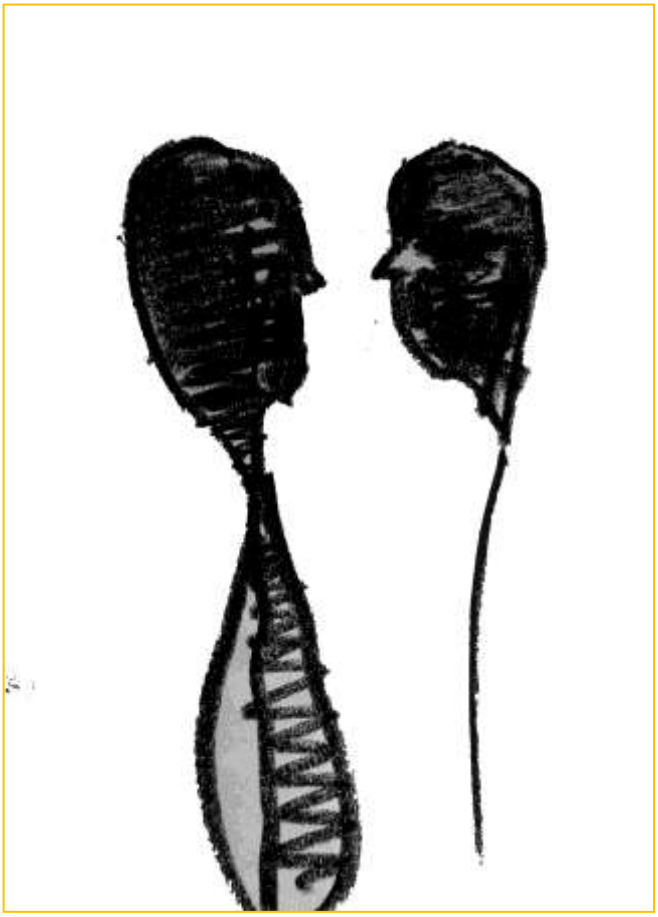

"कवनो सिविलियन एह डिब्बा में ना चढ़ी ई मलेटरी डिब्बा ह खाली मलेटरी के आदमी आ ओकर परिवार खाति बा।" "ए भइया, बड़ी परेशानी में बानीं जा, तनी हमनिओं प दया क दीहऽ।" हम बोलनी " ठीक बा तू लोग कुछ मत बोलिह हम सभ सम्हार लेब।" ई लोग हमरा साथे बा कहिके हम अपना परिवार के संगे ओहू लो के गाड़ी में बइठा दिहनीं । भीड़ बहुते रहे एह से खाली औरतन के सीट पो बइठे के इजाजत रहे। आदमी लो या तऽ नीचे बइठल रहन भा समान रखे वाला सीट पो। हमरा एह दरियादिली से मलकिनी अनजान रही एह से पूछ देली "तू कइसे आ गइलिस रे, तू त सिविलियन नु हइस?" साइद ऊ भोजपुरी भाखा ना जानत रहे ए से टुकुर-टुकुर मुँह ताकत रहि गइल, कुछ बोल ना पवलस। एतने में हम कहनी- "जाये द, बेचारी के पास छोट लइकी बिआ।" फिर मलकिनी कुछ ना बोललीं बाकी मने-मने बुदबुदात रही। अगल-बगल के मेहरारू जान गइलीसँ कि ऊ सिविलियन ह।फिर का? नाक भौं सुकुरावल शुरू भ गइल। दु घंटा के बाद ओकरा नन्हकी के पेशाब लागल तऽ गते से हुहँवे बइठा दिहलस आ बगल में रखल हमार कपड़ा के बैग उठाके ऊपर रख दिहलस।सभ पानी बैग सोख लिहलस।ओकर एह हरकत के एगो मेहरारू देखलस त हल्ला मचावे लागल। फिर हमार का हाल भइल होई ई अंदाज कइल जा सकेला। हम ओकरा से पूछनी- "आपका आदमी कहाँ है ? " त ओकर जबाब रहे- "तुम्हारे जैसा मेरा मरद औरतों का गुलाम नहीं है। वह उधर गेट पर बैठा है, नामर्द कहीं का।" जबाब सुनके हमरा कठेया मार गइल। अगिला स्टेशन पर ओकरा के उतार दिहल गइल बाकिर आज तक ओकर जबाब हमरा चित्त से ना उतरल।

कन्हैया प्रसाद "रसिक"

महंगा इयार(अमीर बॉयफ्रेंड)

बखोरन एगो अइसन लइका जवन देखे में बहुते मासूम, भोला-भाला लइका, भोजपुरिया गाँव बखोरनपुर में रहत रहे। माई-बाबू के एके लइका रहे। दुइगो बहिन रहली। बाबू मजदूरी क के घर चलावत रहलें ।

बखोरन पढ़े में बहुते तेज रहले। बाकिर गरीबी के कारण गाँव से बाहर जाये ना पावलें।10वीं पास कइला के बाद इंटर में एडमिशन खातिर बाउजी मजदूरी कइल पइसा एकाठा कके बखोरन के बनारस पढ़े के भेजले। इंटर में 79% नम्बर के साथे बखोरन पास भइले आ उनके बी. एच. यू में एडमिशन मिल गइल।

कालेज में बखोरन अलग थलग रहस ।नया रहले ए से केहू नया दोस्त ना बनल रहे।एक दिन घण्टी खाली रहे त ऊ जा के लाइब्रेरी में कुछ पढ़त रहले। कुछ लड़की लोग के टीम आइल । उहाँ उनके पढ़त देखि के एक जानी कहली कि- "ए सखी देखऽतारु केतना मासूम लइका बा खूबसूरतो बा।" दुसरकी कहली कि - "ह तोहरा वाला से त साँचो बढ़िया बा"।

एक दिन बखोरन के लाईब्रेरी में एगो लइकी से माथा टकरा गइल।ओह लड़की के नाम रहे 'इमरती' कुछ दिन बीतल बखोरन आ इमरती के एक दूसरे के जनले में। फिर का.... ऊ लोग प्यार में रम गइल, पढ़ाई काफी अच्छा होखे लागल दुनु के।

इमरती के सखी लोग कुछ अमीर रहे आ कुछ गरीब लेकिन जे गरीब रहे उनके इयार लोग अमीर रहे। खाली समय मे मौज-मस्ती अउरी डिस्को डांस एह लो के सवख रहे। अक्सर ई लो जाइल करे। बखोरन के ई कुल्हि बिल्कुल पसंद ना रहे एहि मारे मरती भी गइल छोड़ देहली। ई सब देख के उनके सखी लो के रास ना आइल अउरी इमरती के कान भरल चालू कर दिहल लो ।

एक जानी कहली कि-" हमार इयार त बहुत रुपिया आला हवे "त दुसरकी कहलसि कि-" हमरो के एगो अइसने इयार सेट करा द चाहे इनके भाई होखे त उनके सेट करा द भले चेहरा कइसनो होखे।"ओकरा साथ फिलिम ,पिज्जा ,पार्क , डिस्को के मजा लूटे के मिली..। ई बात सुन इमरती भी बखोरन के भुला गइली।आ महँगा इयार के चक्कर में आपन जिनगी खराब कर लिहली।

असल में उ जवन महँगा इयार के साथे रहत रहली, ऊ एक दिन उनकर ई हाल कर देलस कि ऊ केहू के आपन मुँह देखावे लायक ना रहली। लेकिन ई बात ऊ केहू से ना बतास, आ भीतर-भीतर आत्मग्लानि में घुटत रहस। कुछ दिन बाद इमरती के बदलल देख एक जानी कहली कि-"का बात बा हो इमरती ,ए घरी एतना उदास काहे रहतारू, कुछ बात बा का??"

बेचारी इमरती का कहस, कुछ कह ना पावली ,बाकिर आपन तकलीफ़ घुमा-फिरा के से तरे कहली--

#लूटि गइनी यारी में, महंँगाई के बेमारी में,
पिरितिया के झोंक दिहनी,ऐयासी के घोंसारी में,
नाहीं चैन पाइल जिया,तोहके सताई के पिया,
गिर गइनी भुइयाँ हो,नरक के दुआरी पे।।#

- **गणेशनाथ तिवारी 'श्रीकरपुरी'**

जिनिगी के खेल

जिनिगी के खेल बीतल , बुढारी जो आ गइल।
बुढारी उमिर में आइल, जाँगर हेरा गइल।।

जिनिगी के भोर बचपन माई के गोद भावे,
हुरदंगी रहल लड़कपन खेलिए के सूधि आवे।
खेलिए में दिन बीतल बचपन हेरा गइल।।1।।

उमिर के दुपहर में जवानी जो चकमकाइल,
निम्मन बाउर ना सूझे मंद आँखि चौंधियाइल।
अँखिया जो चौंधियाइल मतिए मरा गइल।। 2।।

अंतिम पड़ावे जिनिगी बुढापा के रोग लागल,
कुछऊ करे न पउल अब जाके सूधि जागल।
सुधिया जो तोहरो जागल अवसर हेरा गइल।।3।।

रोवला से अब का होई मउअति खड़ा बा आगे,
दुनियाँ न सँहे जाई लेल राम नाम साथे।
राम नाम जे लीहल साथे 'माया' पार बा भइल।।4।।

- **माया शर्मा**

माई

काहे केहू के केहू बढ़ाई,
आफत में जो दीही बिसराई।

पढ़ाके लिखाके राह धराके,
का पइली कहऽ आदमी बनाई।

उच्च पदवी पइलऽ जाई सहरिया,
रिस्ता-नाता सब गइलऽ भूलाई ।

नीक-नोहर खाके सुतऽ महलिया,
लूगरियो ला तरसस भउजाई।

नाद दोचारा दलान ढ़ह गइल
घरवो पर लागल बइठेे काई।

जागल-जागल बीतेेेला रतिया,
भइली जवान जहिया से जाई।

फाटल बेवाय गोरे तन प चिथरा,
कहऽ ना दुखड़ा केहसे सुनाईं।

जइहऽ बहरा कबो जे पैनाली,
भेज दीहऽ घरेे, मिली जदि भाई।

कह दीहऽ अन्न जल छूटी गइल बा,
अइहें ना जदि भेंटीं ना माई।

- **दिलीप पैनाली**

सांच सांचे होला

उगल आभास के अँजोरिया
मन में हमरा फरीछ भइल,
बडी़ दिन के बाद निकलल
मन में रहे जवन बात धइल।
देखि समाज के बिगड़ल रूप
मन करसी अस धधकेला,
साँच बात केहु सुने ना आजु
सुनते धड़ाक से बिगडेला।
जब बात के ना मिले जबाब
तब उमिर के देला खयाल,
बाकी साँच बात के आँच कइसन
बरदास ना करी उमिर के ढाल।
ठीक जटही के काँट जइसन
बिगड़ल आजु के समाज बा,
लपटा जस लपेटा जाला लोग
रेगनी अस मिजाज बा।
काटेले करेज पेट में समा के
ले लेले थाह भीरी सटियाके,
मुँह प मीठ बात करेले
पीठि प खूब गरियाके।
अइसने आजु के समाज बा
अइसने एकर सँवरल रूप,
छल कपट के ओढ़ले रजाई
झूठ फरेब अगरबत्ती धूप साँचे-साँच ।
कहसु कवि देवेन्दर साँच-साँचे होला
एकर रूप दरपन अस होला,
कबहीं ना बोलीं रउवा झूठ
जे बोले ओकर करीआ मुँह ।

देवेन्द्र कुमार राय

प्यार बतावल ना गईल

प्यार रहे उनके से
बाकिर जबान से
कबो कढावल ना गइल
दिन होखे भा रात
एक छन उनका याद बिनु
बितावल ना गइल

प्यार तS बहुते रहे
हमरा उनका से
बाकिर दुनिया का डरे
कबो समझावल ना गइल
भाव रहल हजारन एह दिल मे
बाकिर भावे में तोपा गइल
शब्दन में कबो बतावल ना गइल

जान जहान, धरती आसमान
सब उनके प लुटावे के रहे
बाकिर बात ई सब
उनका से ज़तावल ना गइल
आँखिन में मुस्की
दिल मे फटफटिया
देखते उनका चले
बाकिर एगो शब्द के बान
कबो हमरा से चलावल ना गइल

जानत रहनीं कि ऊहो
बाड़ी मोहाइल हमसे
बाकिर लाज सरम के
घूंघट हटावल भी ना गइल

- **दीपक सिंह**

सुकथ

अगिन सुकथ
अगिन जरावऽ काँटबन, हरगिज जरे न दूब।
फूही परी असाढ़ के, लुहचुह होई खूब।

जइसे मछुआ ए अगिन, फैलावे महँजाल।
जनबैरिन के जारि दऽ, लपट पसारि उत्ताल।

देव अमर मरता मनुख, दुनहुन के बल प्रान।
कर सकिले हमनीं करीं, अगिनी के आधान।

राति सुकथ
इक दिन फिन से ढल गइल, आइल साँवरि साँझ।
साफ सुनाता पाछु से, रतरानी के झाँझ।

झूलि रहल चारो अलँग, करिया गपस उहार।
तरई-जरी जमीन पऽ, नभपथ तार किनार।

मधिम साँस जड़ जीव जग, रूप बिचार अभाव।
सूतसि सभ सुख राति में, चोर हुँडार दुराव

सिल सुकथ
खुर घँसि के राकस मरे, धरती दुस्ट बिहून।
सिल जन के छाती बनऽ, हर मन भरे सुकून।

सिव पानी औसध अगन, धीरज बल प्रतिरोध।
अमित भाव सकती दरब, सिल के भीतर सोध।

बन तनमन सुबिचार सिल, सिल सत सिल आचार।
आवऽ सिल पोई हमन, सीखीं ई अभिचार।

मूसर सुकथ
खोइया भीतर दूध हो, रखले राम सहेज।
गोटा परते धान के, भइले काठ करेज।

गरुता पाइ कठोरता, परकिति के गुनमूल।
रँउदे-कूटे ढंग से, तब होखसि अनुकूल।

ए लोगे फिन से करऽ, मूसर के संधान।
बलभदर जेकरे बले, बनि गइले भगवान।

- दिनेश पाण्डेय

गाँव से पलायन

खांखर होत गाँव देखते मन माने के बिलकुल तैयार हो जाला की पलायन गाँव के नियति बन चुकल बा बिना कवनो बिबाद के । अगर देखल जाव त हर गाँव में पाँच-दसगो गो घर में ताला लटकल मिल जाई । ढ़हत ढिमलात घर, देहरी पर जामल घास, खर पतवार चिचिया-चिचिया के जइसे कहत होखे की ओकर केहू पुछनिहार नइखे । ऊ आदमी बिन भुतहा ठीहा के स्वरूप अख्तियार करे के लाचार बा । हमेशा से ही ओकर दशा अइसन टुअर-टापर वाला ना रहे । कबो इहो गुलज़ार रहे । एकरो दालान अँगना में ख़ुशी लसरात रहे, छिटाइल रहे जिनगी हर कोना में । पोस परानी से भरल पुरल एहवात वाला घर के आज ई मुसमात रूप काहें भेटा गइल,सोचे के मजबूर क देला । पलायन त भोजपुरिया समाज में पुरान समय से चलत आ रहल बा आ आगे भी जारी रही एमा कवनो संसय के गुंजाइस नइखे । कजरी में सभे सुनलहीं होखी कइसे मेहरारू अपना सवांग के बिछोह में रेलिया के कोसत बिया "बैरन रेलिया पियवा के ले ले ....." भा लोक गीत गायिका श्रद्धेय शारदा सिन्हा जी के गावल प्रसिद्ध गीत "ले ले अइहऽ हो पियवा सेनुरा बंगाल के" ई बतावता की पलायन तबो रहे । साहित्य आ लोक गीत त समाज के आइना ह ओहमा उहे बतावल जाला जवन समाज में घटित होला । भोजपुरिआ समाज परिवार के सईहारे आ ओकर जिनगी सहियारे के सँवारे खातिर पलायन करत रहे । कमा-धमा के परब तेव्हार भा बियाह शादी मरन-जीयन ब जरूर गाँव लौटत रहे । कमा के पइसा भेजल एगो अलिखित जरूरी नियम में सुमार रहे । लेकिन पिछला कुछ समय से इ देखे के मिलता की जे रोटी रोटी के जुगाड़ में गाँव छोड़लस ऊ धीरे-धीरे अपना गाँव पुरखन के ठीहा से नाता तोड़त गइल एह डर से कि नाता कायम रखला प कमाई में हिस्सा देवे के परी । आदमी परिवार मतलब खाली मेहरारू आ आपन बाल बच्चा के तब्बजो देवे लागल । ऊ गाँव से नाता तोड़ के शहर में आपन आशियाना बना लेहलस । पहिले आदमी कहहूँ रहे लेकिन कवनो मंगल काम भा मरन- जीयन के रस्म गाँवे में निभावल जा । लेकिन जइसे-जइसे समय बीतता गाँव से गइल लोग जहां बा ओहिजे से शादी बियाह आ अन्य कवनो मांगलिक काम ओहि जगहा से करे के रिवाज बनत चल जाता । ओहमे कुछे गिनल-चुनल हित-नात कुटुंब गोतिया पहुँच पावेलन । धीरे-धीरे ऊ अपना जर, हित, मीत से दूर होत चल गइल । कब ऊ अपना गाँव से कट के शहरी हो गइल उनके पते ना चलल । आज काल गाँव से शहर क ओर पलायन तेज़ी से बढ़त जाता । छोट लरिका नीक शिक्षा बदे जवनका रोजगार खातिर त बूढ़ पुरनिया चिकित्सा क नीक साधन उपलब्ध ना भइले खातिर शहर की ओर कूच क

गइलन मजबूरी में । शहर की ओर पलायन नावा बात थोरे बा ई त सदा से ही होत आवता बढ़त जन संख्या से कम होत खेत बधार रिहायसी जमीन, बुनियादी, सुविधा जइसे शिक्षा, चिकित्सा, बिजली, आदि में शहर क तुलना में कम नसीब बा गाँव में एकरा अलावा रार, डाह, मर, मोकदमा खराब सामाजिक ब्यवस्था के चलते शोषण और उत्पीड़न से तंग आ के बहुत लोग शहर कस्बा की ओर पलायन करे के मजबूर बा ।

महात्मा गांधी भी अपना सत्याग्रह आंदोलन के समय 'हिजरत'के जायज ठहरवले रहनी, हिजरत क मतलब होला अपना पुरखा, पुरनिया, क भीटा अपना मर्जी से छोड़ के दूसरा जगहा पर चल गइल । अइसन कमजोर आदमी जेकर अंदर बिरोध करे के क्षमता नइखे ना बौद्धिक रूप से ना शारीरिक रूप से । इज्जत से ओकर स्थाई निवास प रहल मुमकिन नइखे त ओकरा 'हिजरत' के जरूरत रहे आ ओके अपनावे क सलाह दियाव । हिंदी के जमीन से जुड़ल कथाकार मुंशी प्रेमचंद आपन प्रसिद्ध उपन्यास 'गोदान' में ९०-९५ बरिस पहिले ही गाँव से शहर क ओर पलायन के समस्या के उठवले रहनी । जवन आज हमनीके बतकूचन के बिषय बा ।

एक स्थान से छोड़ के दूसर स्थान प बसल आ आपन मुलभुत जरूरत के पूरा करके प्रयास के ही पलायन कहाला । लेकिन पलायन कई तरह के होला गाँव से कस्बा, गाँव से शहर, शहर से महानगर, आपन देश से बिदेश । हमनी के देश में गाँव से शहर की ओर पलायन के प्रवृति ज्यादा लउकेला, काहे ना लउकी काहें की शहर ओके रोजी रोजगार के नीक साधन, नीक शिक्षा, चिकित्सा के नीक साधन, आवास, बढ़िया सड़क, यातायात के नीक साधन उपलब्ध करावे के भरोसा देला । ई कुल सुविधा गाँव से शहर की ओर भागे के उकसावेला । पलायन रोके खातिर सबसे जरूरी तत्व बा भरस्टाचार मुक्त शासन ब्यवस्था, शिक्षा खातिर गाँव में सरकारी स्कुल त बड़ले बान स लेकिन ओहिजा बिद्यार्थी खाली खिचड़ी खाये खातिर जा तान स शिक्षा के नाम प ओहिजा कुछुवो भेंटात नइखे । भरस्टाचार आ भाई भतीजावाद के चलते अयोग्य शिक्षक के बहाली आवे वाली नस्ल के बर्बाद करत लउकता । एह अहम मसला प ढेर लोग आँख मुँदले बा, का पंचायत का प्रसासन । गाँव में जवनो सरकारी स्कीम लागू बाड़ीसँ ऊहो भ्रस्टाचार के भारी देवाल के नीचे दबाइल बाड़ीसँ। छोट-छोट बात प कपरफोरउल, लाठ-डाँड़ के झगड़ा अपने गोतिया-देयाद से, ई एगो बड़हन समस्या बा गाँव के । एहिमे अझुराइल रहेला हमार गाँव । डाह के चलते झूठ मुकदमा में फँसा देहल एक आम बात बा गाँव के परिवेश में, एकरा चलते दुनो पक्ष के समय के साथ-साथ समाजिक सद्भाव त बिगड़बे करेला आर्थिक बोझा भी झेले के मजबूर बा गाँव आपन, झूठी अहम के तुष्ट करे खातिर । एकरा चलते कर्जा लेवे के मजबूर हो जाला आदमी । कुछ दबंग लोग हमेशा अकुताइल रहेला अब्बर के सतावे खातिर। जब तक सहे जोग रहेला तबतक अब्बर सहेला ना त पलायन क जाला भा हत्या- आत्महत्या जइसन जघन्य कदम उठावे के मजबूर हो जाला ।

ई पलायन त कबो ना रुकी बाकी कम जरूर हो सकता जब प्रशासन के साथ साथ समाज के हर तबका साच मन से एह अहम मसला पर सोंची आ एकरा के रोके में लाग जाई । काम त मुश्किलें बा लेकिन कोशिश करे में कवनो दिक्कत ना होखे के चाहीं केहू के ।

- तारकेश्वर राय "तारक"

माई के लोर

लोर बहत रहेला
बिना कवनो बेरा - घरी के
कबो माटी भींजेला त कबो अँचरा
सिसकी टूटे ला ना जब चले लरी में ।

फोटो देवाले टंगल बा , फूल माला के साथे
कवनो में दोस्त लो त कवनो में टैंक बनूक के साथे
हँसत उनकर फोटो जिआ के हंँसावे
रोवावे ला बेसी ,
सोच के कि अब फेरु ऊ ना आवे ।

कुहुकत काया से
कबो छाती पीटेली त कबो धरती
बाकि , जिनगी त उनकर खुदे विपत से पिटाइल,
दरवाजा में राखल करिआ पेटी पर
ललना के नावों लिखल बा
बाकिर , करेजा से उनका खाली
बबुआ के नावँ ले ले
लोरे दरिआव बहल बा ।

कबो बोडर पर शेर लेखा गरजत रहस ऊ
अपने बनूक से केतना दुश्मन के मरले रहस ऊ
सेना के मेडल से कबो जोखइले
त कबो , जान जोखिम में डाल डाल
बाढ़ भूकंप में देसवासी बचइले ।

लोर बहत- बहत सूख जाला
देह कठुआ कठुआ ठिठुर जाला
अइसन बिपत के छेदत हवा देहे घुसल बा
मूहें बकारो ना निकले
सिसकी टूट-टूट , खाँसी बनल बा
पेड़ा जोहत - जोहत उमिर घटिआइल
साथे-साथे अपनो मऊअत के भीखों मंगाइल
एक बेरा उनका से फेरु " माई " सुने के तरसत
कनवा काहे उनकर बहिराइल
जीअस अब उहो त भला कवना भरोसे
जब जीए के इच्छा के दीआ बुताइल ।

• प्रभाष मिश्रा

एगो आसरा बा तोहसे

जब हाथ कंपकपाई
चेहरा मुरझाई
पीठ नवजाई
आंखि से लउकल बन हो जाइ
बइठला पर उठल ना जाई
नवल देहि के बकुली से भी चलल ना जाई
बतकही खाति केहू ना भेंटाई
हितई-नतई त के लोग के
बन जाएम खलिहा मूरति गोड़ लगाई
टूटल दाँत से खाइल ना जाई
डाक्टर भी मुँह पर सैकड़ो जाबी लगाई ;
तब
एह चोटन के चोट पर
बिना पिन्सिन बिना नोट पर
करकसा पतोह के खोट पर
घर में हमरे पर होत लोट-पोट पर
एगो आसरा रही -
उठे घरी पीठी पर लागल तहरा हाथ के
व्यस्त जिनगी में से निकलल
तहार कुछ समय हमरा साथ के
हमरा छोट बड़ गलतिओं पर ठंढ़ा रखले तहरा माथ के
आ सबसे बेसी , बबुआ तहरा मिठरस बात के ।

• प्रभाष मिश्रा

घर- परिवार

दादी-नानी, फूआ-चाची
दादा-बाबा, काका-चाचा
हित- नाता, घर -परिवार
छूट गइल सब
दुनिया के बाजार में।

प्रगति के नाम
नोट क बंडल मे घिरल
आत्मीयता से दूर
कंक्रीट के जंगल में बसत
जिनगी में
कहँवा पइब घर परिवार।

भूलके डगर आज
नगर में भटक गइल,
आधुनिकता के दौड़ मे
रिस्ता के सुख छोड़
अपनन से दूर
कहँवा पइब घर परिवार।

ना मिली केहू आपन
दुनिया के भीड़ मे,
सुख के बरगद
त ईहे परिवार ह।
सपनन के छोड़
अपनन मे लवट चल,
बहरा ना पइब धर -परिवार।

कुटूम्ब के अँखियन में
झाँक रहल असरा,
चैन के साँस मिली
खुशी के खजाना,
पा जइब जन्नत तू
माई के अँचरा में,
भूखो में सुख मिली
कुटुंब बीच अँगना में,
आव अब लौट चल
घर- परिवार।

• **कनक किशोर**

आपन माटी आपन थाती

अलगा हो के हम ना रहब
अलगे हमार अंदाज बा
हम हईं भोजपुरिया हमके
माई-भाषा पर नाज बा

कूटल- पीसल घर के दाना
छुँछहूँ मिली त खा लेहब
जरल होखे धुँवठाइल होखे
जवन माई परोस दी पा लेहब

दोसरा के माई के माई कहीं
हमरा कवन आकाज बा
हम हईं भोजपुरिया हमके
माई-भाषा पर नाज बा

परदा मे परिवार रहेला
मान बड़ाई भी जयादे होई
केहू के माई केतनो नीमन होई
बाकी हमरा माई के बादे होई

बाप दादा के कइल कमाई
अबो बड़ छोट के लेहाज बा
हम हईं भोजपुरिया हमके
माई-भाषा पर नाज बा

हृदयानन्द विशाल अघालन
सतुवा चटनी घाठी से
शशि अनिल हरेन्दर से पूछीं
चाहें सतीश कुमार त्रिपाठी से

धरमराज संदीप सुभाष जी
राजू मिथिलेश के ई आवाज बा
हम हईं भोजपुरिया हमके
माई-भाषा पर नाज बा

• कवि हृदयानन्द विशाल विशाल

मजूरी

फुलेसर का आपन कवनो खेत त रहे ना। ई कवनो बड़हनो बात ना रहे, अकसर एक गाँव में पाँचे- सात आदमी का जमीन होला। बाकी लोग त मजूरिए करेला। फुलेसरो रोज मजूरी करसु। सइ गो रूपिया मिले, दुनू बेकत के खरचा धकियावत - मकियावत चलि जा। धन मधे एगो पाड़ी ए आसा में पोसले रहलें कि गाभिन भइला पर नीमन दाम में बेंचिके दिन- राति खातिर कुछु ध लेब।

भुवर बाबू गाँव के सबसे बड़का धनिकाह आ जमीनवाला रहलें, जे फुलेसर के आपन बड़ भाई आ इयार सबकुछ मानसु। हलाँकि अइसन लोग गरीब के इयार ना बनावेला, बाकी भुवर बाबू कुछ दोसरा सुभाव के रहलें। एकदिन भुवर से फुलेसर अनासहीं कहलें कि ए भुवर बाबू ! हमरो के दू- चार काठा बटाई खेत दीं, हम मकई बोइबि। भुवर कहलें कि दू- चार काठा काहें, बोवहीं के बा त एक बिगहा ले ल$ आ बोव$। सुनिके फुलेसर ओ तरे खुस भइलें जइसे आन्हर का आँखि मिलल होखे। चउरी में एक बिगहा मकई बो दिहलें, जइसे आपन सब सपना आ सरधा बोवत होखसु। बरखा भइल, मकई का संगे भरि खेत झिरूआ जामि गइल, जइसे एगो नीमन साधु का संगे दस- बीस गो खउआ- कमउआ लुहेड़ा साधु टीका- फाना क के पेट बोझे खातिर आ जालें। सोहनी के गरज लागि गइल। फुलेसर मजूरी कइल छोड़िके लगलें खेत सोहे। झिरूआ एतना जकड़ले रहे, एतना जकड़ले रहे कि बिहाने से साँझि ले पाँच धुर से ढेर कहियो ना सोहा पावे। ओहू में दू दिन सोहसु तले तीसरा दिन सोहलका खेतवा में फिनु झिरूअवा जामि जा। बुझाउ कि समुन्दर के एगो लहर गइल ना तले दोसर आ गइल होखे। हरान हो गइलें। रोज पाँच धुर से ढेर सोहाउ ना, तीसरा दिने सोहलका में नाया झिरूआ जामि जा। गिरहती करेआला का खेत से मोह होइए जाला, जइसे बाउरो बेटा पर महतारी- बाप के मोह रहेला। बो देले रहलें त छोड़ल ना बने, जइसे लंगोटिया इयार के छोड़ल ना बनेला। अकेल सोहला मान के रहि ना गइल रहे।

एकदिन सोहत- सोहत साँझि हो गइल। घरे अइलें, मलिकाइन से कहलें कि ए मलिकाइन! बिना मजूर लगवले खेत सोहा ना पाई। आ, मजूरन के मजूरी देबे के पइसे नइखे। कहाँ से दिआई? मकई बोवल त जीउ के काल हो गइल। बुझाता जे सब मेहनत डाँड़ जाई। मलिकाइन कहली कि एगो काम करीं, हई पाड़ी बेंचि दीं आ ओही पइसा से खेत सोहवा दीं। फसिल नीमन हो गइल त फिनु सब ठीक हो जाई। फुलेसरो का ई सुझाव जँचल। सोचलें कि खेती जुआ हइए ह। बिआ से लेके खाद- पानी सब भगवाने भरोसे नू लगावल जाता। सब कइला का बादो सूखा भा बाढ़ त भगवाने का हाथ में बा। मलिकाइन ठीके कहतारी।

खैर, पाड़ी बेंचके खेत सोहा गइल आ यूरिया कीनि के थाने- थाने दिआ गइल। यूरिया दिहल खतम भइल कि सुरू हो गइल बरखा आ ऊ बरखा नधलसि कि सात- आठ दिन ले लगातार बरिसते रहि गइल। आठदिन बाद बरखा खुलल आ पानी हटते रक्तबीज जइसन झिरूआ जामल सुरू हो गइल। खाद दिआइले रहे। झिरुआ बढ़िके मकई के दाबि दिहलसि आ अपने ऊपर हो गइल, जवना तरे पद मिलि गइला का बाद नेता लो अपना से नीमन - नीमन नेता के लाते दाबि देला।

फुलेसर खेत में गइलें। खेत की मकई के हालत देखते बुझाइल कि चवन्हा आ जाई। मकई नीचे आ झिरुआ ऊपर, जइसे सेवार पोखरा के तोपि देले होखे। आँखि खुलते जइसे सब सपना बिला जाला, ओसहीं फुलेसर के सब सपना टूटि गइल। खटत- खटत थाकि गइल रहलें। जुआरी जुआ में जे तरे सब धन हारि के घरे आवेला, ओही तरे आके खटिया पर ढहि गइलें। सिनेमा का तरे सब दिन सोझा आवे लागल। तीन महीना से मजूरी कइल बन, रोज- रोज के सोहनी आ पाड़ी के बेंचल।

बहुते धीरे से मलिकाइन से कहलें -'बिहने सबेरहीं कुछ खएका बना दिह$, पुरनके काम मजूरिए करे जाएबि।'

- संगीत सुभाष

दरद दिल के

दरद दिल के बतावल,बेकार हो गइल ।
प्यार के राहि में अब त ,अन्हार हो गइल।

सुनत रहनी हम कि बतावल घटेला ।
बता दिहनी देख ,पहाड़ हो गइल ।

लोर भरि जाला जब ,सोचेनीं बतिया ।
तड़पे जियरा बिरह से,बेजार हो गइल ।

घाव पर केहू मलहम ,लगावत न बा।
नीमक रगड़ के ,कगार हो गइल।

सोचनीं का से का ,देखऽ का हो गइल।
भरल दु:ख से बा जिनगी,उजाड़ हो गइल।

केहू पर केहू के अब ,भरोसा ना होई ।
संघतिये जब छूरी ,कटार हो गइल।

- माया चौबे

कुछ नया कारामात

चली आज कुछ नया कारामात कइल जा,
जे भी रुसल बा ओकरा से बात कइल जा-२
आपना लोग से त नेह-छोह बनल रही,
आई गैरो से चलके मुलाकात कइल जा,
चली आज_____-१
मंजिल पावेला बहुत ही संघर्ष कइनी जा,
तब जाके कही हमनी के आगे अइनी जा,
का बा छुट गइल पीछे ओके याद कइल जा,
चली आज_____-२
अब त ऑनलाइन झट से कुल काम हो जाता,
ऑनलाइन ही हित-मित से राम-राम हो जाता,
चलके लगवा बड़-बुजुर्ग सब के पाँव धइल जा,
चली आज_____-३
मानतानी की जमाना अब बदल गइल बा,
संस्कृति-सभ्यता इहवॉ से चल गइल बा,
फिर भी सामने सबके दिल के जज्बात धइल जा,
चली आज_____-४
हर चीज इहवॉ नया रुप ध लेता जब,
आई हमनी के पुरानका उपाटल जा तब,
चलके दूश्मन पर भी प्रेम के आघात कइल जा,
चली आज_____-५

संग्राम ओझा

टाटावाला चाचा

काल्हु टाटावाला चाचा दसहन साल प गाँवे अइलन।बहुते नींक लागल।हिरीदा जुड़ा गइल।ई सुनि के कि चाचा आइल बाड़ें,घरे परिवार ना बलुक टोला महाला भी खुश भइल।आ खुश काहे ना होखो,गाँवे में पलल-बढ़ल,पढ़ल- लिखल आ खेलल-कूदल कोई आ जाला,त गाँव के लोग खुश त रहबे नू करेला।गाँव भ के लोग,दिन-राति बहरघारा प भारी भीड़ लगवले रहता,कोई बबुआ,त कोई भतीजा,त कोई चाचा,त कोई भइया••••••कह के,टाटावाला चाचा से हाल-चाल,सर-समाचार पूछ रहल बा।

एही बीचे बगल के गाँव के मिसिर जी आ गईनीं ,उहाँ के हाई स्कूल तक चचे का साथे गाँवहिं पढ़ले रहीं।माने कि लइकाइयें के संघतिया रहीं दुनो जने।आगे चाचा पटना के सरकारी निजियरिंग कालेज से पढ़ के सरकारी साहेब हो गइलन आ मिसिर जी महटरी के टरेनिंग लेके,पराएमरी इसकूल में पढ़ावे लगनीं।

बहुते देर तक दूनो ईदमी खुब बतिइनीं ,मन के बात,पुरानका बात,हेने के बात,होने के बात,आपन बात,अनकर बात••••••••••••आऊर ना जाने कतने बात।एहि बीच में चाचा चाह मँगलन,हम ओहिजे रहीं।घरे जाके चाह आ कप ले के अइनीं।

चाह - चुस्की के बीचे चाचा कहलन कि ए मिसिर जी रऊआ कुछो कहीं बाकी अब गाँव पहिले अइसन नइखे।सब चीझु बदल गइल।इहाँ कुछ नइखे अब,साँच पुछीं त रहहूँ लाएक नइखे।हमहूँ बतिया सुनते रहीं,ना रहाइल त हमहूँ मनवा के बतिया कहिए देनीं कि

ए चाचा!सुनीं।कातना सारधा आ परेम से आ उमीद लेके रऊवा के इहे गाँव,समाज आ पलीवार पढ़ा लिखा के साहब बनवलस।रऊआ नोकरी करे लगनीं, राऊर बाल- बाचा सब गाँव छोड़ि के रउए साथे रहे लागल।रउआ साल दू साल प एकाध बार आवे लगनीं।ठीक ओसहीं अऊर लोग पढि लिखि के बहरबासूँ हो गइल।

रउआ त रिटायर हो गईनीं बाकी घर बनइनीं झरिया में,राऊर प्लाॅट आ कतने फ्लैट टाटा, बंबे,आरा,पटना,बनारस किनाइल। रऊए अइसन बहुते लोग इहे कइल।

पढाई लिखाई सब कइलस गाँवे से बाकिर पूँजी लगावे के भइल त बहरी लगावल लोग।आज एही गाँव के लोग अरबों रोपया के मकान,गाड़ी आ कवन कवन चीज बहरी अरज देलस।बाकी ऊ गाँव जवन महतारी बाप हउवे, ऊहाँ खातिर एक छेदाम ना खर्च हो पाइल।सब नीमन- नीमन लोग भा गइल,गाँव के कारजा काहाँ से उतारी लोग ऊपर से ई लोग गँउवे के भसा दिहल।

आजु गाँव के ऊ अरबों रोपेया आ गाँव के पढ़ल लिखल लोग के साथ गँऊवे के मिलल रहीत,तऽ हमनी के गऊवाँ झरिया त ना होखित बाकी रऊआ रहे लाएक जरूर रहित। मिसिर जी मुसुकात रहीं आ चाचा चिहुक गइलन।

अमरेन्द्र//आरा।

कुछ बोलल दुस्वार भइल बा

कुछ बोलल दुस्वार भइल बा,
कइसन ई संसार भइल बा।

लउकत नइखे अब सच्चाई,
झूठ से बेरा पार भइल बा।

सूप सिलउटी मिलतो नइखे,
छोट छोट परिवार भइल बा।

जे लूट$ता दिने राते,
उहे नू बरियार भइल बा।

संस्कार जब हइये नइखे,
पढल लिखल बेकार भइल बा।

देखीं अब नवका दुनियाँ के,
बूढ़ पुरनिया भार भइल बा।

• **कुमार चंदन**

बरखा

मकई के लावा नियन धधकता,
वैशाख के घाम नियन तपता,
बरखा तू बार$ केने--
अंग-अंग हमार जर$ता!

धू-धू के हम जर जाएम,
होलिका नियन राख हो जाएम,
का तू तब बरसबू$!
जब वक्त नियन बह जाएम!!

बादल तू लौट आव$ फेर
हमरा घायल दिल के जगाव$ फेर,
कर$ अंकुरित प्रीत के-
कि हरिहरी आ जाव रेत में!!

• **प्रिंस अभिषेक**

गांव के गांवे रहे द

गाँव के गाँवे रहे द ,
ओके नेंव ना ढहे द
गाँव के गाँवे रहे द ।

भले गर्मी-जाड़ा सहे द
हरिहर बाग-बगइचा रहे द
उहाँ साफे पानी बहे द
गाय-भैंस के चरे द
गाँव के गाँवे ...

सबके खेती-बारी करे द
हाँ, लइकन के खेले पढ़े द
लोग के भजन-गीत खूब करे द
गाँव के गाँवे ...

बिना टी.वी. फ्रिज, भले रहे द
बाकी लोकगीत तनी बढ़े द;
चैन से लोग के रहे द
गाँव के गाँवे...

बा खाली समय, लोग के काटे द
तनी सुख-दुख आपस में बाँटे द
मेहरारुन के चाउर छाँटे द
लेकिन, खाए के भरपेट आँटे द
बस, गाँव के गाँवे ...

जवन ठीक बा, उहे करे द
लोगवा का कही, छोड़अ् कहे द
उ नीमन बा, मति बाउर बने द
आँख के पानी, जनि तू मरे द
गाँव के गाँवे...

गोपी नाथ तिवारी

गीत मोहबत के गाईं

गीत मोहब्बत के गाईं का?
दरद दिल के देखाईं का ?

रहल अपने जे घाव देहल,
नाम उनकर अब बताईं का ?

रहे बात हमरा उनका बीच के,
महफ़िल में बातन के लिआईं का ?

कहे के त बहुत कुछ कह सकत बानीं,
बाकिर नाव माटी मे उनकर मिलाईं का ?

सुतल रहिते त जगा लेंहती
मुअल उनका मन के जगाईं का ?

आदमी के भेस मे जनावर बाड़े 'प्रतिक'
एहसे जादा उनका बारे में अब बताईं का ?

- **प्रतिक तिवारी**

भीखा साहब

भोजपुरी साहित्य के विकास के क्रम में एक से बढि के एक संतन के जोगदान बा। ओही परम्परा आगे बढावले बानी भीखा साहब जी। इंहा कऽ भोजपुरी कऽ कबी रहनी औरी बावरी पंथ कऽ भुरकुड़ा, गाजीपुर शाखा कऽ नौवाँ संत रहलीं जिंहा के गुरू के नाँव गुलाल साहब रहल। बावरी पंथ निरगुन साधना कऽ एगो पाँच सौ साल पुरान परम्परा हऽ जेवना के अनुयायी पूरबी उत्तर प्रदेश के गाजीपुर और बलिया जिला में पावल जालें। इँहा का एगो बरियार संत रहनी जे देखावे-सुनावे फेरा में रहे वाला रहनी। उँहा के ए बात माने वाला रहनी कि जे भगवान के भजन ना करेला ऊ कालरुप होला-

“भीखा जेहि तन राम भजन नहिं कालरूप तेहि मानी।”

भीखा साहब जी कऽ जनम आजमगढ़ (उत्तर प्रदेश) जिला क खानपुर बोहना गाँव में विक्रमी संवत 1770 में एगो चौबे ब्राह्मण परिवार में भईल रहे। इंहा के माई (माता) एगो घरहू मेहरारु (गृहणी) औरी बाबूजी (पिता) पूजा-पाठ करावे वाला एगो पंडी जी रहनी। बचपन में माई-बाबूजी इँहा के नाँव भीखानंद चौबे रखनी। जनेव (उपनयन संस्कार) भईला के बाद इँहा के पाठशाला में घर के रेवाज नियर कुछ समय खाती पढाई भईल। लेकिन इँहा के मन घरबारी पढाई-लिखाई औरी काम-काज में लागे। मन के थाह ना लागत रहे लेकिन साधु-संतन के सेवा औरी संगत नीक लागे। उमिर बढला के सङगे-सङगे इँहा के मन धीरे-धीरे सधुआई की ओर जाए लागल। ई देखि के माई-बाबूजी बारह बरिस के उमिर इँहा के बियाह ठान दिहनी लेकिन भीखानन्द के मन घरई बियाह में ना रहे। ऊ तऽ उपर वाला से बियाह करे खाती बेचैन रहे। भीखानंद के ई घरई बियाह फसरी नियर लागल औरी ऊ चुपचाप घर-दुआर छोड़ि के काशी चलि दिहलें।

कहल जाला कि काशी मंदिर-मंदिर औरी घाट-घाट जाके अपना भीतर लौ खाती बाती खोजे लगलें लेकिन काशी में जेवना चीझ खाती आईल रहलें ना मिलल। मन काशी दे उचटि गईल औरी ऊ एनो-ओने भूलाए-भटके लगलें। भूलात-भटकत ऊ गाजीपुर जिला कऽ सैदपुर भीतरी परगना के अमुआरा गाँव पहुँचलें। ओही गाँव में “कहे गुलाल” गुलाल साहब क एगो पद लोगन गावत सुनलन। ई पद भीखानन्द के भीतर समा गईल औरी ऊ सीधे भरकुड़ा जा के गुलाल साहब चेला ‘भीखा साहब’ हो गईलें। कहल जाला कि गुलाल साहब के देखि के भीखानंद एकदम शान्त हो गईलें औरी उनकरा अईसन लागल कि उनकर सगरी भाग-दौड़ खतम हो गईल औरी उनकरी के रसता मिल गईल। खुदे अपनी सबद में कहलें बाड़ें -

“बीत बारह बरस उपजी रामनाम सों प्रीति।
निपट लागी चटपटी मानों चरिउ पन गये बीति॥”

भीखा के मन में रामनाम कऽ अईसन परेम जागल कि उनकरा ई लागे लागल कि बारह बरिस में ही चारो पन बीत गईल होखे औरी उनकरी सोझा मउत खड़ा बे। ए तरे भीखा गुलाल के हो गईलें औरी गुलाल भीखा के।

भीखा साहब गुलाल साहब से दीक्षा ले के साधना करे लगलीं औरी उँहा के अपना साधना में एतना गहीराई ले अईली की गुलाल साहब के मरला के बाद भीखा साहब गद्दी पर बईठनी। उँहा के साधना के गहीराई ए पंक्ति से मिलत बा -

'इत उत की अब आसा तजिकै, मिली रहु आतमराम'

एने-ओने के आसरा के छोड़ि के अपना भीतर झाँकला पर भगवान मिलहें; कहीं और से ना। ठीक ओही तरे एहू पंक्ति मे कहे बाड़े-

'भीखा दीन कहां लगि बरनै, धन्य घरी वह जाम'

ओ घरी के के तरे बात बताईं जब केहू अपना भीतर डूबि के भगवान के खोज लेला।

भीखा साहब के दू गो चेला भईल लो; गोविन्द साहब औरी चतुर्भुजदास। गोविन्द साहब फैजाबाद में आपन गद्दी चलवलें औरी चतुर्भुजदास भुरकुड़ा में रहि के भीखा साहब के परम्परा के आगे बढ़वलें। भीखा साहब विक्रमी संवत 1820 में दुनिया छोड़ि के परम धाम चलि गईलें। उँहा के पीछे चतुर्भुजदास गद्दी पर बईठलें।

भुरकुड़ा में भीखा साहब, गुलाल साहब औरी बुल्ला साहब कऽ समाधि आजो बे औरी विजयदशमी पर मेला लागेला। आजो भीखा साहब के कुछ चेला भुरकुड़ा औरी बलिया बड़ागाँव में बाड़े लेकिन अब भीखा साहब के बावरी परम्परा लगभग खतम होखे के हाल में आ गईल बे।

भीखा साहब के छौ गो रचना बाड़ी सऽ -

राम कुण्डलिया

राम सहस्रनाम

रामसबद

रामराग

राम कवित्त

भगतवच्छावली

उँहा के सगरी रचना भोजपुरी में बाड़ी सऽ जेवना में भगवान से परेम देखावल गईल बा। सडही दुनिया कऽ असारता, मन के भावन के बात उँहा के छंदन के हिस्सा बा।

संदर्भ सूची

भीखा साहब की बानी और जीवन चरित्र, बेल्वेडियर स्टीम प्रिंटिग वर्क्स, इलाहाबाद 1919

वर्मा, डा रामकुमार, 2007, हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली पृष्ठ संख्या 273

शर्मा, लीलाधार, 2009, भारतीय चरित कोश, राजपाल एण्ड संस पृष्ठ संख्या 573-574

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' रचनावली -2, वाणी प्रकाशन, 2010

सिन्हा, रवींद्र कुमार, 1994, संत काव्य की सामाजिक प्रासंगिकता, वाणी प्रकाशन

ओशो, रजनीश, 1979, गुरु प्रता साध की संगत, प्रवचन-1, दिनांक-11मई 1979, रजनीश आश्रम पूना

वर्मा, डॉ. धीरेंद्र, हिन्दी साहित्य कोश, भाग 2, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी (भारतकोश पुस्तकालय) पृष्ठ संख्या: 411

चतुर्वेदी, परशुराम, उत्तरी भारत की संत परम्परा, संतकाव्य; संतबानी संग्रह, भाग पहिला, बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग

लेखक परिचय:-

नाम: राजीव उपाध्याय

पता: बाराबाँध, बलिया, उत्तर प्रदेश

लेखन: साहित्य (कविता व कहानी) एवं अर्थशास्त्र

संप्रति: सहायक प्राध्यापक, दिल्ली विश्वविद्यालय

संपादक: मैना

हमार_माई

माई के चरनियाँ में देवता निवास करे
अँचरा में सिरी भगवान
कोखिया में बसे जगदम्बा भवानी
कि जग के करस कल्यान

डेगा डेगी देत खानी डेग डगमगात रहे
अंगुरी धराके कइलु पार
ए माई केहू ना बाटे एह दुनिया में
माई जस करे कबो प्यार

तोहरा अँचरा के छाँह में जुड़इनीं ए माई
तोहरा गोदिया में अति सुख पइनीं ए माई
काँच रहे जब नार, दिहलु अमरित के धार
करत रहु दिन रात माई हमरे सिंगार

तोहरे धड़कन से दिल धड़कइनीं ए माई ।

बनल रहत रहलु ढाल ताकि चमके हमरो भाल
जबे धइलु सिर पो हाथ तबे कइनीं हम कमाल

चाल जिनिगी में सुनर हम बनइनीं ए माई ।

चारू बनल बा चरित्तर तोहार सिखावल ह पवित्तर
पाई पाई मोर कमाई बा पसीनवा के इत्तर

भीतर बाहर एके लेखा हम बनइनीं ए माई ।

- विबेक पाण्डेय

"मउवत"

अजब नाच सबके नचावत रहले ।
हंसावत हंसावत रोवावत रहेले ।।

समझ ना सकल केहूवो एकर पएतरा ।
अनेसे भंवर मे फ़सावत रहेले ।।

सम्हर के चले कवनो राही में केतनो ।
डेगे–डेग कांटा बिछावत रहेले।।

बा सब मोह–माया का आपन पराया ।
जमाना से झगरा करावत रहेले।।

ना एकरा से सच्चा हवे कुछउ जग में ।
समय पर समय से देखावत रहेले ।।

बुता जाला जे भी भभक के जरेला ।
सभकरा के बेवँत बतावत रहेले ।।

केहू ना सकल जीत एकरा से कबहु ।
इशारा प सबके घुमावत रहेले ।।

अजब बाटे लीला, गजब बा कहानी ।
कबो दुख,कबो सुख चिखावत रहेले ।।

बा जीतल उहे, डर के जे ना रुकल बा ।
जे थाकल बा ओकरे सतावत रहेले ।।

त काहे के डर से रुकल बाडे राही ।
ई सबका के असही डरावत रहेले ।।

उठे अब चले बाटे मंजिल अगोरत ।
ठहरला प असहीं थकावत रहेले ।।

का मंदिर का मस्जिद,का संसद भवन में ।
ई "मउवत" ह,सबका के आवत रहेले ।।

भरोसा कहाँ केकरो जीनिगी के "पंकज" ।
चुपे चोरी अर्थी सजावत रहेले ।।

- पंकज यादव

अखरेला अधिका सावनवा बटोहिया....

बईसाख में के बिअहल कनिया जब आपन आँगन तेजि के ससुरा जाली, त मुह कुम्हिला के ओइसही पीअर हो जाला जइसे आषाढ़ में के रोपल धान के "बान"। एक जगहि से उखड़ के दोसरा जगह बसला के पीर बेटी जानेले ना त धान जानेला। दइब जानस ई उजऽर के बसे के रीत कवना जुग से चलि आवता, बाकिर आजुओ असाढ़ में रोपनी के बाद के पीअराइल धान आ अपना घर कावर उल्टा अछत फेंक के बिदा होत बेटी ओ सनातन रीत के निभावत रहि गइली सन... बाकिर भगवान केहू के संघे अन्याय ना करेले, सावन एह दुनु के जीवन में हरिहरी ले के आवेला। आषाढ़ के पीअर भइल धान सावन के पहिलके बरखा पर हरिहर हो के लहराए लागेला, त सावन आवत आवत नवकी दुलहिन के भी नवका घर में मन लागे लागेला।

प्रेम के महीना ह सावन। बइसाख-जेठ के झंझाइल धरती के गोद भरे वाला सावन... नवका बर-कनिया के हियरा में नेह उपजावे वाला सावन... कजरी वाला सावन... शंकर जी के सावन। पुरान आ पुरनिया कहेलें जे सावन में समुद्र मथाइल रहे जेहिमेसे ढेर रत्न निकलल रहे। हमरा बुझाला जे "प्रेम" ओही में से निकलल होइ। ना त सावन के महीना में प्रकृत अइसे अपना रंग में आइत? महकत धरती, लहकत पुरुआ, लचकत पेंड़ के हरिहर डार, चहकत चिरई आ उमड़त मेघ... अइसन दिन में त आदमी दुआर पर अझुराये आइल बैरी के ले कहि दी-- "रुकऽ मरदे, आवऽ हई दु गाल भूजा खा, भादो में लड़ल जाइ।"

भोजपुरिया धरती जाने कवना जुग से "सावन के प्रेम" के सहेजले बिआ। कजरी में, झुलुआ में, ननद-भउजाई के परिहास में, रोपनी के गीतन में, हरफरउरी में... जइसे बरीस दिन के पीर, बरीस भर के हुलास जइसे एही एक मास में निकाल लेबे के होखे। पच्छिम खातिर जिनगी भले युद्ध होखे, पुरुब खातिर जिनगी ईश्वर के उपहार रहल बा, आ सावन एह उपहार के आनंद उठावे के सबसे सही समय!

बाकिर अब ई सब इतिहास हो गइल बा। हमरा से केहू पूछो कि आधुनिकता भारत से सबसे बेसी का छिनले बा, त हम कहेब कि सावन। आँख उठा के देखीं, अब सावन में सावन बा कहवाँ? ना पेंड़ न झुलुआ, ना कजरी ना गीत... कमाई के ताव अइसन ना जोतलस कि सावन के महीना में कवनो जोड़ा साथे ना मिली। भोजपुरिया जवार के बड़ बड़ गाँवन में ले बीस गो नौजवान नइखन लउकत। पेट के आगि आ विकास के लालच सभका के घर से उजार के विदेश भेजि

दिहलस। पलायन के दंश प्रेम के वियोग में बदल दिहलस। सई साल पहिले बारहमासा में "अखरेला अधिका सावनवा बटोहिया" गावत घरी भिखारी ठाकुर ई ना बुझले होइहें कि समय के साथे साथे ई अखरल बढ़ते जाई। भिखारी ठाकुर के बेरा त एगो विदेशी रहलें, आज भोजपुरिया जवार के सब जवान बिदेशिये हो गइल बाड़ें, आ सब कनिया "प्यारी सुन्दरी"। अंतर बस एतने बा कि तब लोग आसाम बंगाल जाव, अब लोग दुबई, सऊदी, मस्कट कुबैत जाता। पलायन के एह जुग में केकरा हियरा में उ हुलास बा जे कजरी गाई? उ दोसर जुग रहे जब दुआर पर सूतल पति के बोलावे खातिर "अँगुरी में डँसले बिआ नगिनिया रे ए ननदो भइया के जगा द..." के खेल होखे। अब सावन में कुछु बा त करिया रात आ बियोग के पीर। विकास के नाम पर एह धरती के खाली इहे वियोग मिलल बा। साइत एहि से सावन अब बरसल छोड़ दिहलस।

सरकारी आंकड़ा में देश दुनिया के चउथा सबसे धनिक देश बनि गइल, बाकिर देश के ई धन एक्को गो विदेशी के घरे ना लवटा पवलस। बिकास के नाव पर बनल गाँव के पकिया डगर रोज सैकड़न लोग के बाहर ले जाले, बाकिर लवटा के ले ना आवेले। "जइसे उड़ि जहाज से पंछी फिर जहाज पर आवे" जइसन दोहा अब झूठ हो गइल बा। अब ए जहाज से उड़े वाला पँछी लवट के ना आवेला। गाँव जइसे रोज नगर कावर भाग रहल बा। बदला में मिलता पइसा,टीवी, फ्रीज, कूलर,एसी, महंगा कपड़ा आ पक्का के घर, जेहिमें सब कुछ बा बाकिर प्रेम नइखे... चुअत पलानी में रात भर खटिया ए कोना से ओ कोना खींचला के आनंद अब के पीढ़ी शायदे बुझ पावे, बाकिर पक्का घर के सुविधा से भरल कोठरी में सूत के आँख से लोर पोंछल जइसे अधिकांश कनिया के भागि में लिखल बा।सावन में अब मेघ ना, आँख बरसेला। उहो पानी ना, भाफ...

सावन के महीना में राति के एगारे बजे जब कवनो कनिया के घर में मोबाइल पर आई.एस.डी के नम्बर से फोन आवेला, त जइसे भिखारी ठाकुर के बारहमासा जी उठेला- "अखरेला अधिका सावनवा बटोहिया"।

- **सर्वेश तिवारी श्रीमुख**

लड़िकाई

नईखे सुख मिलत अब, करोड़ों की कमाई में।
चवनिये पा के मजा रहें, बहुते लड़िकाई में।
बहुते याद आवेला ऊ, गाँव के बगईचा...
धूरा माटी के घर बनाईजा, माँगी के माॅटी पईचा..
लड़िकईया ईयाद आवे जब, झाँकी परछाई में।
चवनिये पा के.....लड़िकाई में।
बड़ा निक लागे जब, बरिसे बदरिया....
छपर छपर कुदिजा, सब जाने एके दरिया....
मारिजा लोटकनिया बहुते, धान के लेवाई में ।
चवनिये पा के .....बहुते लड़िकाई में।
चिका कब्डी गूली डंटा, खेलीजा बहुते खेला..
आईस-पाईस कुकुहा कू में, जुटे खूब मेला.....
गोटी गोली में मज़ा रहें, सत्तीलो के सजाई में।
चवनिये पा के.....लड़िकाई में।
के हवे आपन के, हवे बेगाना..
ना कवनो मतलब रहें, रहीजा मस्ताना...
हारा हुसी लागे सुनिल, गिरहिया मराई में।
चवनिये पा के.....लड़िकाई में।।

- सुनील कुमार दुबे।।

सोहर(सोरठी तर्ज)

मोरा पिछुअरिया सीरीसिया के गछिया,
सीरीसिया के गछिया हो,
ताहि पर बोले बनमोर नू ए राम।
होत भिनुसरवा जब रोवेला होरिलवा,
अरे रोवेला होरिलवा हो,
सँउसे नगर भइले सोर नू ए राम।
धावल धूपल सासु रानी अइली,
अरे सासु रानी अइली हो,
बहुआ सुलछन बड़ भाग नू ए राम।
होरिला के रुप देखी बोलेली गोतीनिया,
अरे बोलेली गोतीनिया हो,
होरिला ई कुल के अंजोर नू ए राम।
खाढ़े ओसरवा से बोले छोटी ननदी,
अरे बोले छोटी ननदी हो,
हमहुं लिहबि नवलखा हार नू ए राम।
होरिला के बाबा दुअरा अन धन लुटावे,
अरे अन धन लुटावे हो,
सइयाँ लुटावे मोतियन हार नू ए राम।
जुग जुग बाढ़ो बहुआ तोहरो एहवाती,
अरे तोहरो एहवाती हो,
दूनो कुल के कइलु अंजोर नू ए राम।
राय देवेन्दर ई सोहर सुनावे,
अरे सोहर सुनावे हो,
होरिला जिअसु लाख बरीस नू ए राम।

* देवेन्द्र कुमार राय

खेतिहर के दरद

खेत भले परती रहि जाई
हम ना करब किसानी।
हो राजा जानी।
राज मे रउवा खेती कइले
बाटे बड़वर हानी।
हो राजा जानी।

का बतलाईं ये भाई हम
खेती कइ दुख बड़ा उठवलीं।
दुख पीड़ा तनाव छाड़ि के
ये जीवन में हम का पइलीं?
बीत गइल ओके बिसराइब
अब ना करब नादानी ।
हो राजा जानी।

पहिले साधू संत जे आवे
खाली हाथ न वापस जावे।
जात जात ऊ आसीस देवे
फिर आवे के इच्छा जतावे।
अपने गाँव जवार मे रहल
के हमरे अस दानी।
हो राजा जानी।

खा के जहर किसान हजारों
दे देलं आपन जान।
आज ले पर जूं तक ना रेंगल
रऊवा लोगन के कान।
करजा चढल बा हमरो उपर
बिरथ भइल जवानी।
हो राजा जानी।

देस मे अतिसय चीनी रहते
विदेस से चीनी आइल।
राउर मंत्री आ अधिकारी
ओ में खूब कमाइल ।
डील भइल सरकारी मिल सब
माटी भाव बिकानी।
हो राजा जानी।
भकोलवा के लगे रहल
ना खेती एको कट्ठा ।

सरकारी नौकरी के चलते
लगवा लेलस भट्ठा ।
ओकर लरिके पढें दिल्ली
हमार चलावें सानी।
हो राजा जानी।

करे ला चीनी मिल घटतौली
कहीं न हो सुनवाई ।
का होई जब रजधानी ले
सब केहू पइसा खाई।
कई साल के दाम बकाया
आइल बड़ा गिरानी।
हो राजा जानी।।

कहे के बाटे नहर बनल बा।
कबो न आवे पानी ।
नहर मे पानी आवेला
जब झम झम बरसी पानी।
कब्बो फसल बाढ मे डूबे
कब्बो फसल सूखानी।।
हो राजा जानी।

गेहूं धान के क्रय केंद्रन पर
बड़ा बा मारा मारी।
लेहल जाता ओही के गल्ला
जेसे भइल बा यारी ।
ओकर जे विरोध कइलस
ओकरे ओर मुक्का तानी।
हो राजा जानी।

अब किसान के एका कइके
हम संगठन बनाइब ।
जे किसान के दुसमन बा
कुर्सी से ओके गिराइब।
ई सरकार बदल जाई त
हमहू काटब चानी।
हो राजा जानी।

देस से अपने अनाज आ
चीनी विदेस जब जाई।
खेती होई लाभ के सउदा
आ खुसहाली आई।
हमहू परती तूड़ के फिर से
मन से करब किसानी।
हो राजा जानी।

* जगदीश खेतान

बोलिया पपीहरा के

सुने खातिर बोलिया पपीहरा के हो
बालम लेइ चलऽ गाँव में, निमिया के छाँव में...
सुने खातिर बोलिया कोइलिया के हो
बालम लेइ चलऽ गाँव में, निमिया के छाँव में...

छोटकी चिरैया हमरा अंगना में बसेली
खोंतवा बनाइ चिरई चिहू -चिहु हँसेली
करे खातिर संगे अटखेलिया नु हो,
बालम लेई चलऽ गाँव में, निमिया के छाँव में...

शहरी बेअरिया बेमारी बढ़ावे
हेतना अजोर मिली मन ना लगावे
ढेबरी के देखे के अजोरिया नु हो,
बालम लेई चलऽ गाँव में, निमिया के छाँव में...

हरिहर मिजाज होई देखि हरिहराई
भागी सारा दुःख कबो पीछे ना आई
देखि देखि घरवा दुआरवा नु हो,
बालम लेइ चलऽ गाँव में, निमिया के छाँव में..

गुड़िया पान्डेय, गोपालगंज

प्रित के रित

जेकर भीतर सुनर मन रही,
समझी उहे प्रीत ।
सत्य अहिंसा दया भाव के,
उहे निभाई रीत।

आग लगा के केहूओ खोजे,
हो जाओ सभ आन्हर ।
त सुनिलऽऽ ए गद्दार देश के ,
होखब$ ना हम बानर।

पहिरवलस इतिहास देश के,
वीरन के तब माला।
लक्ष्मी प्रताप आजाद कुंवर जी,
उठवलन विद्रोही पर भाला।

माया चौबे

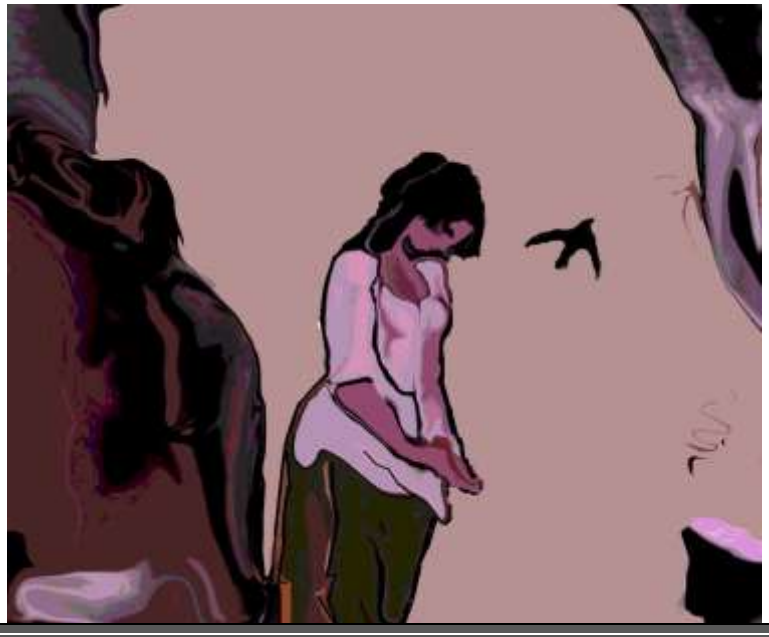

जब जनम लिहलें भगवान

नीन खुलते जसोदा के दीठि जइसहिं अपनी डासन पर परल ऊ एकदम से भकुआ गइली। अइसन सुघराई के बिषय में ऊ ना आजु ले कबो सुनलहि रहली आ ना देखलहि रहली। भोर के नीलमी अकास के करिअरिकी बदरिअन पर सुरुज भगवान के किरिनिअन के जवन अरुनाई आभा संवरपन झलकावेले ओइसने संवराई लेले चम-चम-चमकत एगो अजगुत छौना बिछौना पर लाल-लाल तरहथिअन के आपुस में बिटोरले, आंखि मुनले, अपनी गोड़ के अंगूठा के चुपुर-चुपर चुसले जाता।

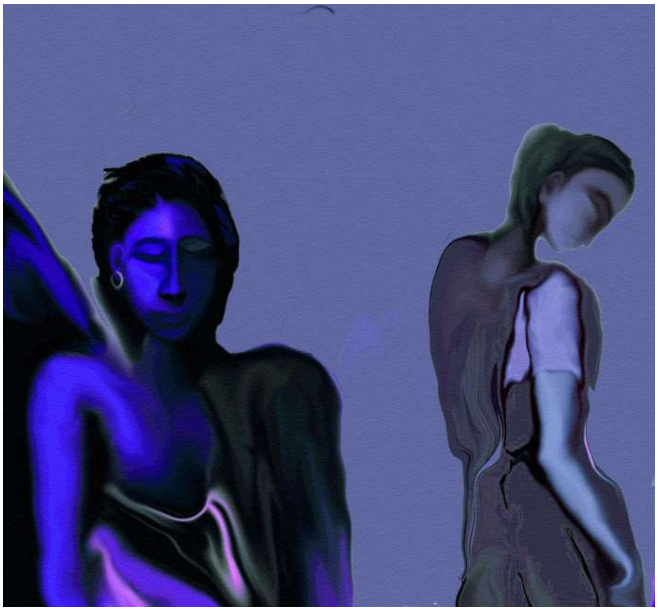

बड़ा बिस्मय भइल जसोदा के- कौनो दरद ना पीरा आ लइका भइल हीरन में हीरा?

भाई हो! दरद होई त कइसे, प्रलय पवन के पाहुन के माई के प्रसव पवन प्रेरी त कइसे? रूप अइसन अनुरूप आ मनोहारी कि जसोदा सगरी बिसर गइली, ओही में रम गइली, आंचर में भर लीं कि कोरा में ले लीं कि दूध पिआईं कि बाबा नंद के गोहराईं, कुछु सुझबे ना करे। हिलल डुलल त दूर पलकिया झपकवलो पर ओ बालक के बियोग उनके बेधे लागल। ओ बालक पर आंखि ठहरवले जसोदा सोचे लगली कि राजा दसरथ के राजीव लोचन राम निसचिते अइसन होइहें तबे नु उनुकर परान छूटि गइल रहे, त का ए ठाकुर जी ई उहे हउवन का? तले मुसुकाइल त ऊ छौना, जसोदा हिरदै से लगा लीहली, असीम आनंद उमगि उठल, आंखि मुदा गइल जसोदा के, भीतरो ऊहे मूरति उभरि गइल, लगली बूड़े-उपराए ऊ।

आजु ले एतना कुबेरा ले जसोदा त कबो सुतले ना रहली। नंद सद्यप्रसूता के लोचना लेबे उनकरी कक्ष का ओरि चलि परलें- आजु काहें बड़ी अबेर भइल बा हो... ओ...ओ...ओ...? कोठरी के दृस्य देखि के नंद के आंखि, मुंह आ हाथ खुलल कि खुलले रहि गइल- 'आहे हे बनमाली जवन बिहान रंउवा बहरी कइले बानीं ओ ले कोटि-कोटि सुग्घर भिनुसार त जसोदा के सउरी में फइलल बा।' मथुरा दूध चहुंपावे खातिर गोपिन के जत्था कहंतरी लेले नंदमहल में अमा गइल आ मूरतमंद जसोदा नंद के देखते चुपा गइल, तले दीठि परि त गइल सिसु पर- नीलबरन नवकमल दल नाहिन केसर कर-गोड़-मुख-नयन, चिरई चहचहाए लगली, बाहर खड़ी नौ लाख गइया रंभाए लगली, गोपिन में सुनगुन भइल बड़ी जोर से ब्रजघोष उठल कि केहू सुनो हो नंद के आनंद भइल।

ओ गुलजार के सुनते सगरे ब्रजमंडल नंद महल की ओर उपटि परल।

देवर्षि नारद के बहकावला में आके मथुरा के मए जोतिषी एके सुर में ई भबिषबानी क देले रहलन स कि अष्टमी के निसु राति खानी देवकी के अठंईं संतान के जनम होखी, त ओही में गरग मुनि फुसफुसाइलें कि 'जनम ना होखी, धराधाम पधराई।'

जवन होखे बाकी देवकी के सातवां गरभ गिर गइला के बादे से कंस बड़ी उदबिगिन रहे एलिए सुरक्षा में ऊ

ए बेरी इचिको उठाह ना रखले रहे मजगर चाक-चौबंद बेवस्था कइले रहे।

बाकी आजु निअर मधुमई राति त जिनगी में कबो भइले ना रहे। बसुंधरा के एकएगो के कन आनंद से भरि गइल, सांझिए से लागल बरखा होखे, मेह-नेह अपनी जल रासि से, अगिनदेव अपनी ऊष्मा से, पवनदेव अपनी मंद-सुगंध-सीतलाई से, अंबर अपनी घन-घम-घम मिरदंग-नाद से, परबत-घाटी, नदी-नाला अपनी कल-कल निनाद से, बेलि-बिटप-तृन-फल-फूल अपनी औरस-रस से, जोगी ध्यान आ भोगी अपनी तृपित भोग-बिश्राम से ए महामोह मायामयी राति के अइसन आपन-आपन पहुनाई कइल कि गिरहत बसुदेव आपना भीम-कर्म से सिसुअन के अदला-बदली क अइलें।

अइसन महिमावंत मोहनिसा से कंस जब जागल आ अपनी जलपान में दूध के बिंजन ना पवलस त बमकि उठल। हीमत क के कुब्जा बतवलसि जे ब्रज से आजु दूध आइले नइखे। कंस कड़कल- 'काहें?'

मन में त अइसन आइल कि कहि दे जे छीरसागर रहवइया किहां से छीर टरी कइसे बाई कुब्जा तनि टेढ़ाहे बोललसि-"नंद के लइका भइल बा ओकरि उत्सव के चलते।"

ई सुनते कंस त जइसे सुख-सपना से जागल आ जलपान छोड़ के कारागार की ओरी भागल, ओकरा छाती में दु-दुगो माइन के प्रसो-पीरा होखे लागल आ खाली एगही उदबेग अमा गइल कि ऊ आतना चएन से सुतले रहि गइल ह त कइसे। ओकरा सुनगुन लागि गइल कि हो न हो कुछ त अनहोनी होइए चुकल बा एहि बीचे।

देवकी आ बसुदेव के मुखमंडल के असीम सांती देखिए के आ रहल-सहल कसर ई सुनिए के कि लइकी भइल बे कंस के करेजा कांपि गइल। का जाने केवना माटी के बनल बा आजु के हतियार लोग कि ए लोग के करेजा ना हिलेला बाकी कंसो के ले हाथ, ओ लइकी के हतत समय अइसन कांपल कि ऊ छटकि के आसमान में खिल गइल आ बड़ी जोर से आकासबानी भइल कि "का ए लइकी के मरबे तोरा के मारे वाला त गोकुला चहुंप गइल बा।"

कंस आन्हीं में के उखरल ओधी लेखा अपने के घिसियावत अपनी महल की ओरि चल पड़ल।

एने जसोदा रानी के सउरी में भीड़ बढ़ल के बढ़ते जात रहे। केहू-केहू के सुनते ना रहे, एकदुसरा के हाथ धइले, आंखि मुनले ओ चौरासी कोस के ब्रजमंडल के चउगठले जात रहे, फेड़-खूंट-झांग-पात-कुंज-निकुंज ए धावला-धुपला से अगलियात-बगलियात, बदहवासल-लजात उहो झूमत-घूमत रहे कि राधा के देखते सभे केहू तनिकि-सा बिथकल। करिहाई पर हाथ धइले राधा सभका से पूछली कि 'ई कवन छुवंता होता?'

बाल-बरिध-नारी-पुरुष त पहिलहिं से ओ संवरपन पर अघाइल रहे ओइसने पीयरपन रूप देखि के अउरी मोहा

गइल बाकी ओहि लोगिन के संगे मताइल फिरत खग-मृग-मधुकर-श्रेनी बोल पड़ल-" कि मृगनयनी हमनिका आजु ले सुंदरता के टुक्की में देखले बानीं जा बाई भर

देहें सुघराई त जसोदा माई के अंगनाई में फइलल बा।"

राधारानी बिहंस दीहली बाकी अउरी लोग एतना सुनते ओ कोटि काम कमनीय के दरसन खातिर धउर पड़ल, तनि ठिठकल कि ओइसन रूप के खलिहा हाथे केतरे देखल जाव? ई भाव उठते-पान, फूल, फल, केरा, कसइली, मोरपंख, कमल, बनमाला आदि कुल्ही अपना मने लोगन के हाथ में घुसरे लगलें। सबके पीछे राधा चलली एगो कइन उठवले, जइसे सभके हांकत।

सगरो उपहार ओ मनमोहन पर निवछावर कइल गइल। माथे मोर-पंखी लगा दियाइल, गर में बनमाला पहिरा दीहल गइल, केहू हाथ में कमल लटका दिहल। ए लोग के आगा चलि के राष्ट्रीय पुष्प, पक्षी के पद प्राप्ति के बरदान मिलल।

राधा जब ओ रूपरासि के देखली त एकदम अकबक, उनके जब कुछु ना बुझाइल त अपनी हाथ के ऊ कइनिया ओ बालक पर निछावर क दीहली। आ ओ कइन के जेवना के एगो अपना के 'कबि न होहुं नहिं बचन प्रबीनू' कहे वाला कहले रहनीं कि " फूलहिं फरहिं न बेंत जदपि सुधा बरिसहिं जलद" के अइसन भागि जागल कि ऊ कइन ओ बालक के ओठे से जा लागल आ फूंकि दिहलें अब ओमे से अइसन ध्वनि परगट भइल कि पूरा ब्रह्माण्ड नाचि उठल, कइन बेसुरी, बासुरी बनि गइल। ओ मधुर तान पर, संकर जी के ध्यान टूटि गइल, गोपिन के कंठ से गान फूटि गइल, जसोदा माता सगरो ब्रह्मांड के ओ बालक के रूप के दरसन लाभ देबे खातिर उठा के नंद बाबा के कान्ह प ध दीहली आ मए ब्रजमंडल एकबेर फिन से जय घोष कइल- कन्हाई हो बधाई हो!

- **आलोक पाण्डेय**

सावन में

कहीं कइसे कि बाटे तोहसे प्यार, सावन में,
रहे झपसा जस हमके इंतज़ार, सावन में,

तन के पियासि के पानी बुझावे,
मन के पियासि में आगी लगावे,

जिया हरदम रहेला बेकरार ,सावन में,।।
बनि के बेदर्दी जो बदरा बहकावे,

अगिया बुतावे ना अउरी लहकावे,
कहीं करि द ना तूँ अब इन्कार, सावन में।।

अइब त तन मन के अगिया बुताइबि,
दिनो राति पिरितिया के बतिया बताइबि,
तहके जोहेला अँखिया बार-बार,सावन में।।

• भावेश अंजन

सावन महिना

मेघवा बरसे आठो पहरिया
घर ना अईलें साँवरिया ना
अइलें साँवरिया ना सखि हो मोरा
अइलें साँवरिया ना$ मेघवा ब...

बदरा मे बिजुरी चम चम चमके
चम चम चमके हो चम चम चमके
दिन दुपहरिया ना
दिन दुपहरिया ना सखि हो मोरा
दिन दुपहरिया ना। मेघवा ब.....

मोरवा ददुरा पपिहवा के बोली
पपिहवा के बोली.2
मदमस्त बयरिया ना
मस्त बयरिया ना सखि हो मदमस्त बयरिया ना । मेघवा..

बड़ा रे बेदरदी बलम निरमोहिया
बुझे ना दरदिया ना
बुझे ना दरदिया ना सखि हो मोरा
बुझे ना दरदिया ना ।मेघवा ब....

सावन महिनवा v k g परदेशी
Vkg परदेशी बलम परदेशी
देवे ना खबरिया ना
देवे ना खबरिया ना सखि हो मोरा
लेवे ना खबरिया ना ।मेघवा ब..

• **विनोद गीरी**

मनवाँ बाय डेराईल

दऊ क गोस्सा देखि के हमरो-
मनवाँ बाय डेराइल-
घाम जहर मरचा जस लागे-
मड़ई छाँह धिकाइल-
उमस से देहियाँ बेकल भइलिन-
पुरुवा खूब खराइल-
तनिक चैन ना घरे-ओसारी-
गरमी जिव बऊराइल-

बाग-बगइचा छाँह न कतहूँ-
सगरो पेड़ कटाइल-
आग लगल चिमनी क धूआँ-
बचलो पेड़ सुखाइल-
धूआँ-धक्कड़ गाड़ी-मोटर-
धूर उड़ें गरमाइल-
कारण इहे प्रकृति बा रूठल-
मौसम बा गड़बड़ाइल-

गढ़ई-पोखरा ताल पाटि के-
खेत मकान तनाइल-
गाँव सीवान इनार ना लऊकें-
जवन जमाना आइल-
परदूषण से हावा पानी-
खेत अनाज विषाइल-
चिरई-चुरमुन मरल बिलाइल-
अदमी बढ़त देखाइल-

नवा-नवा रोगवा बा आइल-
रोगी देश बुझाइल-
काम-धाम मेहनत ना कउनों-
मुंहवाँ रोग झुराइल-
पानी-पुरवट बरध ना हरवा-
बइठल खेत जोताइल-
खाद रसायन जहर दवाई-
खेतवे खूब झोंकाइल-

फट-फ़टिया आ मोटर घर-घर-
डीजल तेल फूँकाइल-
बढ़ल अबादी साधन-सुबिधा-
खान-पान बदलाइल-
सड़क फैक्टरी ए सी बढ़लिन-

धूआँ प्रकृति दूषाइल-
बिना पेड़ ई जहर के सोखी-
जंगल पेड़ बिलाइल-

मनइन के करतब से हमरो-
सुघ्घर प्रकृति कोंहाइल-
जाड़ा-गरमी बारिस मौसम-
असली समय भुलइल-
सुधर जा भइया समय बा अबहिन-
छोड़ा जवन गँवाइल-
साफ-सफाई नदी नार क-
गढ़ई जवन पटाइल-

बढ़ल अबादी रोक लगावा-
बना ना तू अब जाहिल-
पेड़ लगावा वंश जानि के-
बड़हर पुन्न कहाइल-
पानी क हर बूँद बचावा-
इहे जात ओराइल-
धूआँ-धक्कड़ हल्ला-गुल्ला-
रोका जिव ऊबिआइल-

- राकेश कुमार पांडेय

प्रीत

दिल में प्रेम आ प्रीत जगा देतीं ।
दीप असरा के मन में जरा देतीं ।।
समाज ही मन से कुन्ठित बा ।
कुछु धर्म के बात बतला देतीं ।।

धर्म -जाति से जकड़ल समाज बा ।
जीवन जिये के एगो राग बता देतीं।।
भाषा मे बटाइल इहाँ धर्म बा ।
एगो धर्म के भाषा बता देतीं।।

मतलबी रिश्ता बा आज इहाँ,
बिना मतलब के रिश्ता बता देतीं।
"प्रेम" प्रेम बा सब केहु से पर,
प्रेम के रूप बता देतीं ।।

प्रेम किशोर

रसे - रसे

रसे - रसे बहेली बेयरिया ए राजा जी ।
अंगने में ला द मुसेहरिया ए राजा जी ।। - २
बड़ा उतपात करे नतिआ मच्छडवा ।
आगे हुलुकाइले त काटेला पछाड़ावा ।

बाड़ा जोर से उठेला लहरिया ए राजा जी
अंगने में ला द - - - २ ।।

टह टह आँगना में लोटेला अंँजोरिया ।
बदरी से झाँके चंदा करेला अगोरिया ।

अचके में करे मसखरिया ए राजा जी
अंगने में ला द - - - २ ।।

द्वारिका नाथ तिवारी

मंगरु माधोपुरी उवाचः..

अदरा औछार परे, बुनन फुहार परे
चिरइन के पाँख भींजे,अउर भींजे खोंता

सोन्हा सुगंध धूर भुंइया के फैंकेला
राम राम रटे लागल,पिंजरा के तोता।

पिहरे पपीहा आ कोइलर के कू कु भी
झींगुर के झनकार ,सगरे ही होता

बेंगन के टर टर से,मेघन के गरजन से
गूंजे मल्हार नाहीं, सुखेला सोता।

गाछन बिरिछन में,प्राण आईल फेरु से
धरती के त्रास हरे,कारी कारी बदरी

अदरा के बांव गईल,निमन कहाला ना
लागेला झूला आ गुंजत बा कजरी।

अदरा मनावे के सुन्दर बा मंजर ई
आमो के राजा में ढेरे ही दम बा

अलुई आ परवल के दम संगे दालपुरी
खीर के ना बात पूँछी, इहे अलम बा।

- डा.सुनील कुमार उपाध्याय
- प्राचार्य,एल.पी. शाही कॉलेज
- पटना-800027

नतीजा दहेज क

बहूते उछाह से विवाह कइलीं बाबू के ,
अवते पतोह मोह लिहलस छन में ।
अँखियाँ के आस नाश सरधा के हो गईल,
मन के मुराद मोरा मरि गैल मन में ।।
चितबदला के जड़ी खर दिन के पिआई ,
मति भरमाई देती मोरा सरवन के ।
पनिया पढ़ोर के पतोहिया पिअवलस ,
घुमवलस हमरे बचवा के मन के ।।

बेटवा पतोह रहे दिने राती घरवे में ,
एके दरी बईठे से धँसी जाले धरती ।
दर्शन के तरसे ल$ सुरुज भगवान जी ,
चाँद छछनत बाटे रुपवा निहरतीं ।।
सोचीं सोचीं बतिया ई रोजे अकुलात बानीं ,
कहियो पतोह भोरे अँगना बहरती ।
दिन भर के थाकल रतिया में सूते बेरी ,
मलिया में तेल लेके कपरा पे धरती ।।

पढ़ल पतोह बिया दिआ अस जर तिया ,
घर में अँजोर नाहीं अगिये लगावेले ।
बिया अपने मन के बहूत बन ठन के,
बइठल घर में से कहना अढ़ावेले ।
बेड टी ले आव सासु भोजनों बनाव हाली,
देरी कबो होखेला त अँखिए देखावेले ।
निक निक चीज हम रोज रोज बनाइला ,
तबो थारी टारी के ई मुँह बिजुकावेले ।।
पतोह के जवाब
तोरे बचवा से कम पढ़ले न बानी हम ,
तबो लिहलु खर्चा तू जोड़ी के पढ़ाई के ।
रोपेया दहेज के तू रखलु सहेज के ,
परिछलू पतोह सासु बहूते धधाई के ।।
दे के अईली दाम काम नाहीं करब हम ,
असुल करब सब तोहके खटाई के ।
जबले दहेज़ रही असहीं पतोह करी ,
साँच कहे अनगढ़ सभे समुझाई के ।।

* लोकनाथ तिवारी "अनगढ़"

एक विवाह गीत

कौन डारी लागे बाबा मीठे दशहरिया
कौन डारी पतई सोहाय।
कौन डारी लागे बाबा नेहिया पिरितिया,
कौन डारी तूरल न जाय ।

आम डारी लागे बेटी मीठे दशहरिया,
पाने डारी पतई सोहाय।
हियरा के डारी लागे नेहिया पिरितिया,
उहे डारी तूरल न जाय ।

केइयें लागे आमवा केइयें लागे पनवा,
केइयें नेह हियरे फुलाय।
काहें टूटे आमवाँ, काहें रे टूटे पनवाँ,
काहें नेह तूरल न जाय ।

बेरि बेरि लागे बेटी आमवाँ मोजरवा,
पान बरमासा ढिमलाय।
एके बेरि लागे बेटी हियरा में नेहिया,
ओही से तूरल नाहीं जाय ।

सरि जइहें आमवाँ कि सरि जइहें पनवाँ,
अमर सनेहिया के ताग।
एही रे सनेहिया के तगवे से बाबा,
जोरि दिहऽ हमर सोहाग ।

ना कुल, जतिया,धरम, धन देखिहऽ,
देखिहऽ ना महल सरेह।
ओही डारी बन्हिह अंचरवा ए बाबा,
जौने डारी लगलें सनेह ।

- **सुशांत शर्मा**

हमके जाए द ना

बात मान बड़े बाबू विनती करी
तोहरे पऊवा परी और मिनती करी
हमके जाए द ना
हमके जाए द ना .....

केहू चौकठ पे संझा के दिया जला
राह हमरो तकत होइ धड़कन बढ़ा
ले के अल्हड़ उमिरिया जवानी भरल
रूप देखत होइ छिन में दरपन उठा
बुझी लेहली बहुत काम ऑफिस के हम
बात नेहियो के तनिका बुझाए द ना
हमके जाए .....
हमके जाए .....

दिल के कमजोर ह केहू रोवे लागी
देर होई त अँखिया में चिंता बढ़ी
बह चली धार लोरवा के काजर सहित
ताप विरहा के धनिया की ऊपर चढ़ी
होइहें तोहरो घरे बात बुझत$ मिता
जा अघा$ ख़ुद हमें भी अघाए द ना
हमके जाए .....
हमके जाए .....

हो गइल होइ परबत पुतरिया मगर
एकटक ताकते होइहे एहू बेरा
चान के बिन अन्हरिया डेरावत होई
चाह लेकिन मिलन के ना पाई सेरा
बुझि जईब करेजा के काँपल तुहू
केहू एके के दिल में अमाए द ना
हमके जाए .....
हमके जाए .....

शिवदत्त द्विवेदी 'द्विज'

छोह

ओ साल पूस अइसन ठरवत रहे कि कउड़ा तर से हटते सब दाँत आपसे में कितकितवा खेले लागे। केहू केतनो अलोते बिछवना करे, हाड़ के कँपकप्पी कब्बो ओरइबे ना करे। अमवसा के दिन रहे, सँझवत बरइले की बाद मुखिया जी की दुआर पर बड़का कऊड़ में आगि धरावल रहे। एहू तरे गाँव के आठ-दस अदिमी साँझे-बिहाने मुखिया जी की दुआरे जरूरे आवस, बाकिर जड़वा की दिनवाँ में आदी वाला चाह आ बड़का कऊड़ के लहास त जइसे हाँक लगा के दुनू बेरा सबके जउरिया लेव।

देश में जब से पंचायत राज आइल तब्बे से ए गाँवे मुखिअई आपन ठेहा ना बदललस, एही घरे जमि गइल रहे। पहिले बिशुन बाबा, जबले जियनी तवले मुखिया रहनी। हिरदा के अइसन उदार आ परोपकारी की शरीर छुटला का बादो केहू मुखिअई के दावा ना कइल। गाँव भर के लोग एकवटि के उहाँ की लरिका, कमला बाबू के मुखिया बदि दिहल। कमला बाबू अपना के ओ जोगे ना बुझीं, एही से पहिले त ना-नुकुर कइनी बाकिर सबके मन राखे ला मानि गइनी। ओकरा बाद त खूब एकबाल रखनीं, अपना पुरनिया सब के।

हँ$ त, पनरह$-सोरह अदिमी कउड़वा बइठि के गप-सटक्का में लागल रहे तवलेक मुखिया जी सन्ध्या कइ के घर से एगो कचोरा में लचिदाना लिहले बहरिअइनी। सबका हाथे चरि-चरि गो लचिदाना धइले का बाद अपनहूँ परसादी पा के कउड़ा तर बईठि गइनी। ई अइसन बइठक्की रहे जहाँ कुछुए देर में भरि गाँव के दुखम-सुखम मिल जाव।

जब हरीसंकर के नम्मर आइल त ऊ कुछु अइसन सुनवलें कि माहौल गम्हीर हो गइल।

मुखिया जी! सरवन त अपना नाव के एकदम्मे उलटा बेहवार कर$ तारन। काकी की मरले रामबहाल काका एकदम्मे बेदिन हो गइल बाड़ें। दइब के लीला। ऊ जेतने सोझबक, पतोहि ओतने तेज पा गइलें। जवले काकी रहलि ह कइसहूँ कस में कइले रहलि ह। ओकरा परइले पतोहिया एकदम चचबाकिन हो गइलि बिया। रत्तियो भर लाज-लेहाज नइखे, ओकरी नजर में। बिना$ कौनो बतियो के बखेड़ा कइले में माहिर बिया। काका त जरिए के गऊ अदिमी आ ई दिन-राति इजत ओसावे पर उतारू रह तिया।

काका के अइसन दुरदिन घेरले बा कि छवे महीना में सूखि के लकड़ी हो गइल बाड़न। एक त खइले-

पियले के खटपट, ओकरो से बढ़ि के पतोहिया के लुआठी अस जीभि।

सरवनवा अपने त कुछु नइखे कहत बाकिर डरे मेहरिओ के कब्बो टोके नइखे पावत। ए बिसे में रउरा कुछु जल्दिए ना करबि त काका हुटुकि हुटुकि के हाल्दिए मरि जइहें। कउड़ा जे भी रहे सबका ठकया मारि दिहलस। कुछु सोचि-गुनि के मुखिया जी हरीसंकर से कहनी 'तूँ जाके सरवन के आ उनकी मलिकाइन के बोलवले आव$। तवले हमनी गोलम्बर में चलि के बइठ$ तानी। ए बाति के निपटारा आजुए होखे के चाहीं।'

आधा गोलम्बर में पेटार्ही के बिछवना कइल रहे। सभे आ के जगहि ध$ लीहल। मुखिया जी भितरी अपना मलकिनी के हाल दिअवनी। गोलम्बर का दुआरी से सटले ओहू सब के बइठे खातिर चटाई बीछि गइल। इहे कुल करत- धरत में हरीसंकर, सरवन आ उनकी मलिकाइन के लिअवले आ गइलें। सभे जब अथ्थिर हो गइल त मुखिया जी आपन बाति सुरू कइनीं। देख$ सरवन! रामबहाल काका की देहीं से तीन गो लइकिन पर तूँ एकही लइका। तहरा जनम के उछाह में जे जवने दान-उपदान, भोजन-भाव कहि दिहल, अपना औकात भर कुछु उठा ना धइलें। बड़ा छछना के तहार नाव सरवन धइलें। तूँ कुछ करे लाएक भइल$ ओकरा पहिलहीं काका अपना बेंवत से अधिकहे किहाँ तीनों बेटिन के बिआह-दान क दिहलें। आजु ओकनी का केहू के मूँह नइखे ताके के। सब अपना भर के ठीक बाड़ी सन, सुखी बाड़ी सन।

जवने माटी-थाती पुरनिया सब से मिलल ओकरा के नोहे-दाँते जोगवते में खिया गइलें। आपन त मय जिनगी अभावे में कटि गइल बाकिर तहरा के अपना आँटे भर में कवनो कमी ना होखे दिहलें। नीमन खिआवे-पहिरावे आ कइसहूँ पढ़ावे का उतजोग में लागले रहि गइलें। एतवत गाँव में केहू आजु ले उनके ऊँच बोली ना सुनले होई। देवता-पितर की आसिरबाद से तूँ आजु नोकरी में बाड़$। ओइसन पुरनिया घाला चले-चली की बेरा जवन होता ऊ ठीक बा नू बाबू? ई सब सूनि के सरवन के करेजा बइठे लागल। मुखिया जी सब बुझते रहनी कि इनकर असल गलती इहे बा कि मोका पर अपना बेकति के टोकले नइखन जवने से ओकर मन सहकत गइल बा। सब सुनवइआ जइसे साँस रोकि के मुखिया जी के सुनत रहे। सबका बुझाइल की अब बनोर बहुअर के नम्मर बा। लेकिन मुखिया जी का मन में कुछु अउरिए चलत रहे। अपना मलकिनी से कहल सुरू कइनीं।

सरवन की दुलहिन के अपने समझा दिहल जाय। घर-गाँव के परतिस्ठा जोगवे के जिम्मा पतोहिए के होला। पतोहिअने के देखले गाँव भर के लइकी बेहवार सिखेली। जब ऊ ससुरइतिन होली तब ओकनी की गुन-ढंग पर पूरा गाँव के मान-अपमान, जस-अपजस टिकल रहे ला। जवने घरे बूढ़-पुरनिया के मान-जान होला ओ घरे सब देबी-देवता के किरिपा बरसेला। घर के लरिका-गदेला जरिए से नीमन देखि के बड़ भइले पर ओइसने बनेलन। सरवन से इनका कब्बो तीतो-मीठ हो जाव तब्बो ओ बात के भनक काका के ना लागे पावे।

अब त सरवन की मलकिनिओ का भीतरे-भीतर पछतावा बढ़िआए लागल। करेजा मूँह में आवे लागल। एन्ने ई कुल होते रहे तवलेक रामबहाल काका से केहू जा के कहि दिहल। बुढ़ऊ का ई बात धक दे लागल। मने-मने अपने के दूसे लगलें। आजु ना रहितीं त घर के बात बहरी ना नू गइल रहित। मड़ई में टिमटिमात ढेबरी त आपन बल पवरुष के जोर लगा के कइसहूँ अँजोर कइले रहे। अमवसा के मय अन्हरिया बुढ़ऊ का भीतर पसरे लागल।

जब ना रहि गइल त ठेकनी उठा के मुखिया जी की दुआर के राहि धइलें। बदहवासी में ढहत-ढिमिलात कइसहूँ पहुँचि गइलें। ठेहुना छिला गइले से खून रीसि के धोती पर पसरे लागल रहे। आवते गोहार लगवलें। 'दोहाई मुखिया जी के। हम त रउरा बपसी के संघतिया हईं। जिनगी के सब धुपछहियाँ में उहाँ के हमरा अस गरीब के सहारा भइनीं। देखीं, साँच त इहे बा कि सब गलती लइकवने के नइखे। ऊ त अपना बूझत भर में जीव की जतने रखलहीं बाड़न सँ। हमहीं जमराज से लड़ि के आइल बानीं। ना हमरा साँस के कवनो ओर-अंत लागता, ना हमरा घर से दुख-बलाइ पराता'...

जे भी रहे सबके आँखि से लोर के धार फूटि परल, भीतर भाव के गङ्गा बहि चललीं। सरवन आ उनके दुलहिन बुढ़ऊ के गोड़ छानि के रोअते जात रहे लोग। मुखिया जी भरि आँखी लोर लिहले गँवई संस्कार के फेरु से अपना लोग में उतरत देखत रहनीं।

- **शशिरंजन शुक्ल 'सेतु'**

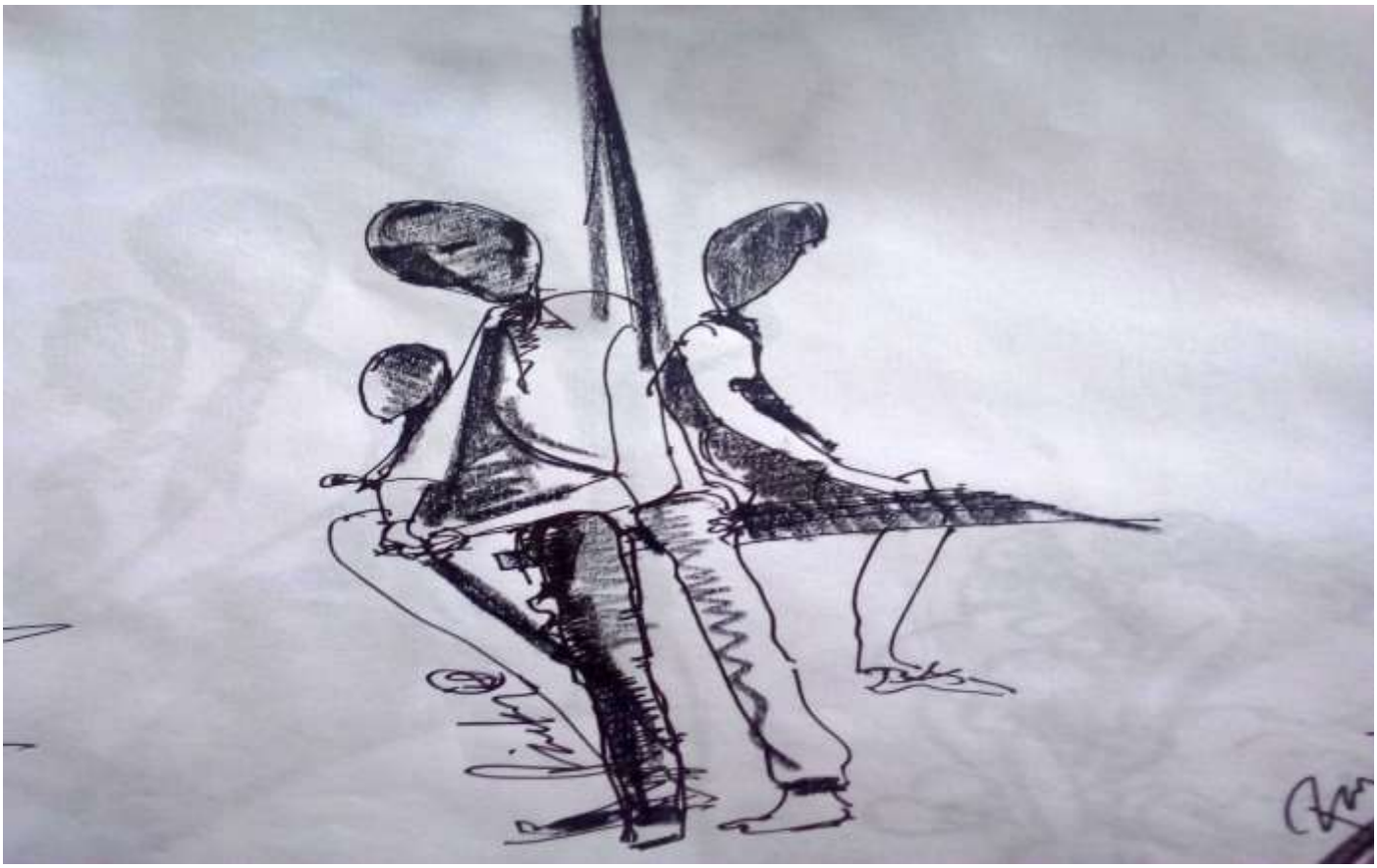

कलमकार से गोहार

निहोरा

जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया

माईभाषा के सम्बन्ध जनम देवे वाली माई आ मातृभूमि से बा, माईभाषा त अथाह समुद्र बा, ओके समझल बहुत आसान काम नइखे । भोजपुरिया क्षेत्र के लोग बर्तमान में रोजी रोटी कमाए खातिर आ अपना भविष्य के सइहारे खाति अपनी माँटी आ अपनी भाषा से दूर होत चल जाता, ओहि दूरी के कम करे के प्रयास ह "सिरिजन" । जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया, आपन माँटी -आपन थाती के बचावे में प्रयासरत बिया इहे प्रयास के एगो कड़ी बा "सिरिजन" । भोजपुरी भाषा के लिखे आ पढ़े के प्रेरित करे खातिर एह ई-पत्रिका के नेंव रखाइल । "सिरिजन" पत्रिका रउवा सभे के बा, हर भोजपुरी बोले वाला के बा आ ओकरे खातिर बा जेकरा हियरा में माईभासा बसल बिया । ई रउरे पत्रिका ह, उठाईं लेखनी, जवन रउरा मन में बा लिख डाली, ऊ कवनो बिध होखे कविता, कहानी, लेख, संस्मरण, भा गीत गजल, हाइकू, ब्यंग्य आ भेज दिहीं "सिरिजन" के ।

रचना भेजे के पहिले कुछ जरूरी तत्वन प धियान देवे के निहोरा बा :

1. आपन मौलिक रचना यूनिकोड/कृतिदेव/मंगल फॉण्ट में ही टाइप क के भेजीं । फोटो भा पाण्डुलिपि स्वीकार ना कइल जाई ।
2. रचना भेजे से पहिले कम से कम एक बार जरूर पढ़ीं, रचना के शीर्षक, राउर रचना कवन बिधा के ह जइसे बतकही, आलेख, संस्मरण, कहानी आदि क उल्लेख जरूर करीं । कौमा, हलन्त, पूर्णविराम प बिशेष धियान दीं। लाइन के समाप्ति प डॉट के जगहा पूर्णविराम राखीं ।
3. एकर बिशेष धियान राखीं कि रउरी रचना से केहू के धार्मिक, समाजिक आ ब्यक्तिगत भावना के ठेस ना पहुंचो । असंसदीय, फूहड़ भाषा के प्रयोग परतोख में भी ना दियाव, एकर बिशेष धियान देवे के निहोरा बा ।
4. राउर भेजल रचना सम्पादक मंडल के द्वारा स्वीकृत हो जा तिया त ओकर सूचना मेल भा मैसेज से दियाई ।
5. आपन एगो छोट फोटो, परिचय जइसे नाम, मूल निवास, बर्तमान निवास, पेशा, आपन प्रकाशित रचना भा किताबन के बारे यदि कवनो होखे त बिवरण जरूर भेजीं।
6. रचना भा कवनो सुझाव अगर होखे त रउवा ईमेल - sirijanbhojpuri@gmail.com प जरूर भेजी ।
7. रउरा हाथ के खिंचल प्राकृतिक, ग्रामीण जीवन, रीति- रिवाज के फोटो भेज सकतानी। धियान राखीं ऊ ब्यक्तिगत ना होखे ।

एह अंक के चित्रकार

“सिरिजन” के एह अंक के अधिकांश रेखांकन श्री पंकज तिवारी जी निवासी बिलोंई, मधुपुर, मुगरा बादशाहपुर, जौनपुर (उ.प्र.) के बा। बहुत कम बयस से पंकज तिवारी जी के प्रतिभा चित्रकारी क ओरि उन्मुख भइल। अतिने ना, साहित्य के अनेकन विधा जइसे कहानी, कविता, कला समीक्षा में भी इहाँ के बहुमुखी प्रतिभा के दर्शन होला। श्री पंकज तिवारी जी के ललित कला क शिक्षा महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, बनारस में भइल । बर्तमान में इहाँके स्वतंत्र रूप से पत्र-पत्रिका ख़ातिर रेखांकन के साथे-साथे लेखन अउरी चित्र निर्माण में भी काम कर रहल बानी । इहाँ के बनावल चित्र देश के कई पत्र पत्रिका के शोभा बढवले बा जे मा कुछ उल्लेख जोग पत्रिका बाड़ीसँ हिंदी समय, मंतव्य, कथादेश, पाखी, अंजुमन, प्रतिलिपि, परिंदे, यशोभूमि वगैरह । आकाशवाणी वाराणसी, ओबरा, मुंबई से प्रसारित अनेक काव्यपाठ, वार्ता में इहाँ के महत्वपूर्ण सहभागिता रहल। इहाँ के राइटर्स एंड जर्नलिस्ट एसोसिएशन महाराष्ट्र से वर्ष २०११ में काव्य भूषण के सम्मान से सम्मानित हो चुकल बानीं । देश में अलग-अलग जगह इहाँ के अकेले भा सामूहिक चित्र प्रदर्शनी लाग चुकल बा जेमा मुख्य बा उ.प्र. राज्य ललित कला अकादमी लखनऊ, उम्मीदें वाराणसी, सम्भावनाएं गाजीपुर, आइफा आजमगढ़। तमाम जगह प्रदर्शित चित्र प्रशंसित व पुरस्कृत भइलीसँ। चित्रकारिता के गुण इहाँ में सहज आ स्वभाविक रूप में पैबस्त बा। एकरा अलावा उहाँ के उपहार में 'बेलन', 'बेटियां', 'आठवां आसमान' जइसन किताबन के आवरण चित्र बना के पाठक लोग के बाहबाही पा चुकल बानी । सिरिजन टीम आभारी बा जमीन से जुड़ल एह चित्रकार से मिलल नायाब सहयोग ख़ातिर।

पन्ना संख्या (18,26,59,60,65) क चित्र सहभागिता दिनेश पाण्डेय जी, पटना के बा आ आवरण अउरी बैक कवर के डिजाइन लव कुमार सिंह लव के। टीम सिरिजन एह सहयोग बदे इनकर आभारी बा।

जय भोजपुरी जय भोजपुरिया द्वारा आयोजित कार्यक्रम क कुछ यादगार पल

15 जुलाई, 2018 को शांति प्रतिष्ठान, आई टी ओ, नई दिल्ली, में आयोजित भोजपुरी राष्ट्रिय कवि सम्मेलन क कुछ यादगार पल

जय भोजपुरी जय भोजपुरिया

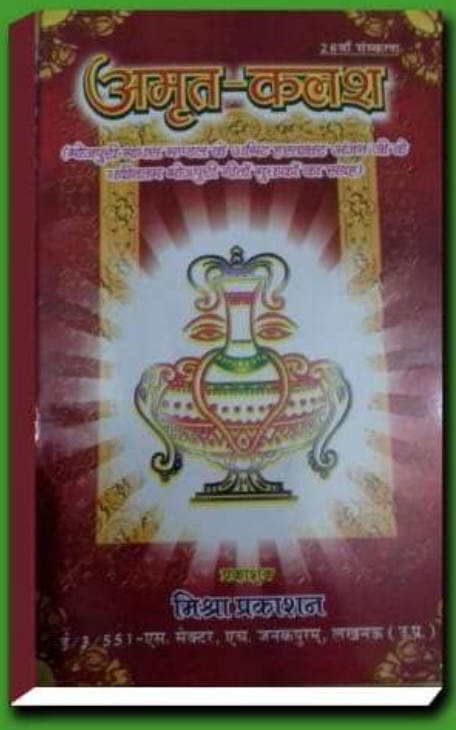

भोजपुरी साहित्य-संस्कृति के प्रचार-प्रसार, संरक्षण आ संवर्धन में भोजपुरी मानस मंडल के अमिट हस्ताक्षर राधा मोहन चौबे 'अंजन जी' के अतुलनीय योगदान बा।

रउरा द्वारा भोजपुरी किताब किन के पढ़ल चाहे केहू के उपहार में देहल, भोजपुरी खातिर बड़हन योगदान रही।

किताब खातिर सम्पर्क करीं :

श्री भावेश कुमार

मोबाइल नं.- 9939516626

ईमेल - bhaweshanjan@gmail.com